



PSALTERIUM
DAVIDIS
Catalogo adscriptis Etimolariis
Ordine Continuum; Completum
Sed ad Singulas
Monte Regg ad varia.
Horas adjectis Canticis, &
Hymnis Recentioribus per
Hebdomadam dispositum,
ET PRO COMMUNIORI USU
Commune Sanctorum additum
hoc majori Typo excusum,

COLONIÆ,
Apud WILHEL. METTERNICH Bibliop.
Sub Signo Gryphi. Anno
M. D. CC. X.

F. III. 1.
(a)



everen
nis, R
m Ordin
, zelosissim
s salutem
offert



mi
ac me
orem le
ommod
t, oculij
Antiphon
?salmon
as ut i
rium in



everendissimis in Christo, Amplif-
nis, Religiosissimisque Dominis Religioso-
m Ordinum Prælatis, Prioribus, Guardia-
zeloſiſſimisque Parochialium Ecclesiarum Pastori-
s salutem in Domino precatur, & humillima sua
offert obsequia W. M. Bibliopola & Typogra-
phus Coloniensis.

Sum Psalterium hoc Davidi-
cum paulatim in defectum
venerit: & jam de novo im-
mi necessum fuerit, ideo charta ante
ac meliori in majori typo, qui ma-
orem legentibus ob magnitudinem pariat
ommoditatem, prælo denuo subjicere placu-
& oculisque vestris sistere, additis ad finem
Antiphonis cum ordinatione per Indicem
Psalmarum omnium juxta Horas Canoni-
as ut tempore, quo illæ canuntur, Previa-
rium in manibus habere non opus sit futu-
rum

rum. Quæ commoditas Sacerdotibus singu-
lis ad Horas Canonicas obligatis quanto-
pere seruitura sit, facillimè qui-vis judi-
cabit primo etiam intuitu Faxit Deus Opti-
mus Maximus, ut siquidem quod nostri fuit
muneris effecimus, Opus hoc utilissimum
Ecclesiæ Romanæ commodo in publicum pro-
duximus, hoc assequamur feliciter, quod è
labor nostrar sit ad magni Dei majorem glo-
riam & omnium piarum ac de vorarum A-
nimarum Ecclesiæ Romano-Catholicæ com-
modum immensum, in omnem usque æterni-
tatem, & hic in atriis domus Domini & Je-
rusalem cœlestis stantes cum Angelis & Ar-
changelis jungant voces suas, & communem
omnibus laudent Dominum Deum cœli ter-
ræque moderatorem hic in exilio hoc, & va-
li lachrymarum inchoantes, in quo in cœlesi-
patria perpetuum, & sine fine felicissima
continuatione cum summis & incessabilibus
gaudiis perseverent.

IN.



INDEX PSALTERII DAVIDIS.

Ubiprior numerus Psalmum, posterior verò paginam denotat.

| | | |
|-------------------|---|------------------|
| <i>Psal. 119.</i> | A <i>Dominum cum tribularer.</i> | 231 |
| | A <i>27. Adte Domine clamabo.</i> | 43. |
| 24. | <i>Ad te Domine levavi animam meam.</i> | 38 |
| | <i>Adhæsit pavimento.</i> | 218 |
| 122. | <i>Ad te levavi oculos meos.</i> | 234 |
| 28. | <i>Afferte Domino.</i> | 44 |
| | <i>Appropinquet deprecatio mea.</i> | 230. |
| 77. | <i>Attendite popule meus.</i> | 136 |
| 48. | <i>Audite omnes gentes.</i> | 84 |
| 91. | B <i>Eati quorum remissæ sunt.</i> | 50 |
| 118. | B <i>Beati immaculati in via.</i> | 216 |
| 127. | <i>Beati omnes qui timent.</i> | 238 |
| 40. | <i>Beatus qui intelligit.</i> | 72 |
| 111. | <i>Beatus vir qui timet Dominum.</i> | 207 |
| | <i>Beatus vir qui non abiit.</i> | 1 |
| 102. | <i>Benedic anima. i.</i> | 182 |
| 102. | <i>Benedic. anima. ii.</i> | 184 |
| 143. | <i>Benedictus Dominus Deus meus.</i> | 258 |
| 13. | <i>Benedicam Dominum.</i> | 54 |
| 84. | <i>Benedixisti Domine terram</i> | 152 |
| | <i>Bonitatem fecisti.</i> | 221 |
| 91. | <i>Bonum est confiteri Domino.</i> | 167 |
| 95. | C <i>Antate Domino. i.</i> | 173 |
| 97. | C <i>Cantate Domino. ii.</i> | 175 |
| | * 3 | |
| | | 149. <i>Can.</i> |

INDEX

| | |
|--|-----|
| 149. <i>Cantate Domino.</i> iii. | 266 |
| 18. <i>Cœli enarrant gloriam Dei.</i> | 28 |
| <i>Clamavi in toto corde.</i> | 228 |
| 74. <i>Confitebinnur tibi.</i> | 131 |
| 9. <i>Confitebor tibi.</i> i. | 10 |
| 110. <i>Confitebor tibi Domine.</i> ii. | 206 |
| 137. <i>Confitebor tibi Domine.</i> iii. | 244 |
| 104. <i>Confitemini Domino & invoc.</i> | 188 |
| 105. <i>Confitemini Domino quoniam.</i> i. | 192 |
| 109. <i>Confitemini Domino quoniam</i> ii. | 196 |
| 117. <i>Confitemini domino quoniam.</i> iii. | 213 |
| 135. <i>Confitemini Domino quoniam.</i> | 245 |
| 15. <i>Conserva me Domine quoniam.</i> | 20 |
| 115. <i>Credidi propter quod locutus.</i> | 212 |
| 4. <i>Cum invocarem exaudivit me.</i> | 4 |
| D efecit in salutare tuum. | 223 |
| 129. <i>De profundis clamavi.</i> | 239 |
| 43. <i>Deus auribus nostris aud.</i> | 76 |
| 47. <i>Deus Deorum Dominus.</i> | 86 |
| 62. <i>Deus Deus meus ad te de luce.</i> | 106 |
| 21. <i>Deus Deus meus respice.</i> | 32 |
| 69. <i>Deus in adjutorium meum.</i> | 120 |
| 53. <i>Deus in nomine tuo salvum.</i> | 193 |
| 71. <i>Deus judicium tuum regi da.</i> | 124 |
| 108. <i>Deus laudem meam ne tac.</i> | 202 |
| 66. <i>Deus misereatur nostri.</i> | 121 |
| 45. <i>Deus noster refugium.</i> | 80 |
| 82. <i>Deus quis similis erit tibi.</i> | 150 |
| 59. <i>Deus repulisti nos & destruxisti.</i> | 182 |
| 81. <i>Deus stetit in synagogæ deorum.</i> | 149 |
| 78. <i>Deus venerunt gentes in hæred.</i> | 143 |
| 93. <i>De-</i> | |

PSALTERII DAVIDIS.

| | |
|---|-----|
| 93. Deus ultionum Dominus. | 169 |
| 114. Dilexi quoniam exaudiet Dominus. | 211 |
| 17. Diligam te Domine fortitudo. | 23 |
| 38. Dixi custodiam vias meas. | 76 |
| 109. Dixit Dominus Domino meo. | 205 |
| 35. Dixit in justus ut delinquit. | 59 |
| 13. Dixit insipiens in corde suo. | 17 |
| 140. Domine clamavi ad te exaudi. | 254 |
| 7. Domine Deus meus in te speravi. | 7 |
| 87. Domine Deus salutis meæ. | 156 |
| 8. Domine Dominus noster. | 9 |
| 101. Domine exaudi orationem meam. | 179 |
| 142. Domine exaudi orationem meā auribus. | 256 |
| 20. Domine in virtute tua lētabitur. | 31 |
| 6. Domine ne infurore tuo arguas. | 6. |
| 3. Domine ne infurore tuo arguas me, neq; | 65 |
| 130. Domine non est exaltatum cor. | 240 |
| 138. Domine probasti me & cognovisti. | 250 |
| 14. Domine quis habitabit. | 19 |
| 3. Domine quid multiplicati. | 3 |
| 86. Domine refugium factus es nobis. | 163 |
| 23. Domini est terra & plenitudo. | 37 |
| 26. Dominus illuminatio mea. | 41 |
| 22. Dominus regit me. | 36 |
| 92. Dominus regnavit decorum. | 169 |
| 96. Dominus regnavit, exultet. | 174 |
| 98. Dominus regnavit ira/cantur. | 176 |
| 132. Ecce nunc benedicte Dominum. | 242 |
| 133. Ecce quam bonum. | 243 |
| 58. Eripe me de inimicis. | 100 |
| 139. Eripe me Domine ab hom. | 252 |
| | 44. |

INDEX

| | | |
|-------------|--|-------------|
| 44. | <i>Eruavit cor meum verbum.</i> | 78 |
| | <i>Et veniat super me.</i> | 219 |
| 144. | <i>Exaltabo te Deus meus Rex.</i> | 259 |
| 29. | <i>Exaltabo te Domine quoniam.</i> | 46 |
| 19. | <i>Exaudiat te Dominus in die.</i> | 30 |
| 60. | <i>Exaudi Deus deprecationem.</i> | 104 |
| 54. | <i>Exaudi Deus orationem meam.</i> | 93 |
| 63. | <i>Exaudi Deus orationem.</i> | 107 |
| 16. | <i>Exaudi Domine justitiam meam.</i> | 21 |
| 39. | <i>Expectans expectavi Dominum.</i> | 69 |
| 80. | <i>Exultate Deo adjutori nostro.</i> | 147 |
| 32. | <i>Exultate justi in Domino, rectos.</i> | 52 |
| 67. | <i>Exurgat Deus & dissipentur</i> | 112 |
| F | <i>Ecijudicium & justit.</i> | 226 |
| 86. | <i>Fundamenta ejus in montibus,</i> | 156 |
| I | <i>Næternum Domine.</i> | 223 |
| 85. | <i>Inclina Domine aurem tuam,</i> | 154 |
| 125. | <i>In convertendo Dominus capt.</i> | 236 |
| 10. | <i>In Domino confido, quomodo.</i> | 15 |
| 113. | <i>In exitu Israel de Ægypto</i> | 209 |
| | <i>Iniquos.</i> | 225 |
| | <i>In quo corrigit.</i> | 216 |
| 30. | <i>Inte domine speravi, non confund.</i> | 47 |
| 70. | <i>Inte domine speravi.</i> | 121 |
| 35. | <i>Iubilate deo omnis terra.</i> | 110 |
| 90. | <i>Iubilate deo omnis terra, servite.</i> | 178 |
| 34. | <i>Judica domine nocentes.</i> | 56 |
| 42. | <i>Judica me deus & discerne causam.</i> | 75 |
| 25. | <i>Judica me domine quoniam.</i> | 40 |
| | <i>Iustus es domine.</i> | 228 |
| I | <i>Ucerna pedibus meis.</i> | 225 |
| 145. | <i>Lauda anima mea dominum.</i> | 294 |
| | | 147. |

PSALTERII DAVIDIS

| | | |
|-----|---|-----|
| 78 | 147. <i>Lauda Ierusalem dominum.</i> | 264 |
| 219 | 146. <i>Laudate dominum quoniam.</i> | 263 |
| 259 | 148. <i>Laudate dominum de cœlis.</i> | 265 |
| 46 | 150. <i>Laudate dominum in Sanctis.</i> | 267 |
| 30 | 116. <i>Laudate dominum omnes gentes.</i> | 213 |
| 104 | 134. <i>Laudate nomen domini.</i> | 243 |
| 93 | 121. <i>Lætatus sum in his quæ dicta.</i> | 233 |
| 107 | 112. <i>Laudate pueri dominum.</i> | 218 |
| 21 | <i>Legem pone mihi domine.</i> | 283 |
| 69 | 120. <i>Levarvi oculos meos in montes.</i> | 232 |
| 147 | 47. M agnus dominus & laudabilis. | 83 |
| 52 | <i>Manus tuæ fecerunt.</i> | 222 |
| 112 | 131. <i>Memento domine daniel.</i> | 241 |
| 226 | <i>Mirabilia testimonia tua.</i> | 227 |
| 156 | 50. <i>Miserere mei deus secundum.</i> | 89 |
| 223 | <i>Memor esto verbitui.</i> | 220 |
| 154 | 55. <i>Miserere mei deus quoniam.</i> | 55 |
| 236 | 56. <i>Misere mei deus miserere.</i> | 98 |
| 15 | 88. <i>Misericordias domini in ætern.</i> | 158 |
| 209 | 100. <i>Misericordiam & iudicium.</i> | 178 |
| 225 | 126. N isi dominus ædificaverit. | 237 |
| 216 | 123. <i>Nisi quia dominus erat in.</i> | 234 |
| 47 | 36. <i>Noli æmulari in malignantibus.</i> | 61 |
| 121 | 61. <i>Nonne deo subjecta erit.</i> | 104 |
| 110 | 75. <i>Notus in Iudea deus : in Israel.</i> | 132 |
| 178 | 46. <i>Omnis gentes plaudite manibus.</i> | 82 |
| 56 | 107. P aratum cor meum. | 200 |
| 75 | <i>Portio mea domine.</i> | 221 |
| 40 | Principes persecuti. | 230 |
| 228 | 72. Q uam bonus Israël deus. | 126 |
| 225 | 83. Q uam dilecta tabernacula. | 151 |
| 494 | * 5 | |
| 470 | 2 Qua- | |

INDEX

- | | |
|--|-----|
| 3. Quare fremuerunt gentes. | 2 |
| 41. Quemadmodum desiderat cervus. | 73 |
| 124. Qui confidunt in domino sicut. | 235 |
| 51. Quid gloriaris in malitia. | 91 |
| 90. Qui habitat in adjutorio altis. | 165 |
| <i>Quomodo dilexi.</i> | 224 |
| 79. Qui regis Israel intende. | 145 |
| R Etribue servo tuo. | 217 |
| 11. <i>S</i> Aluum me fac domine quoniam def. | 16 |
| 68. Salvum me fac deus quoniam int. | 116 |
| 128. Sæpè expugnaverunt me à juventute. | 238 |
| 57. Si verè utique justitiam loquimini. | 99 |
| 136. Super flumina Babylonis illuc. | 248 |
| 64. <i>T</i> Edecet hymnus deus in. | 108 |
| 94. <i>V</i> Enite exultemus Domino. | 171 |
| 3. Verba mea auribus percipe. | 5 |
| <i>Vide humilitatem meam.</i> | 229 |
| 76. Voce mea ad dominum. | 134 |
| 141. Voce mea ad dominum clamavi. | 255 |
| 12. Usquequo domine oblivisceris. | 17 |
| 73. Ut quid deus repulisti in finem. | 129 |

Canticorum Index.

- | | |
|---|-----|
| C Anticum trium pueror. <i>Benedicite.</i> | 268 |
| C Anticum Esaiae <i>Confitebor.</i> | 270 |
| C Anticum Ezechiae regis. <i>Ego dixi.</i> | 271 |
| C Anticum Annæ. <i>Exultarvit</i> | 272 |
| C Anticum Mariæ lororis Moysi, <i>Cantemus</i> <i>Domino.</i> | 274 |
| <i>Canti-</i> | |

PSALTERII DAVIDIS

| | | |
|----------------------|-------------------------|-------|
| Canticum Habacuc. | <i>Domine audivi.</i> | 277 |
| Canticum Moyſi. | <i>Audite cœli.</i> | 279 |
| Canticum Mariæ virg. | <i>Magnificat.</i> | 286 |
| Canticum Zachariæ. | <i>Benedictus.</i> | ibid. |
| Canticum Simeonis. | <i>Nunc dimittis.</i> | 288 |
| Ambroſ. & Auguſt. | <i>Tedeum Laudamus.</i> | ibid. |
| Symbolum Athanafii. | | 290 |



LIBER

Ordo persolvendi Psalterium pro Vivo.
a S. Romualdo institutus.
a S. Petro Damiano Card: descriptus.
Tom. 3. Opus. 15. Cap. 29. pag. 155. F.

Psalterium quod est Vivorum cum illis dicitur ad-
ditamentis, quod S. Romualdus apponit quod etiam
nos non gravemur inserere; ne contra nos conque-
ratur forte Novitus quod sibi magnopere noscen-
da sunt, praeferire.

Decursis plane quinque Psalmis protinus subintertur
Gloria Ibi Trinitas & qualis una Deitas, et ante

Miserere mei Deus secundum magnam misericordiam tuam. Psalm. 50. 1.

omne saeculum et nunc et in perpetuum.

Orate pro nobis omnes sancti Dei ut digni efficiamur
Patrem nostrum. His Expletis mox subditur.

Adjutorium nostrum etc. Qui fecit Celum et Terram.

Dixitque David ad Dominum, cum vidisset

Angulum cedentem populum: Ego sum qui

peccavi, Et c. 2. Reg. 24. 17.

et evolutis alijs quinque Psalmis dicitur.

Ie Deum patrem ingenitum te Filium Unigenitum te Spiritum Sanctum Paraclitum Sanctum
et individuam Trinitatem toto corde et ore con-
fitemur laudamus atque benedicimus. In via glo-
ria in saecula. Amen.

Deus in Adjutorium meum intende.

Dñe ad adjuvandum me festina.

Confundantur et reverentur Omnes inimici mei.

Adjutor meus et liberator meus esto Dñe et tarda.

Gloria Patri et filio et spiritui sancto. Sicut erat et

Quo finito, rurus dicitur. Et inchoatur.

Adjutorium nostrum in nomine Domini. Et ut super-
et addatur: Reple os meum laude ut laudem glo-
riam tuam tota die magnitudinem tuam que-
niam tu Dñe creasti me et adduxisti ad
hunc statum. Hoc igitur per quinque nos
mos alternatim semper adduntur donec Psal-
terium expletatur.



Theyseas. Frue et si

Ante singulos Psalmorum Decades, dicendum.

Reple os meum laude tua, ut canem gloriam tuam,

tot a die magnitudinem tuam quoniam tu Dñe cre-
asti me et ad LIBER duxisti; ad hunc
statum.

PSALMORUM DAVIDIS

Deinde

PSALMUS
Deus in adjutoriu meum intende: Dñe ad adju andu me festi

BEatus vir qui non abiit in consi-
lio impiorum, & in via pecca-
torum non stetit: & in cathe-
dra pestilentiae non sedit:

Sed in lege Domini Voluntas ejus: &
in lege ejus meditabitur die ac nocte.

Et erit tanquam lignum quod planta-
tum est seclus decursus aquarum : quod
fructum suum dabit in tempore suo.

Et folium ejus non defluet : & omnia
quæcunque faciet prosperabuntur.

Non sic impii, non sic: sed tanquam
pulvis quem projicit ventus à facie terre;

Ideo non resurgent impii in judicio :
neque peccatores inconcilio justorum.

A

Quo-

LIBER

Quoniam novit Dominus viam iusto-
rum: & iter impiorum peribit.

PSALMUS 2.

QUARE tremuerunt gentes: & populi
meditati sunt inania

Astiterunt reges terræ, & principes con-
venerunt in unum: adversus Dominum,
& adversus Christum ejus.

Dirumpamus vincula eorum: & projici-
amus à nobis jugum ipsorum.

Qui habitat in cœlis irridebit eos: &
Dominus subsanabit eos.

Tunc loquetur ad eos in ira sua: & in fu-
rore suo conturbabit eos.

Ego autem constitutus sum rex ab eo
super Sion montem sanctum ejus: prædi-
cans præceptum ejus.

Dominus dixit ad me: Filius meus es tu,
ego hodie genui te.

Postula à me, & dabo tibi gentes hære-
ditatem tuam & possessionem tuam ter-
minos terræ.

Reges eos in virga ferrea: & tanquam
vas fragili confringes eos.

Et nunc reges intelligite: eruditimi
qui

PSALMORUM.

3

qui judicatis terram.

Servite Domino in timore: & exultate
ei cum tremore.

Apprehendite disciplinam, ne quando
irascatur Dominus & pereatis de via justa.

Cum exarserit in brevi ira ejus: beati o-
mnes qui confidunt in eo.

PSALMUS 3.

D Omine quid multiplicati sunt qui
tribulant me: multi insurgunt ad-
versum me.

Multi dicunt animæ meæ: non est salus
ipſi in Deo ejus.

Tu autem Domine susceptor meus es :
gloria mea, & exaltans caput meum.

Voce mea ad Dominum clamavi: & ex-
audivit me de monte sancto suo.

Ego dormivi, & soporatus sum, & exur-
rexi: quia Dominus suscepit me.

Non timebo millia populi circumdan-
tis me: exurge Domine, salvum me fac
Deus meus.

Quoniam tu percussisti omnes adver-
santes mihi sine causa dentes peccatorum

A 2

con-

L I B E R

contrivisti.

Domini est salus: & super populum tu-
um benedictio tua.

PSALMUS 4.

C Um invocarem exaudivit me Deus
justitiæ meæ: in tribulatione dila-
tâsti mihi.

Miserere mei : & exaudi orationem
meam.

Filiī hominum usquequo gravi corde?
ut qui diligitis vanitatem , & queritis
mendacium?

Et scitote quoniam mirificavit Domi-
nus sanctum suum: Dominus exaudiet me
cum clamavero ad eum.

Irascimini, & nolite peccare: quæ dici-
tis in cordibus vestris, in cubilibus vestris
compungimini.

Sacrificate sacrificium justitiæ , & spe-
rate in Domino. multi dicunt , quis ostendit
nobis bona?

Signatum est super nos lumen vultus tui
Domine : de distilatitiam in corde meo.

A fructu frumenti, vini, & olei sui: mul-
tipli-

PSALMORUM.

5

tiplicati sunt.

In pace in idipsum dormiam & requiescam.

Quoniam tu Domine singulariter in spe: constituisti me,

PSALMUS 5.

VErba mea auribus percipe Domine intellige clamorem meum.

Intende voci orationis meæ : rex meus & Deus meus.

Quoniam ad te orabo Domine, manè exaudies vocem meam.

Mane astabo tibi & videbo: quoniam non Deus volens iniquitatem tu es.

Neque habitabit juxta te malignus: neque permañebut inusti ante oculos tuos.

Odisti omnes qui operantur iniquitatem: perdes omnes qui loquuntur mendacium.

• Virum sanguinum & dolosum abominabitur Dominus: ego autem in multitudine misericordia tua.

Introibo in domum tuam: adorabo ad templum sanctum tuum in timore tuo

A 3

Domi-

Domine deduc me in justitia tua : propter inimicos meos dirige in conspectu tuo viam meam.

Quoniam non est in ore eorum Veritas: cor eorum vanum est.

Sepulchrū patēs est guttū eorum, linguis suis dolosè agebant: judica illos Deus.

Decidant à cogitationibus suis, secundūm multitudinem impietatum eorum expelle eos, quoniam irritaverunt te Domine.

Et latentur omnes qui sperant in te , in æternū exultabunt, & habitabis in eis.

Et gloriabuntur in te omnes qui diligunt nomen tuum: quoniam tu benedices justo.

Domine , ut scuto bonæ Voluntatis tuae coronasti nos,

PSALMUS 6.

Domine ne in furore tuo arguas me : neque in ira tua corripias me.

Miserere mei Domine, quoniam iam infirmus sum: lana me Domine, quoniam consturbata sunt ossa mea.

Et

PSALMORUM.

7

Et anima mea turbata est valde : sed tu
Domine usquequo ?

Convertere Domine, & eripe animam
meam : salvum me fac propter misericor-
diam tuam.

Quoniam non est in morte qui memor
sit tui : in inferno autem quis confitebitur
tibi ?

Laboravi in gemitu meo : lavabo per
singulas noctes lectum meum : lacrymis
meis stratum meum rigabo.

Turbatus est à furore oculus meus : in-
veteravi inter omnes inimicos meos.

Discédite à me omnes qui operamini
iniquitatem : quoniam exaudivit Dominus
nus vocem fletus mei.

Exaudiuit Dominus deprecationem
meam : Dominus orationem meam suscep-
pit.

• Erubescant & conturbentur vehemen-
ter omnes inimici mei : convertantur & e-
rubescant valde velociter.

PSALMUS 7

Domine Deus meus in te speravi fal-
A 4 vum

vum me fac ex omnibus persequentibus
me, & libera me.

Ne quando rapiatur Leo animam me-
am dum non est qui redimat, neque qui
salvum faciat.

Domiñe Deus meus si feci istud: si est
iniq̄ uitas in manibus meis.

S̄i reddidi retribuentibus mihi māla :
decidam mēritō ab inimicis meis inanis.

Persequatur inimicus animam meam
& comprehendat, & conculceret in terra vi-
tam meam. & gloriam meam in pulverem
deducat.

Exurge Domine in ira tua: & exaltare
in finibus inimicorum meorum.

Et exurge Domine Deus meus in præ-
cepto quod mandâsti & synagoga po-
pulorum circumdabit te.

Et propter hanc in altum regredere :
Dominus judicat populos.

Judica me Domine secundūm justiti-
am meam: & secundūm innocentiam me-
am super me.

Consumetur nequitia peccatorum, &
diri-

P SALMORUM.

9.

diriges justū scrutans corda & renes Deus

Justum adjutorium meum à Domi-
no: qui salvos facit rectos corde.

Deus judex justus, fortis & patiens: nun-
quid irascitur per singulos dies;

Nisi conversi fueritis , gladium suum
vibravit arcum suum terredit , & paravit
illum.

Et in eo paravit vasā mortis: sagittas su-
as ardentibus effecit.

Eceē parturiit injustitiam, concepit do-
lorem: & peperit iniqutatem.

Lacum aperuit , & effodit eum : & in-
cidit in soveam quam fecit.

Convertetur dolor ejus in caput ejus
& in verticē ipsius iniqutas ejus descēdet:

Confitebor Domino secundūm justi-
tiam ejus : & psallam nomini Domini al-
tissimi.

PSALMUS. 8.

D Omine Dominus noster: quām ad-
mirabile est nomen tuum in uni-
versa terra.

Quoniam elevata est magnificētia

A §

tua:

tua super cœlos.

Ex ore infantium & lactentium perfecisti laudem propter inimicos tuos : ut destruas inimicum & ultorem.

Quoniam videbo cœlos tuos, opera digitorum tuorum, lunam, & stellas quæ tu fundasti.

Quid est homo, quod memor es ejus?
aut filius hominis, quoniam visitas eum?

Minuisti eum paulò minus ab Angelis,
gloria & honore coronasti eum, & constituisti eum super opera manuum tuarum.

Omnia subjecisti sub pedibus ejus, oves
& boves universas, insuper & pecora capi.

Volucres cœli, & pisces maris, qui perambulant semitas maris.

Domine Dominus noster, quām admirabile est nomen tuum in universa terra.

PSALMUS 9.

Consitebor tibi Domine in toto corde meo, narrabo omnia mirabilia tua.
Lætabor & exultabo in te, psallam non minitudo Altissime.

RA

In

PSALMORUM.

ii

In convertendo inimicum meum retrorsum, infirmabuntur, & peribunt à facie tua.

Quoniam fecisti judicium meum & causam meam, sedisti super thronum qui judicas justitiam,

Increpasti gentes, & periit impius, nomen eorum delesti in æternum & in sæculum sæculi.

Inimici defecerunt framæ in fine m, & civitates eorum destruxisti.

Periit memoria eorum cum sonitu, & Dominus in æternum permanet,

Paravit in judicio thronum suum, & ipse judicabit orbem terræ in æquitate: judicabit populos in justitia.

Et factus est Dominus refugium pauperi, adjutor in opportunitatibus, in tribulatione.

• Et sperent in te qui noverunt nomen tuum, quoniam non dereliquisti querentes te Domine.

Plallite Domino, qui habitat in Sion, annuntiate inter gentes studia ejus.

A 6

Quo-

Quoniam requirens sanguinem eorum recordatus est : non est oblitus clamorem pauperum.

Miserere mei Domine vide humilitatem meam de inimicis meis.

Qui exaltas me de portis mortis : ut annuntiem omnes laudationes tuas, in portis filiae Sion.

Exultabo in salutari tuo : infixæ sunt gentes in interitu, quem fecerunt.

In laqueo isto , quem absconderunt : comprehensus est pes eorum.

Cognoscetur Dominus judicia faciens : in operibus manuum suarum comprehensus est peccator,

Convertantur peccatores in infernum omnes gentes quæ obliscuntur Deum.

Quoniam non in finem oblivio erit pauperis patientia pauperum non peribit in finem.

Exurge Domine, non confortetur homo: judicentur gentes in conspectu tuo.

Constitue Domine legistatorem super eos, ut sciāt gentes quoniam homines sunt.

Ut

PSALMORUM.

13

Ut quid Domine recessisti longè despiciis in opportunitatibus, in tribulatione?

Dum superbit impius, incenditur pauper, comprehenduntur in consiliis, quibus cogitant.

Quoniam laudatur peccator in desideriis animæ suæ: & iniquus benedicitur.

Exacerbavit Dominum peccator secundum multitudinem iræ suæ non quæreret.

Non est Deus in conspectu ejus, iniquitatem sunt viæ illius in omni tempore.

Auferuntur judicia à facie ejus : omnium inimicorum suorum dominabitur.

Dixit enim in corde suo, nō movebor à generatione in generationē, sínè malo.

Cujus maledictione os plenum est , & amaritudine, & dolo, sub lingua ejus labor & dolor.

Sedet in insidiis cum divitibus in occultis: ut interficiat innocentem.

Oculi ejus in pauperē respiciūt: insidiatur in abscondito, quasi leo in spelūca sua.

Insidiatur ut rapiat pauperem, rapere pauperem, dum attrahit eum.

-LAST.

In

In laqueo suo humiliabit eum, inclinabit se, & cadet, cum dominatus fuerit pauperum.

Dixit enim in corde suo, oblitus est Deus, avertit faciem suam, ne videat in finem.

Exurge Domine Deus, & exaltetur manus tua: ne oblivia scaris pauperum.

Propter quid irritavit impius Deum; dixit enim in corde suo non requiret.

Vides, quoniam tu laborem & dolorem consideras: ut tradas eos in manus tuas.

Tibi derelictus est pauper: orphano tu eris adjutor.

Contere brachium peccatoris & maligni: queretur peccatum illius, & non inventetur.

Dominus regnabit in æternum & in sacerdolum sæculi: peribitis gentes de terra illius.

Desiderium pauperum exaudivit Dominus: præparationem cordis eorum audivit auris tua.

Judicare pupillo & humili: ut non apponat ultra magnificare se homo super terram.

Post singulos Psalmorum Decades ad imitationem
S. P. N^o Romualdi dicendum. ut supralatius notatum.

Glossia Iibi Trinitas & qualis una Deitas et ante
omne saeculum et nunc et in perpetuum. Te Deus
Patrem ingenitum Te filium unigenitum Te spiritum
sanctum Paraclitum sanctam et individuam Trini-
tatem toto corde et ore confitemur laudamus atque
benedicimus tibi gloria in saecula. Amen.

X. Orate pro nobis omnes sancti dei ut digni efficiamur etc
¶ Confundantur et revereantur omnes itimici mei.
¶ Adjutor et liberator meus esto. Inne ne tardaveris.
¶ Pater noster. etc.

Quo finito rursus ad inhoationem alterius Deca-
dis dicitur: Reple os meum laude Iua ut can-
tem gloriam tuam tota die magnitudinem tu-
am quoniam tu Dñe creasti me et adduxisti
ad hunc statum.

A djutorium nostrum in nomine Dñi. Qui fecit ete.
et inhoatur altera Deccas. et sic alid inhoant
et concluduntur.

Ad. m. D. gloriam

PSALMUS. 10.

IN Domino confido: quomodo dicitis
animæ meæ, transmigra in montem, si-
cūt passer?

Quoniam ecce peccatores intenderunt
arcum: paraverunt sagittas suas in pharetra,
ut sagittent in obscuro rectos corde.

Quoniam quæ perfecisti, destruxerunt:
justus autem quid fecit?

Dominus in templo sancto suo: Domi-
nus in cœlo sedes ejus.

Oculi ejus in pauperem respiciunt: pal-
pebrae ejus interrogant filios hominum.

Dominus interrogat justum, & impium:
qui autem diligit iniquitatem, odit animam
suam.

Pluet super peccatores laqueos: ignis, &
sulphur, & spiritus procellarum, pars calicis
corum.

Quoniam justus Dominus, & justitias
dilexit: æquitatem vedit vultus ejus.

X. Adjutorium nostrum in nomine Domini.

& Qui fecit cælum et terram. XI. Reple os meum laude

SAlvum me fac Domine, quoniam deſe-

ut supra
cit

cit sanctus: quoniam diminutæ sunt veritatis à filiis hominum.

Vana locuti sunt unusquisque ad proximum suum: labia dolosa in corde , & corde locuti sunt.

Disperdat Dominus universa labia dolosa:& linguam magniloquam.

Qui dixerunt, linguam nostram magnificabimus, labia nostra à nobis sunt: quis noster Dominus est?

Propter miseriam inopum & gemitum pauperum. nunc exurgam, dicit Dominus.

Ponam in salutari: fiducialiter agam in eo.

Eloquia Domini, eloquia casta, argentum igne examinatum, probatum terræ , purgatum septuplum.

Tu Domine servabis nos : & custodies nos: à generatione hac in æternum.

In circuitu impii ambulant, secundùm altitudinem tuam multiplicâsti filios hominum.

PSALMUS 12

Usquequo Domine oblisceris me in finem; usquequo avertis faciem tuam à me?

Quamdiu ponam consilia in anima mea dolorem in corde meo per diem;

Usquequo exaltabitur inimicus meus super me? respice, & exaudi me, Domine Deus meus.

Illumina oculos meos, ne unquam abdormiam in morte: ne quando dicat inimicus meus, prævalui ad versùs eum.

Qui tribulant me, exultabunt si motus fuero: ego autem in misericordia tua speravi.

Exultabit cor meum in salutari tuo, cantabo Domino, qui bona tribuit mihi: & psallam nomini Domini altissimi.

PSALMUS 13

Dixit insipiens in corde suo: non est Deus,

Corrupti sunt, & abominabiles facti sunt in studiis suis: non est qui faciat bonū,

B

non

non est usque ad unum.

Dominus de cœlo prospexit super filios hominum: ut videat si est intelligens aut requirens Deum.

Omnes declinaverunt, simul inutiles facti sunt: non est qui faciat bonum, non est usque ad unum.

Sepulchrum patens est guttus eorum: linguis suis dolosè agebant, venenum aspidum sub labiis eorum.

Quorum os maledictione & amaritudine plenum est; veloci pedes eorum ad confundendum sanguinem.

Contritio & infelicitas in viis eorum, & viam pacis non cognoverunt: non est timor Dei ante oculos eorum.

Nonne cognoscunt omnes qui operantur iniquitatem: qui devorant plebem meam, sicut escam panis.

Dominum non invocaverunt: illic trepidaverunt timore, ubi non erat timor.

Quoniam Dominus in generatione iusta est: consilium in opis confudistis, quoniam Dominus spes ejus est.

Quis dabit ex Sion salutare Israel, cùm avertirit

PSALMORUM.

19

verterit Dominus captivitatem plebis suæ,
exultabit Jacob, & lætabitur Israel.

PSALMUS 14.

Domine quis habitabit in tabernaculo
tuo? aut quis requiescet in monte san-
cto tuo?

Qui ingreditur sìne macula, & operatur
justitiam.

Qui loquitur Veritatem in corde suo,
qui non egit dolum in lingua sua.

Nec fecit proximo suo malum, & op-
probrium non accepit adversus proximos
suos.

Ad nihilum deductus est in conspectu
ejus malignus, timentes autem Dominum
glorificat.

Qui jurat proximo suo & non decipit,
qui pecuniam suam non dedit ad usuram,
& munera super innocentem non acce-
pit.

Qui facit hæc: non movebitur in æter-
num.

PSAL-

Conserva me Domine; quoniam speravi in te: dixi Domino, Deus meus es tu, quoniam bonorum meorum non eges.

Sanctis qui sunt in terra ejus: mirificavit omnes voluntates meas in eis.

Multiplicatae sunt infirmitates eorum: postea acceleraverunt.

Non congregabo conventicula eorum de sanguinibus: nec memor ero nominum eorum per labia mea.

Dominus pars hereditatis meae & calicis mei: tu es qui restitues hereditatem meam mihi.

Funes ceciderunt mihi in præclaris eternis hereditas mea præclara est mihi.

Benedicam Dominum qui tribuit mihi intellectum: insuper & usque ad noctem increpauerunt me renes mei.

Providebam Dominum in conspectu meo semper: quoniam a dextris est mihi, ne commovear.

Propter hoc latatum est cor meum, & exaltavit lingua mea: insuper & caro

PSALMORUM.

21

caro mea requiescat in spe.

Quoniam non derelinques animam
meam in inferno: nec dabis sanctum tuum
videre corruptionem.

Notas mihi fecisti vias vitae, adimplebis
me laetitiam cum vultu tuo: delectationes in
dextera tua usque in finem.

PSALMUS 16.

EXaudi Domine justitiam meam: inten-
de deprecationem meam.

Auribus percipe orationem meam: non
in labiis dolosis.

De vultu tuo judicium meum prodeat:
oculi tui videant aequitates.

Probasti cor meum, & visitasti nocte: igne
me examinasti, & non est inventa in me
iniquitas.

Ut non loquatur os meum opera homi-
num: propter verba labiorum tuorum ego
custodivi vias duras.

Perfice gressus meos in semitis tuis: ut
non moveantur vestigia mea.

Ego clamavi, quoniam exaudisti me De-

vs, inclina aurem tuam mihi , & exaudi
verba mea.

Mirifica misericordia tuas , qui salvos
facis sperantes in te.

A resistentibus dexteræ tuæ, custodi me
ut pupillam oculi:

Sub umbra alarum tuarum protege me,
à facie impiorum, qui me afflixerunt.

Inimici mei animam meam circumde-
derunt, ad ipsum suum concluserunt, oseo-
rum locutum est superbiam.

Projicientes me nunc circumdederunt
me, oculos suos statuerunt declinare in ter-
ram.

Suscepserunt me sicut leo paratus ad præ-
dam , & sicut catulus leonis habitans in ab-
ditis.

Exurge Domine , præveni eum , & sup-
planta eum , eripe animam meam ab im-
picio, franeam tuam ab inimicis manus tuæ.

Domine , à paucis de terra divide eos in
vita eorum , de absconditis tuis adimple-
tus est venter eorum.

Saturati sunt filiis , & dimiserunt reli-
quias

PSALMORUM.

23

quias suas parvulis suis.

Ego autem in iustitia apparebo conspectui tuo , satiabor cum apparuerit gloria tua.

PSALMUS 17.

Diligam te Domine fortitudo mea , Dominus firmamentum meum , & refugium meum , & liberator meus.

Deus meus adjutor meus , & sperabo in eum.

Protector meus , & cornu salutis meæ , & susceptor meus.

Laudans invocabo Dominum , & ab inimicis meis salvus ero.

Circumdederunt me dolores mortis , & torrentes iniquitatis conturbaverunt me.

Dolores inferni circumdederunt me , præoccupaverunt me laquei mortis.

In tribulatione mea invocavi Dominum , & ad Deum meum clamavi.

Et exaudivit de templo sancto suo vocem meam , & clamor meus in conspectu

Et uero introivit in aures ejus.

Commota est & contremuit terra: funda-
menta montium conturbata sunt , &
commota sunt, quoniam iratus est eis.

Ascendit fumus in ira ejus, & ignis à fa-
cie ejus exarsit: carbones succesi sunt ab eo.

Inclinavit cœlos, & descendit: & caligo
sub pedibus ejus.

Et ascendit super Cherubin, & volavit:
volavit super pennas ventorum.

Et posuit tenebras latibulum suum : in
circitu ejus, tabernaculum ejus tenebro-
sa aqua innubibus aëris.

Præ fulgore in conspectu ejus nubes
transierunt: grando & carbones ignis.

Et intonuit de cœlo Dominus , & Altissi-
mus dedit vocem suam , grando , & car-
bones ignis.

Et misit sagittas suas , & dissipavit eos ,
fulgura multiplicavit, & conturbavit eos.

Et apparuerunt fontes aquarum , & re-
velata sunt fundamenta orbis terrarum.

Ab increpatione tua Domine , ab in-
crepatione spiritus iræ tuæ.

Misit

Misit de summo, & accepit me, & assum-
psit me de aquis multis.

Eripuit me de inimicis meis fortissimis,
& ab his qui oderunt me, quoniam confor-
tati sunt super me.

Prævenerunt me in die afflictionis Meæ
& factus est Dominus protector meus.

Et eduxit me in latitudinem : salvum
me fecit : quoniam voluit me.

Et retribuet mihi Dominus secundum
justitiam meam : & secundum puritatem
manuum mearum retribuet mihi.

Quia custodivi vias Domini : nec impiè
gessi à Deo meo.

Quoniam omnia judicia ejus in conspe-
ctu meo : & justicias ejus non repuli à me.

Et ero immaculatus cum eo : & observa-
bo me ab iniquitate mea.

Et retribuet mihi Dominus secundum
justitiam meam : & secundum puritatem
manuum mearum in conspectu oculorum
ejus.

Cum sancto sanctus eris, & cum viro in-
nocente innocens eris.

Bs.

Et

Et cum electo electus eris, & cum per-
verso perverteris.

Quoniam tu populum humilem salvum
facies; & oculos superborum humiliabis.

Quoniam tu illuminas lucernam me-
am: Domine Deus meus illumina tenebras
meas.

Quoniam in te eripiar à tentatione &
in Deo meo transgrediar murum.

Deus meus impolluta via ejus, eloquia
Domini igne examinata: protector est om-
nium sperantium in se.

Quoniam quis Deus præter Dominum?
aut quis Deus præter Deum nostrum.

Deus qui præcinxit me virtute: & posu-
it immaculatum viam meam.

Qui perfecit pedes meos tanquam cer-
vorum: & super excelsa statuens me.

Qui docet manus meas ad prælium: &
posuisti ut arcum æreum brachia mea.

Et dedisti mihi protectionem salutis tuae
& dextera tua suscepit me.

Et disciplina tua correxit me in finem:
& disciplina tua ipsa me docebit.

Di-

Dilatâsti gressus meos subtus me: & non
sunt infirmata vestigia mea.

Persequar inimicos meos & comprehen-
dam illos: & non convertat donec defici-
ant.

Confringam illos, nec poterunt stare: ca-
dent subtus pedes meos.

Et præcinxisti me virtute ad bellum: &
supplantâsti insurgentes in me subtus
me.

Et inimicos meos dedisti mihi deorsum:
& odientes me disperdidisti.

Clamaverunt, nec erat qui salvos face-
ret, ad Dominum: nec exaudivit eos.

Et comminuam eos, ut pulverem ante
faciem venti: ut lutum platearum delebo
eos.

Eripies me de contradictionibus popu-
li: constitues in caput gentium.

Populus, quem non cognovi, servivit
mihi: in auditu auris obedivit mihi.

Filiī alieni mentiti sunt mihi, filii alieni
inveterati sunt: & claudicaverunt à semi-
tis suis.

Vivit Dominus, & benedictus Deus meus, & exaltetur Deus salutis meæ.

Deus, qui das vindictas mihi, & subdis populos sub me, liberator meus de inimicis meis iracundis.

Et ab insurgentibus in me exaltabis me, à viro iniquo eripies me.

Propterea confitebor te in nationibus Domine, & nomini tuo psalmum dicam.

Magnificans salutes regis ejus, & faciens misericordiam Christo suo David, & semini ejus usque in sæculum.

PSALMUS 18.

Cæli enarrant gloriam Dei, & opera manuum ejus annunciat firmamentum.

Dies diei eruat verbum, & nox nocti indicat scientiam.

Non sunt loquæ neque sermones, quorum non audiantur voces eorum.

In omnem terram exivit sonus eorum, in & fines orbis terræ verba eorum.

In sole posuit tabernaculū suum & ipse tan-

tāquam sponsus procedens de thalamo suo.

Exultavit ut gigas ad currēdā viam,
à summo cōcelo egressio ejus.

Et occurſus ejus usque ad summum ejus,
nec est qui le abscondat à calore ejus.

Lex Domini immaculata , convertens
animas , testimonium Domini fidele , & sa-
pientiam præstans parvulis.

Justitiæ Domini rectæ, lātificantes cor-
da, præceptum Domini lucidum , illumi-
nans oculos.

Timor Domini sanctus , permanens in
sæculum sæculi , judicia Domini vera justi-
ficata in semetipsa.

Desiderabilia super aurum & lapidem
pretiosum multum , & dulciora super mel
& favum.

Etenim servus tuus custodit ea, in custo-
diendis illis retributio multa.

• Delicta quis intelligit ? ab occultis meis
munda me , & ab alienis parce seruo tuo.

• Si mei non fuerint dominati , tunc im-
maculatus ero , & emundabor à delicto ma-
ximo. Et

Et erunt ut complacent eloquia oris
mei : & meditatio cordis mei in conspectu
tuo semper.

Domine adjutor meus : & redemptor
meus.

PSALMUS 19.

Exaudiat te Dominus in die tribulatio-
nis: Protegat te nomen Dei Jacob.

Mittat tibi auxilium de sancto : & de Si-
on tueatur te.

Memor sit omnis sacrificii tui: & hol-
ocaustum tuum pingue fiat.

Tribuat tibi secundum cortuum: & om-
ne consilium tuum confirmet.

Lætabimur in salutari tuo: & in nomine
Dei nostri magnificabimur.

Impleat Dominus omnes petitiones
tuas: nunc cognovi quoniam laudem fecit
Dominus Christum suum.

Exaudiat illum de cœlo sancto suo: in po-
tentibus saluis dexteræ ejus.

Hi in curribus, & hi in equis: nos autem

in

PSALMORUM.

13

in nomine Domini Dei nostri invocabimus.

Ipsi obligati sunt, & ceciderunt: nos autem surreximus, & erecti sumus.

Domine salvum fac regem, & exaudi nos in die qua invocaverimus te.

PSALMUS 20.

Dominus in virtute tua lætabitur rex, & super salutare tuum exultabit vehementer.

Desiderium cordis ejus tribuisti ei: & Voluntate labiorum ejus non fraudasti eum.

Quoniam prævenisti eum in benedictionibus dulcedinis: posuisti in capite ejus coronam de lapide pretioso.

Vitam petiit a te: & tribuisti ei longitudinem dierum in sæculum, & in sæculum sæculi.

Magna est gloria ejus in salutari tuo gloriā, & magnum decorē impones supereum.

Quoniam dabis eum in benedictionem in sæculum sæculi: lætificabis eum in

gau-

gaudio cum vultu tuo.

Quoniam rex sperat in Domino , & in misericordia altissimi non commovebitur.

Inveniatur manus tua omnibus inimicis tuis , dextera tua inveniat omnes qui te oderunt.

Pones eos ut clibanum ignis in tempore vultus tui , Dominus in ira sua conturbabit eos , & devorabit eos ignis.

Fructum eorum de terra perdes & semen eorum à filiis hominum.

Quoniam declinaverunt in te mala , cogitaverunt consilia quæ non potuerunt stabilire.

Quoniam pones eos sorsum in reliquis tuis præparabis vultum eorum.

Exaltare Domine in virvute tua cantabimus , & psallemus virtutes tuas.

Gloria tibi Trinitas , & qualis una Deitas et ante Omnia alti confundans et reverendissima SALMUS 21. & Adiutor , et liberator .

Deus in adiutorium meum etc. Ine ad diuina etc .
D Deus Deus meus respice in me , quare me dereliquisti ; longe à salute mea verba delictorum meorum .

Deus meus clamabo per diem , & non exaudiens

audies: & nocte , & non ad insipientiam
mihi.

Tu autem in sancto habitas : laus Israel.

In te speraverunt patres nostri sperave-
runt, & liberasti eos.

Ad te clamaverunt & salvi facti sunt: in
te speraverunt, & non sunt confusi.

Ego autem sum vermis & non homo :
opprobrium hominum, & abjectio plebis.

Omnes videntes me, deriserunt me: lo-
cuti sunt labiis, & moverunt caput.

Speravit in Domino, eripiat eum: salvū
faciat eum, quoniam vult eum.

Quoniam tu es qui extraxisti me deven-
tre spes mea ab uberibus matris meæ, in te
projectus sum ex utero.

De ventre matris meæ Deus meus es tu:
ne discesseris à me.

Quoniam tribulatio proxima est: quo-
niam non est qui adjuvet.

Circumdederunt me vituli multi : tau-
ri pingues oblederunt me.

Aperuerunt super me os suum. sicut Leo
rapiens & rugiens.

Sicut aqua effusus sum : & dispersa sunt
omnia ossa mea.

Factum est cor meum tanquam cera li-
quescens : in medio ventris mei.

Aruit tanquam testa virtus mea , & lin-
gua mea adhæsit faucibus meis: & in pul-
verem mortis deduxisti me.

Quoniam circumdederunt me canes
multi: cōsilium malignantium obfedit me.

Foderunt manus meas & pedes meos :
dinumeraverunt omnia ossa mea.

Ipsi verò consideraverunt, & inspexerunt
me: diviserunt sibi vestimenta mea, & super
vestem meam miserunt sortem.

Tu autem Domine ne elongaveris au-
xilium tuum à me : ad defensionem meam
conspice.

Erue à p̄framea Deus animam meam: &
de manu canis unicam meam.

Salva me ex ore leonis: & à cornibus.u-
nicornium humilitatem meam.

Narrabo nomen tuum fratribus meis :
in medio Ecclesiæ laudabo te.

Qui timetis Dominum laudate eum :
uni-

universum semen Jacob glorificate eum.

Timeat eum omne semen Israel : quoniam non sprevit, neque despexit deprecationem pauperis.

Nec avertit faciem suam à me : & cùm clamarem ad eum, exaudivit me.

A pud te laus mea in Ecclesia magna: vota mea reddam in conspectu timentium eum.

Edent pauperes, & saturabuntur; & laudabunt Dominum qui requirunt eum: vivent corda eorum in sæculum sæculi.

Reminiscentur & convertentur ad Dominum universi fines terræ.

Et adorabunt in conspectu ejus: universæ familiæ gentium.

Quoniam Domini est regnum: & ipse dominabitur gentium.

Manducaverunt & adoraverunt omnes pingues terræ: in conspectu ejus cadent omnes qui descendunt in terram.

Et anima mea illi vivet: & semen meum serviet ipsi.

Annuntiabitur Domino generatio

ventura: & annuntiabunt cœli justitiam e-
jus, populo qui nascetur quem fecit Do-
minus.

PSALMUS. 22

Dominus regit me, & nihil mihi decrit :
in loco pascuæ ibi me collocavit.
Super aquam refectionis educavit me ;
animam meam convertit.

Deduxit me super semitas justitiae. pro-
pter nomen suum.

Nam & si ambulavero in medio umbræ
mortis : non timebo mala , quoniam tu
mecum es.

Virgatua & baculus tuus, ipsa me con-
solata sunt.

Parasti in conspectu meo mensam: ad-
versus eos qui tribulant me.

Impinguasti in oleo caput meum : & ca-
lix meus inebrians quam præclarus est?

Et misericordia tua subsequetur me :
omnibus diebus vitæ meæ.

Et ut inhabitem in domo Domini : in
longitudinem dierum.

PSAL-

PSALMUS 23.

Domi*n*i est terra, & plenitudo ejus, or-
bi*s* terrarum, & universi, qui habitant
in eo.

Quia ipse super m*aria* fundavit eum :
& saper flumina præparavit eum.

Quis ascendet in montem Domini , aut
quis stabit in loco sancto ejus;

Innocen*s* manibus & mundo cord e*c*: qui
non accepit in vano animam suam , nec ju-
ravit in dolo proximo suo.

Hic accipiet benedictionem à Domi-
no & misericordiam à Deo salutari suo.

Hæc est generatio quærentium eum :
quærentium faciem Dei Jacob.

Attollite portas principes vestras, & ele-
vamini portæ æternales : & introibit rex
gloriar*e*.

Quis est iste rex gloriæ ; Dominus fortis
& potens, Dominus potens in prælio.

Attollite portas principes vestras & ele-
vamini portæ æternales : & introibit rex
gloriæ. C. 3

Quis

Quis est iste rex gloriæ; Dominus virtutum ipse est rex gloriæ.

PSALMUS 24.

Ad te Domine levavi animam meam
Deus meus in te confido, non erubescam.

Neque irrideant me inimici mei etenim
universi qui sustinent te, non confundentur.

Confundantur omnes in qua agentes :
supervacuè.

Via tua Domine demonstra mihi: &
semitas tuas edoce me.

Dirige me in Veritate tua, & doce me :
quia tu es Deus salvator meus , & te sustinui totâ die.

Reminiscere miserationum tuarum
Domine:& misericordiarum tuarum, quæ
a saeculo sunt.

Delicta juventutis meæ: & ignorantias
meas ne memineris.

Secundum misericordiam tuam me-
mento me tu: propter bonitatem tuâ Do-
mine.

Dulcis

Dulcis & rectus Dominus: propter hoc
legem dabit delinquentibus in via.

Diriget mansuetos in judicio: docebit
mites vias suas.

Universæ viæ Domini miseriordia & ve-
ritas: requirentibus testamentum ejus &
testimonia ejus.

Propter nomen tuum Domine propitia-
beris peccato meo: multum est enim.

Quis est homo qui timet Dominum? le-
gem statuit ei in via, quam elegit,

Anima ejus in bonis demorabitur: & se-
men ejus hæreditabit terram.

Firmamentum est Dominus timentibus
eum: & testamentum ipsius, ut manife-
stetur illis.

Oculi mei semper ad Dominum: quoni-
am ipse evellet delaquo pedes meos.

Respicere in me, & miserere mei: quia u-
nicus & pauper sum ego.

Tribulationes cordis mei: multiplicatæ
unt: de necessitatibus meis erue eum.

Vide humilitatem meam & laborem
meum: & dimitte universa delicta mea.

C ♫

Respicere

Respice inimicos meos, quoniam multiplicati sunt : & odio iniquo oderunt me.

Custodi animam meam, & erue me non erubescam, quoniam speravi in te.

Innocentes & recti adhæserunt mihi : quia sustinuite.

Libera Deus Israel ex omnibus tribulati-
onibus suis.

PSALMUS. 25.

Judica me Domine, quoniam ego in in-
nocentia mea ingressus sum : & in D o-
mino sperans non infirmabor.

Proba me Domine , & tenta me ure re-
nes meos, & cor meum.

Quoniam misericordia tua ante oculos
meos est : & complacui in Veritate tua.

Non sedi cum concilio vanitatis : &
cum iniqua gerentibus non introibo.

Odivi Ecclesiam malignantium, & cum
impiis non sedebo:

Lavabo in innocentes manus meas : &
circumdabis altare tuum Domine.

Ut audiam vocem laudis : & enarrem
univer sa

PSALMORUM.

41

universa mirabilia tua.

Domine dilexi decorem domus tuæ: & locum habitationis gloriae tuæ.

Ne perdas cum impiis Deus animam meam: & cum viris sanguinum vitam meam.

In quorum manibus iniquitates sunt: dextera eorum repleta est muneribus.

Ego autem in innocentia mea ingressus sum: redime me, & miserere mei.

Pes meus stetit in directo: in Ecclesiis benedic te Domine.

PSALMUS 26.

Dominus illuminatio mea & salus mea quem timebo;

Dominus protector virtutum mearum, a quo trepidabo?

Dum appropiant super me innocentes: ut edant carnes meas.

Qui tribulant me inimici mei, ipsi infirmati sunt & ceciderunt.

Si consistant adversum me castra, non timebit cor meum.

C 5

Si

Sic exurgat adversum me prælium: in hoc
ego sperabo.

Unam petii à Domino, hanc requiram:
ut inhabitem in domo Domini omnibus
diebus vitæ meæ.

Ut videam voluptatem Domini: & visi-
tem templum ejus.

Quoniam abscondit me in tabernaculo
suo : in die malorum protexit me in abs-
condito tabernaculi sui.

In petra exaltavit me: & nunc exaltavit
caput meum super inimicos meos.

Circuivi, & immolavi in tabernaculo e-
jus hostiam vociferationis: cantabo &
psalmum dicam Domino.

Exaudi Domine vocem meam , qua-
clamavi ad te: miserere mei, & exaudi me.

Tibi dixit cor meum, exquisivit te facies
mea: faciem tuam Domine requitam.

Ne avertas faciem tuam à me: ne descli-
nes in ira à servo tuo.

Adjutor meus esto, ne derelinquas me:
neque despicias me Deus salutaris meus.

Quoniam pater meus & mater mea
de-

PSALMORUM.

43

dereliquerunt me : Dominus autem assumpsit me.

Legem pone mihi Domine in via tua : & dirige me in semitam rectam , propter inimicos meos.

Ne tradideris me in animas tribulantium me: quoniam insurrexerunt in me testes iniqui , & mentita est iniquitas sibi.

Credo videre bona Domine: in terra viventium.

Expecta Dominum , viriliter age : & confortetur cor tuum , & sustine Dominum.

PSALMUS 27.

AD te Domine clamabo , Deus meus
An e sileas à me : ne quando taceas à me ,
& assimilabor descendantibus in lacum ,

Exaudi Domine vocem deprecationis
meæ, dum oro ad te : dum extollo manus
meas ad templum sanctum tuum.

Ne simul trahas me cum peccatoribus:
& cum operantibus iniquitatem ne perdas
me.

Qui loquuntur pacem cum proximo

C 6

suo:

suo, mala autem in cordibus eorum.

Da illis secundum opera eorum, & secundum nequitia adinventionum ipsorum.

Secundum opera manuum eorum tribuc illis, redde retributionem eorum ipsis.

Quoniam non intellexerunt opera Domini, & in opera manuum ejus destrues illos, & non ædificabis eos.

Benedictus Dominus, quoniam exaudivit vocem deprecationis meæ.

Dominus adjutor meus, & protector meus, & in ipso speravit cor meum, & adjutus sum.

Et refloruit caro mea, & ex Voluntate mea confitebor ei.

Dominus fortitudo plebis suæ, & protector salvationum Christi sui est.

Salvum fac populum tuum Domine, & benedich hereditati tuæ, & rege eos, & extolle illos usque in æternum.

PSALMUS 28.

Afferte Domino filii Dei, afferte Domino filios arietum.

Af-

PSALMORUM.

45

Afferte Domino gloriam & honorem,
afferte Domino gloriam nomini ejus, a-
dorate Dominum in atrio sancto ejus.

Vox Domini super aquas, Deus maj-
statis intonuit, Dominus super aquas mul-
tas,

Vox Domini in virtute, vox Domini in
magnificentia.

Vox Domini confringentis cedros, &
confringet Dominus cedro Libani.

Et comminuet eas tanquam vitulum Li-
bani, & dilectus quemadmodum filius u-
nicornium.

Vox Domini intercidentis flammarum
ignis, vox Domini concutientis desertum,
& commovebit Dominus desertum Ca-
des.

Vox Domini præparantis cervos, & re-
velabis condensa, & in templo ejus omnes
dicent gloriam.

Dominus diluvium inhabitare facit, &
sedebit Dominus rex in æternum.

Dominus virtutem populo suo dabit
Dominus benedicet populo suo in pace.

PSAL-

Exaltabo te Domine, quoniam suscepisti
me: nec delectasti inimicos meos super
me.

Domine Deus meus clamavi ad te : &
sanasti me.

Domine eduxisti ab inferno animam
meam: salvasti me à descendantibus in la-
cum.

Psallite Domino Sancti ejus: & confite-
mini memoriæ sanctitatis ejus.

Quoniam ira in indignatione ejus : &
vita in Voluntate ejus.

Ad vesperum demorabitur fletus: & ad
matutinum lætitia.

Ego autem dixi in abundantia mea: non
movebor in æternum.

Domine in Voluntate tua: præstisti de-
cori meo virtutem.

Avertisti faciem tuam à me : & factus
sum conturbatus.

Ad te Domine clamabo: & ad Dcū me-
um deprecabor.

Quæ

PSALMORUM.

47

Quæ utilitas in sanguine meo : dum descendō in corruptionem;

Nunquid confitebitur tibi pulvis: aut annuntiabit Veritatem tuam?

Audivit Dominus , & misertus est mei :
Dominus factus est adjutor meus.

Convertisti planctum meum in gaudium mihi: considisti saccum meum, & circumdedisti me lætitiam.

Ut cantet tibi gloria mea, & non compungar: Domine Deus meus in æternum confitebor tibi.

PSALMUS 30.

In te Domine speravi, non confundar in
æternum in justitia tua libera me.

Inclina ad me aurem tuam : accelera, ut
cruas me.

Esto mihi in Deum protectorem , & in
domum refugii, ut salvum me facias.

Quoniam fortitudo mea & refugium
meum es tu: & propter nomen tuum de-
duces me, & enutries me.

Educes me de laqueo hoc quem abs-
conde-

sconderunt mihi: quoniam tu es protector
meus.

In manus tuas commendō spiritum
meum, redemisti me Domine Deus Veri-
tatis.

Odisti observantes vanitates: superva-
cuè.

Ego autem in Domino speravi, exulta-
bo, & lātabor in misericordia tua.

Quoniam respexisti humilitatem meam.
salvāsti de necessitatibus anima m meam.

Nec conclusisti me in manibus inimici
statuisti in loco spatio pedes meos.

Miserere mei Domine quoniam tribu-
lor, conturbatus est in ira oculus meus,
anima mea, & venter meus.

Quoniam defecit in dolore vita mea, &
anni mei in gemitibus.

Infirmita est in paupertate virtus mea,
& ossa mea conturbata sunt.

Super omnes inimicos meos factus sum
opprobrium vicinis meis valde, & timor
notis meis.

Qui videbant me, foras fugerunt à me
obli-

oblivioni datus sum , tanquam mortuus à corde.

Factus sum tanquam vas perditum: quoniam audivi vituperationem multorum commorantium in circuitu.

In eo dum convenienter simul adversum me : accipere animam meam consiliati sunt.

Ego autem in te speravi Domine: dixi , Deus meus es tu, in māib⁹ tuis sortes meæ.

Eripe me de manu inimicorum meorum: & à persequenti⁹ bus me.

Illustra faciem tuam super servum tuum , salvum me fac in misericordia tua. Domine non confundar, quoniam invocavi te.

Erubescant impii , & deducantur in infernum: muta siant labia dolosa.

Quæ loquuntur adversus justum iniquitatem in superbia & in abusione

• Quām magna multitudo dulcedinis tuæ Domine : quam abscondisti timentibus te.

Perfecisti eis qui sperant in te in conspectu filiorum hominum.

D

Ab-

Abscondes eos in abscondito faciei tuæ
à conturbatione hominum.

Proteges eos in tabernaculo tuo: à con-
tradictione linguarum.

Benedictus Dominus: quoniam miri-
ficavit misericordiam suam mihi, in civita-
ta munita.

Ego autem dixi in excessu mentis meæ:
projectus sum à facie oculorum tuorum.

Ideo exaudisti vocem orationis meæ :
dum clamarem ad te.

Diligit Dominum omnes sancti ejus :
quoniam Veritatem requirit Dominus ,
& retribuet abundanter facientibus super-
biam.

Viriliter agite, & confortetur cor ve-
strum; omnes qui speratis in Domino.

*Gloria Trinitatis et ALMUS Reple os meus etc.
Adiutorium nostrum: & qui fecit nos etc.*

Beat quorum remissæ sunt iniquitates;
& quorum teœta sunt peccata.

Beatus vir cui non imputavit Dominus
peccatum; nec est in spiritu ejus dolus.

Quoniam tacui , inveteraverunt ossa
mea: dum clamarem totâ die,

Quoniam

PSALMORUM.

55

Quoniam die ac nocte gravata est super me manus tua: conversus sum in ærumna mea, dum configitur spina.

Delictum meum cognitum tibi feci: & injustitiam meam non abscondi.

Dixi: Confitebor adversum me injustitiam meam Domino: & tu remisisti impietatem peccati mei.

Pro hac orabit ad te omnis sanctus: in tempore opportuno.

Verumtamen in diluvio aquarum multarum: ad eum non approximabunt.

Tu es refugium meum à tribulatione quæ circumdedit me: exultatio mea, crux me à circumcidantibus me.

Intellectum tibi dabo & instruam te in via hac, quâ gradieris: firmabo super te oculos meos.

Nolite fieri sicut equus & mulus: qui bus non est intellectus.

In camo & fræno maxillas eorum constringe qui non approximant ad te.

Multa flagella paccatoris: sperantem autem in Domino, misericordia circundabit.

Lætamini in Domino, & exultate justi
& gloriamini omnes recti corde.

PSALMUS 32.

EXULTATE justi in Domino, rectos de-
cet collaudatio.

Confitemini Domino in cithara : in
psalterio decem chordarum psallite illi.

Cantate ei canticum novum bene psal-
lite ei in vociferatione.

Quia rectum est verbum Domini : &
omnia opera ejus in fide.

Diligit misericordiam & judicium : mi-
sericordia Domini plena est terra.

Verbo Domini cœli firmati sunt : &
spiritu oris ejus omnis virtus eorum.

Congregans sicut in utre aquas maris po-
nens in thesauris abyssos.

Timeat Dominum omnis terra : ab eo
autem commoveantur omnes inhabitan-
tes orbem.

Quoniam ipse dixit, & facta sunt : ipse
mandavit, & creatu sunt.

Dominus dissipat consilia gentium ,

re-

reprobatur autem cogitationes populorum,
& reprobatur consilia principum.

Consilium autem Domini in æternum
manet, cogitationes cordis ejus in genera-
tionem & generationem.

Beata gens cuius est Dominus, Deus
ejus, populus, quem elegit in hæreditatem
sibi.

De cœlo respexit Dominus, vedit omnes
filios hominum.

De præparato habitaculo suo respexit
super omnes qui habitant terram;

Qui fixit sigillatim corda eorum, qui
intelligit omnia opera eorum.

Non salvatur rex per multam virtutem,
& gigas non salvabitur in multitudine vir-
tutis suæ.

Fallax equus ad salutem, in abundantia
autem virtutis suæ non salvabitur.

Ecce oculi Domini super metuentes eum,
& in eis quisperant super misericordia e-
jus.

Ut eruat à morte animas eorum & alat
eos in fame.

Anima nostra sustinet Dominum: quoniam adiutor & protector noster est.

Quia in eo lætabitur cor nostrum : & in nomine sancto ejus speravimus.

Fiat misericordia tua Domine super nos: quemadmodum speravimus in te.

PSALMUS 33.

BEnedicam Dominum in omni tempore: semper laus ejus in ore meo.

In Domino laudabitur anima mea : au-diant mansueti, & lætentur.

Magnificate Dominum tecum: & ex-altemus nomen ejus in id ipsum.

Exquisivi Dominum, & exaudivit me: & ex omnibus tribulationibus meis eripuit me.

Accedite ad eum , & illuminamini: & facies vestrae non confundentur.

Iste pauper clamavit, & Dominus exau-divit eum : & de omnibus tribulationibus ejus salvavit eum.

Immittet Angelus Domini in circuitu-timentium eum: & cripiet eos.

Gustate

PSALMORUM.

55

Gustate, & videte, quoniam suavis est
Dominus: beatus vir qui sperat in eo.

Timete Dominum omnes sancti ejus:
quoniam non est inopia timentibus eum.

Divites eguerunt & esurierunt: inqui-
rentes autem Dominum non minuentur
omni bono.

Venite filii, audite me: timorem Domi-
ni docebo vos.

Quis est homo qui vult vitam? diligit
dies videre bonos;

Prohibe linguam tuam à malo: & labia
tua ne loquantur dolum

Diverte à malo, & fac bonum: inquire
pacem, & persequere eam.

Oculi Domini super justos: & aure se jus
in preces eorum.

Vultus autem Domini super facientes
mala; ut perdat de terra memoriam eo-
rum.

Clamaverunt justi, & Dominus exau-
divit eos: & ex omnibus tribulationibus
eorum liberavit eos.

Juxta est Dominus iis qui tribulati sunt

D 4

corde

corde, & humiles spiritu salvabit.

Multæ tribulationes justorum , & de omnibus his liberabit eos Dominus.

Custodit Dominus omnia ossa eorum, unum ex his non conteretur.

Mors peccatorum pessima , & qui oderunt justum, delinquent.

Redimet Dominus animas servorum suorum , & non delinquent omnes , qui sperant in eo.

PSALMUS 34.

Judica Domine nocentes me, expugna impugnantes me.

Apprehende arma, & scutum & exurge in adjutorium mihi.

Effunde frameam, & conclude adversus eos qui persequuntur me : dic animæ meæ, salus tua ego sum.

Confundantur & ievercantur, querentes animam meam.

Avertantur retrosum, & confundantur cogitantes mihi mala.

Fiant tanquam pulvis ante faciem venti,
&

& Angelus Domini coarctans eos.

Fiat via illorum tenebræ & lubricum, &
Angelus Domini persequens eos.

Quoniam gratis absconderunt mihi in-
teritum laquei sui, supervacuè exprobrave-
runt animam meam.

Veniat illi laqueus quem ignorat, & cap-
tio quam abscondit apprehendat eum, &
in laqueum cadat in ipsum.

Anima autem mea exultabit in Domi-
no, & delectabitur super salutari suo.

Omnia ossa mea dicent, Domine, quis
similis tibi;

Eripiens inopem de manu fortiorum e-
jus, egenum & pauperem à diripientibus
eum.

Surgentes testes iniqui, quæ ignorabam
interrogabant me.

Retribuebant mihi mala pro bonis, ste-
rilitatem animæ incæ.

Ego autem cum mihi molesti essent, in-
duebar cilicio,

Humiliabam in jejunio animam me-
am, & oratio mea in sinu meo convertetur.

D s

Quasi

Quasi proximum, & quasi fratrem nostrum, sic complacebam: quasi lugens & contristatus sic humiliabar.

Et adversum me lætati sunt, & convene-
runt: congregata sunt super me flagella, &
ignoravi.

Dissipati sunt, nec compuncti, tentave-
runt me, subsannaverunt me subsan-
natione: frenduerunt super me dentibus
suis.

Domine quando respicies, restitue ani-
mam meam à malignitate eorum, à leoni-
bus unicam meam.

Confitebor tibi in Ecclesia magna: in
populo gravi laudabo te.

Non supergaudeant mihi, qui adver-
santur mihi iniquè: qui oderunt me gratis
& annuunt oculis,

Quoniam mihi quidem pacificè loque-
bantur: & in iracundia terræ loquentes, do-
los cogitabant,

Et dilataverunt super me os suum: dixe-
runt, Euge, euge, viderunt oculi nostri.

Vidisti Domine, ne sileas: donec
disce-

discedas à me.

Exurge & intende judicio meo : Deus
meus, & Dominus meus in causam meam.

Judica me secundum justitiam tuam
Domine Deus meus: & non supergaudeant
mihi.

Non dicant in cordibus suis, Euge, euge
animæ nostræ: nec dicant, devoravimus
eum.

Erubescant, & reverentur simul : qui
gratulantur malis meis.

Induantur confusione & reverentiâ :
qui maligna loquuntur super me.

Exultent, & lætentur qui volunt justiti-
am meam : & dicant semper, magnifice-
tur Dominus, qui volunt pacem servi e-
jus.

Et lingua mea meditabitur justitiam tu-
am. totâ die laudem tuam.

PSALMUS 35.

DIxit injustus ut delinquat se metipso:
non est timor Dei ante oculos eius.

D 6

Quoni-

Quoniam dolosè egit in conspectu ejus,
ut inveniatur iniqüitas ejus ad odium.

Verba oris ejus iniqüitas, & dolus: noluit
intelligere ut bene ageret.

Iniqüitatem meditatus est in cubili suo,
ast tit omni viæ non bonæ , malitiam au-
tem non odivit.

Domine in cœlo misericordia tua & ve-
ritas tua usque ad nubes.

Justitia tua sicut montes Dei , judicia tua
abyssus multa.

Homines & jumenta salvabis Domine,
quemadmodum multiplicâsti misericor-
diam tuam Deus.

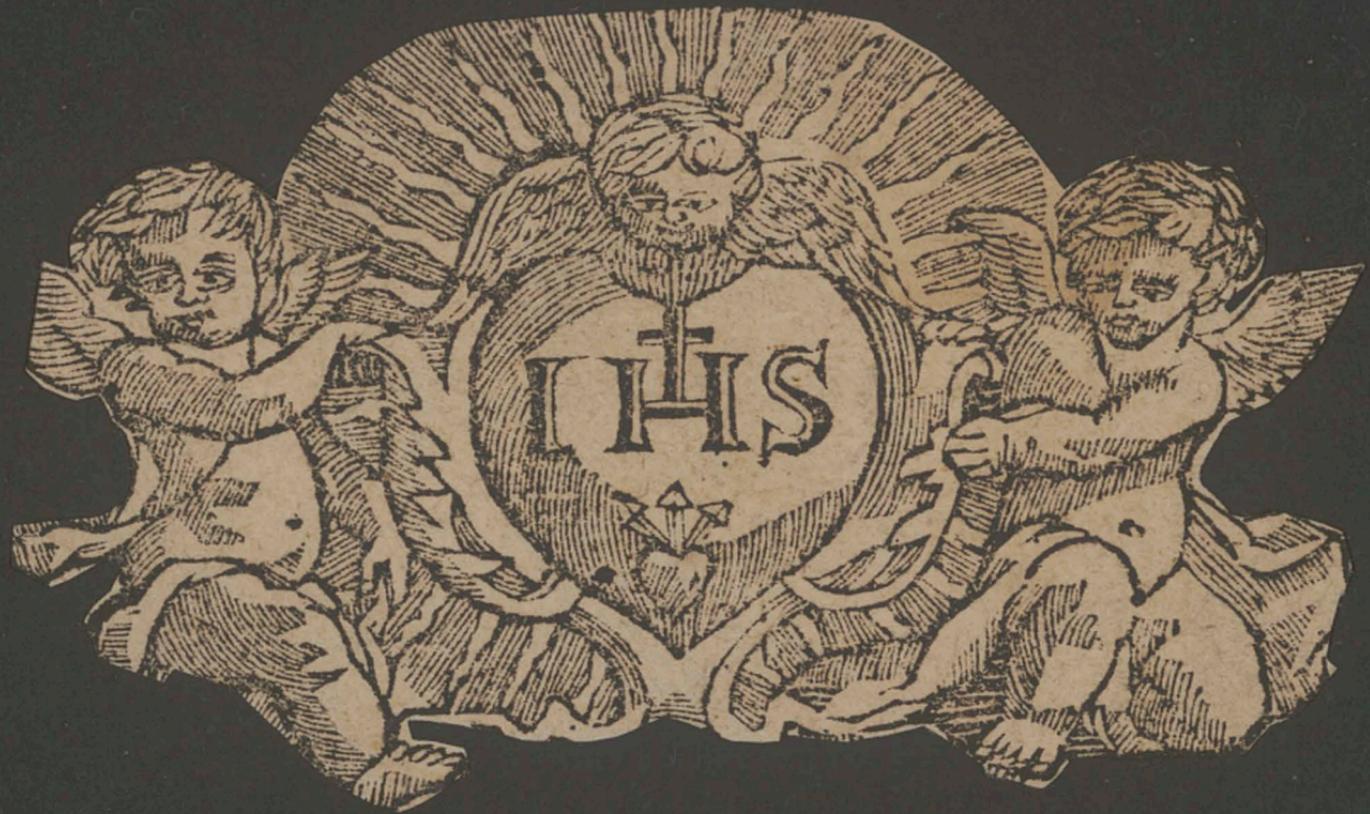
Fili autem hominum , in tegmine ala-
rum tuarum sperabunt.

Inebriabuntur ab ubertate domûs tuæ
& torrente voluptatis tuæ potabis eos.

Quoniam apud te est fons vitæ , & in lu-
mine tuo videbimus lumen.

Prætendé misericordiam tuam scienti-
bus te , & justitiam tuam his , qui recto
sunt corde.

Non veniat mihi pes superbiæ: & manus
pec-





PSALEMORUM.

61

peccatoris non moveat me.

Ibi ceciderunt, qui operantur iniquitatem: expulsi sunt, nec potuerunt stare.

PSALMUS 36.

Noli æmulari in malignantibus: neque zelaveris facientes iniquitatem.

Quoniam tanquam fœnum velociter arescent: & quemadmodum olera herbarum citò decident.

Spera in Domino, & fac bonitatem: inhabita terram, & pascēris in divitiis ejus.

Delectare in Domino: & dabit tibi petitiones cordis tui.

Revela Domino viam tuam & spera in eo: & ipse faciet.

Et educet quasi lumen justitiam tuam, & iudicium tuum tanquam meridiem: subditus esto Domino, & ora eum.

Noli æmulari in eo qui prosperatur in via sua in homine faciente injusticias.

Desine ab ira, & derelinque furorem: noli æmulari, ut maligneris.

Quoniam qui malignantur, exterminabuntur

buntur : sustinentes autem Dominum
ipsi hæreditabunt terram.

Et adhuc pusillum , & non erit pecca-
tor & quæres locum ejus , & non inveni-
es.

Mansueti autem hæreditabunt terram
& delectabuntur in multitudine pacis.

Observabit peccator justum : & stride-
bit super euindentibus suis.

Dominus autem irridebit eum: quoni-
am prospicit, quod veniet dies ejus.

Gladium evaginaverunt peccatores: in-
tenderunt arcum suum.

Ut dejiciant pauperem & inopem : ut
trucident rectos corde.

Gladius eorum intret in corda ipsorum
& arcus eorum confringatur.

Melius est modicum justo, super diviti-
as peccatorum multas.

Quoniam brachia peccatorum con-
centur: confirmat autem justos Dominus.

Novit Dominus dies immaculatorum
& hæritas eorum in æternum erit.

Non confundentur in tempore malo ,

&

& in diebus famis saturabuntur : quia peccatores peribunt.

Inimici verò Domini , mox ut honorificati fuerint & exaltati deficientes, quemadmodum fumus deficient.

Mutuabitur peccator, & non solvet: iustus autem miseretur & retribuet.

Quia benedicentes ei hæreditabunt terram: maledicentes autem ei disperbunt.

Apud Dominum gressus hominis dirigentur: & viam ejus volet.

Cum ceciderit, non collidetur : quia Dominus supponit manum suam.

Junior fui, etenim senui. & non vidi iustum derelictum , nec semen ejus querens panem.

Totâ die miseretur, & commodat: & semen illius in benedictione erit.

Declina à malo, & fac bonum : & inhabita in sæculum sæculi.

Quia Dominus amat judicium, & non derelinquet sanctos suos: in æternum conservabuntur.

Injusti punientur : & semen impiorum peribit.

Justi autem hæreditabunt terram : & inhabitabunt in sæculum sæculi super eam

Os justi meditabitur sapientiam : & lingua ejus loquetur judicium.

Lex Dei ejus in corde ipsius : & non supplantabuntur gressus ejus.

Considerat peccator justum : & quærit mortificare eum.

Dominus autem non derelinquet eum in manibus ejus ; nec damnabit eum , cùm judicabitur illi .

Expecta Dominum , & custodi viam ejus , & exaltabit te , ut hæreditate capias terram : cùm perierint peccatores , videbis .

Vidi impium superexaltatum : & elevatum , sicut cedros Libani .

Et transivi , & ecce non erat : & quæsivi eum , & non est inventus locus ejus .

Custodi innocentiam , & vide æquitatem : quoniam sunt reliquæ homini pacifico .

Injusti autem disperibunt simul : reliquiae impiorum interibunt.

Salus autem justorum à Domino : & protector eorum in tempore tribulationis.

Et adjuvabit eos Dominus : & liberabit eos : & eruet eos à peccatoribus , & salvabit eos , quia speraverunt in eo.

PSALMUS 37.

Domine, ne in furore tuo arguas me :
neque in ira tua corripias me.

Quoniam sagittæ tuæ infixæ sunt
mihi , & confirmâsti super me manum
tuam.

Non est sanitas in carne mea à facie i-
rae tuæ : non est pax oisibus meis à facie
peccatorum meorum.

Quoniam iniquitates meæ super gressæ
sunt caput meum : & sicut onus grave
gravatæ sunt super me.

Putruerunt & corruptæ sunt cicatrices
meæ : à facie insipientiæ meæ,

Miser factus sum & curvatus sum tis-
que in finem totâ die contristatus ingredi-
ebar.

Quoniam lumbi mei impleti sunt illu-
sionibus: & non est Sanitas in Carne
mea.

Afflicatus sum, & humiliatus sum nimis:
rugiebam à gemitu cordis mei.

Domine: ante te omne desiderium me-
um: & gemitus meus à te non est abscon-
ditus.

Cor meum conturbatum est , dereli-
quit me virtus mea: & lumen oculorum
meorum, & ipsum non est mecum.

Amici mei , & proximi mei : adversus
me appropinquaverunt, & steterunt.

Et qui juxta me erant , de longè stete-
runt: & vim faciebant qui quærebant ani-
mam meam

Et qui inquirebant mala mihi , locuti
sunt vanitates : & dolos totâ die medita-
bantur.

Ego autem tanquam surdus non audi-
bam : & sicut mutus non aperiens os su-
um.

Et factus sum sicut homo non audiens:
& non habens in ore suo redargutiones.

Quo.

Quoniam in te Domine speravi: tu exaudies me Domine Deus meus.

Quia dixi: Ne quando supergaudeant mihi inimici mei: & dum commoventur pedes mei, super me magna locuti sunt,

Quoniam ego in flagella paratus sum: & dolor meus in conspectu meo semper,

Quoniam iniquitatem meam annuntiabo: & cogitabo pro peccato meo.

Inimici autem mei vivunt, & confirmati sunt super me: & multiplicati sunt qui oderunt me inique.

Qui retribuunt mala pro bonis, detrahebant mihi: quoniam sequebar bonitatem.

Ne derelinquas me Domine Deus meus: ne discesseris a me.

Intende in adjutorium meum: Domine Deus salutis meae.

PSALMUS 38.

DIxi, custodiam vias meas ut non delinquam in lingua mea.

Posui ori meo custodiam: cum confiteret peccator adversum me.

Obmutui & humiliatus sum, & silui à
bonis: & dolor meus renovatus est.

Concaluit cor meum intra me: & in me-
ditatione mea exardescet ignis.

Locutus sum in lingua mea : notum fac
mihi Domine finem meuin.

Et numerum dierum meorum quis est:
ut sciam quid desit mihi.

Ecce mensurabiles posuisti dies meos: &
substantia mea , tanquam nihilum ante
te.

Veruntamen universa vanitas : omnis
homo vivens.

Veruntamen in imagine pertransit ho-
mo: sed & frustra conturbatur.

Thesaurizat: & ignorat , cui congrega-
bit ea.

Et nunc quæ est expectatio mea, nōnne
Dominus ; & substantia mea apud te est.

Ab omnibus iniquitatibus meis erue
me: opprobrium insipienti dedisti me.
~~Obmutui~~^{el} Obstinfui, & non aperui os meum,^{etaures meas} quo-
niam tu fecisti: amove à me plagas tuas.

A fortitudine manus tux ego defeci in
in-

increpationibus: propter iniquitatem cor-
ripuisti hominem.

Etabescere fecisti sicut araneam ani-
mam ejus: veruntamen vanè conturbatur
omnis homo.

Exaudi orationem meam Domine &
deprecationem meam: auribus percipe
lachrymas meas.

Ne sileas, quoniam advena ego sum a-
pud te, & peregrinus: sicut omnes patres
mei

Remitte mihi, ut refrigereret priusquam
abeam: & amplius non ero.

PSALMUS 39.

Expectans expectavi Dominum: & in-
tendit mihi.

Et exaudivit preces meas: & eduxit me
de lacu mileriæ, & de luto fæcis.

Et statuit supra petram pedes meos: &
direxit gressus meos.

Et immisit in os meum canticum no-
vum, carmen Deo nostro.

Videbunt multi, & timebunt: & spe-

rabunt in Domino.

Beatus vir, cuius est nomen Domini spes ejus : & non respexit in vanitates & insinuations falsas.

Multa fecisti tu Domine Deus meus : mirabilia tua : & cogitationibus tuis non est qui similis sit tibi.

Annuntiavi & locutus sum: multiplicati sunt super numerum.

Sacrificium & oblationem noluisti au-
res autem perfecisti mihi.

Holocaustum & pro peccato non po-
stulasti: tunc dixi: ecce venio.

In capite libri spiritum est de me, ut fa-
cerem voluntatem tuam: Deus meus vo-
lui, & legem tuam in medio cordis mei.

Annuntiavi justitiam tuam in Ecclesia
magna: ecce labia mea non prohibebo ,
Domine tu scisti.

Justitiam tuam non abscondi in corde
meo: veritatem tuam & salutare tuum
dixi

Non abscondi misericordiam tuam, &
veritatem tuam: à consilio multo,

Tu-

PSALMORUM.

71

Tu autem Domine ne longè facias miserationes tuas à me: misericordia tua , & veritatis tua semper suscepereunt me.

Quoniam circumdederunt me mala quorum non est numerus, comprehendebunt me iniquitates meæ , & non potui ut viderem.

Multiplicatae sunt super capillos capitum mei, & cor meum dereliquit me.

Complaceat tibi Domine, ut eruas me , Domine ad adjuvandum me respice.

Confundantur , & reverentur simul qui querunt animam meam , ut auferant eam.

Convertantur retrorsum & reverentur, qui volunt mihi mala.

Ferant confessim confusionem suam , qui dicunt mihi, Euge, ege.

Exultent & latentur super te omnes qui x-
renzest te, & dicant semper ; magnificetur Dominus, qui diligit salutare tuum

Ego autem mendicus sum & pauper ,
Dominus sollicitus est mei,

Adjutor meus & protector meus tu es,

E 4

Deus

Deus meus ne tardaveris.

PSALMUS 40.

Batus qui intelligit super egenum & pauperem: in die mala liberabit eum Dominus.

Dominus conservet eum, & vivifiet eum: & beatum faciat eum in terra: & non tradat eum in animam inimicorum ejus:

Dominus opem ferat illi super lectum doloris ejus: universum stratum ejus versasti in infirmitate ejus.

Ego dixi, Domine miserere mei: sana animam meam, quia peccavi tibi.

Inimici mei dixerunt mala mihi quandomo ietur, & peribit nomen ejus;

Et si ingrediebatur ut videret, vana loquebatur cor ejus congregavit iniquitatem sibi.

Egrediebatur foras & loquebatur in id ipsum

Adversum me susurrabant omnes inimici mei: adversum me cogitabat mala mihi.

Verbum iniquum constituerunt adversum me: nunquid qui dormit, non ad-

adjicet ut resurgat?

Etenim homo pacis meæ in quo sperávi: qui e debat panes meos , magnificavit super me supplantationem.

Tu autem Domine miserere mei, & re-suscita me. & retribuam eis.

In hoc cognovi quoniam voluisti me , quoniam non gaudebit inimicus meus su-per me.

Me autem propter innocentiam suscep-tisti, & confirmasti me in conspectu tuo in æternum.

Benedictus Dominus Deus Israël à sa-culo, & usque in sacerdolum, Fiat, fiat.

Gloria tibi Trinitas etc. Je Deum patrem ingenitum. etc.
V. Deus in adiutorio p̄ SALMUS 41 Dñe ad adiuvandum etc.
Reple os meum laude, ut cantem gloriam tuam etc.

Quemadmodum desiderat cervus ad fontes aquarum , ita desiderat ani-ma mea ad te Deus.

Sicutivit anima mea ad Deum fortē vi-vum, quando veniam & apparebo ante fa-ciem Dei?

Fuerunt mihi lachrymæ meæ panes die ac nocte, dum dicitur mihi quotidie;

E s ubi

ubi est Deus tuus;

Hæc recordatus sum, & effudi in me animam meam: quoniam transibo in locum tabernaculi admirabilis, usque ad dominum Dei.

In voce exultationis, & confessionis: sonus epulantis.

Quare tristis es anima mea? & quare conturbas me?

Spera in Deo, quoniam adhuc confitebor illi: salutare vultus mei, & Deus meus.

Ad meipsum anima mea conturbata est: propterea memor ero tui, de terra Jordanis, & Hermoniū, à monte modico.

Abyssus abyssum invocat: in voce cataractarum tuarum.

Omnia excelsa tua, & fluctus tui super me transferunt.

In die mandavit Dominus misericordiam suam, & nocte canticum ejus.

Apud me oratio Deo virtutē meae, dicam Deo, susceptor meus es.

Quare oblitus es mei: & quare contristatus incedo, dum affligit me inimicus:

Dum

Dum confringuntur ossa mea, exprobraverunt mihi, qui tribulant me inimici mei.

Dum dicunt mihi per singulos dies, ubi est Deus tuus, quare tristis es anima mea, & quare conturbas me?

Spera in Deo, quoniam adhuc confitebor illi, salutare vultus mei, & Deus meus.

P SALMUS 42.

Judica me Deus, & discerne causam meam de gente non sancta, ab homine iniquo, & doloso erue me.

Quia tu es Deus fortitudo mea, quare me repulisti, & quare tristis incedo? dum affligit me inimicus?

Emitte lucem tuam, & veritatem tuam, ipsa me deduxerunt, & adduxerunt in monte sanctum tuum, & in tabernacula tua.

Et introibo ad altare Dei ad Deum qui latificat juventutem meam.

Confitebor tibi in cathara Deus, Deus meus, quare tristis es anima mea, & quare conturbas me?

Spera in Deo, quoniam adhuc confite-

bor illi, salutare vultūs mei , & Deus meus.

PSALMUS 43.

Deus auribus nostris audivimus, patres nostri annuntiaverunt nobis.

Opus quod operatus es in diebus eorum, & in diebus antiquis.

Manus tua gentes disperdidit , & planasti eos, affixisti populos, & expulisti eos.

Nec enim in gladio suo possederunt terram, & brachium eorum non salvavit eos.

Sed dextera tua , & brachium tuum , & illuminatio vultū tui, quoniam complacuisti in eis.

Tu es ipse rex meus & Deus meus , qui mandas salutes Jacob.

In te inimicos nostros ventilabimus cornu, & in nomine tuo spernemus infurientes in nobis.

Non enim in arcu meo sperabo , & gladius meus non salvabit me.

Salvasti enim nos de afflgentibus nos, & odientes nos confudisti.

In Deo laudabimus totā die, & in nomine

ne

netuo confitebimur in sæculum.

Nunc autem repulisti & confudisti nos &
non egredieris Deus in virtutibus nostris.

Avertisti nos retrorsum post inimicos
nostros, & qui oderunt nos, diripiebant si-
bi.

Dedisti nos tanquam oves escarum, &
in gentibus dispersisti nos.

Vendidisti populum tuum sine pretio,
& non fuit multitudo in commutationi-
bus eorum.

Posuisti nos opprobrium vicinis no-
stris: sublannationem & derisum his, qui
sunt in circuitu nostro.

Posuisti nos in similitudinem gentibus:
commotionem capitum in populis.

Totâ die verecundia mea contra me est:
& confusio faciei meæ cooperuit me.

A voce exprobrantis & obloquentis: à
facie inimici & persequentis.

Hæc omnia venerunt super nos, nec
obliti sumus te: & inique non egimus in
testamento tuo.

Et non recessit retro cor nostrum & de-

clinasti semitas nostras à via tua.

Quoniam humiliasti nos in loco afflictionis: & cooperuit nos umbra mortis.

Si oblii sumus nomen Dei nostri, & si expandimus manus nostras ad Deum alienum.

Nonne Deus requiri et ista : ipse enim novit abscondita cordis.

Quoniam propter te mortificamur tota die, æstimati sumus sicut oves occisionis.

Exurge, quare obdormis Domine ? exurge, & ne repellas in finem.

Quare faciem tuam avertis? oblivisceris inopiæ nostræ & tribulationis nostræ;

Quoniam humilia ta est in pulvere anima nostra: conglutinatus est in terra venter noster.

Exurge Domine, adjuva nos : & redime nos propter nomen tuum.

PSALMUS 44.

ERuctavit cor meum verbum bonum,
dico ego opera mea regi.

LIN.

Lingua mea calamus scribæ , velociter
scribentis

Speciosus forma præ filiis hominum ,
diffusa est gratia in labiis tuis , propterea
benedixit te Deus in æternum.

Accingere gladio tuo super femur tu-
um,potentissime.

Specie tuâ& pulchritudine tuâ,intende,
prospere procede,& regna.

Propter veritatem,& mansuetudinem,
& justitiam,& deducet te mirabiliter dex-
tera tua

Sagittæ tuæ acutæ, populi sub te cadent
in corda inimicorum regis.

Sed est tua Deus in sæculum sæculi virga
directionis,virga regni tui

Dilexisti Justitiam,& odisti iniqüitatem
propterea unxit te Deus , Deus tuus oleo
lætitiae præ consortibus tuis.

Myrrha,& gutta , & casia à vestimentis
tuis , à domibus eburneis, ex quibus dele-
ctaverunt te filii regum in honore tuo.

Astitit regina à dexteris tuis in vestitu
deaurato,circumdata varietate.

Au-

Audi filia, & vide, & inclina aurem tuam:
 & obliuiscere populum tuum, & domum
 patris tui.

Et concupiscet rex decorem tuum :
 quoniam ipse est Dominus Deus tuus, &
 adorabunt eum.

Et filiae Tyri in muneribus : vultum tu-
 um deprecabuntur omnes divites plebis.

Omnis gloria ejus filiae regis ab intus: in
 fimbriis aureis circumamicta varietatibus.

Adducentur regi virgines post eam :
 proximae ejus afferentur tibi.

Afferentur in laetitia & exultatione: ad-
 ducentur in templum regis.

Pro patribus tuis nati sunt tibi filii, con-
 stitues eos principes super omnem terram.

Memores erunt nominis tui, in omni
 generatione & generationem.

Propterea populi confitebuntur tibi
 in eternum, & in saeculum saeculi.

P SALMUS 43.

Deus noster refugium & virtus, adju-
 tor in tribulationibus, quæ invene-
 runt

runt nos nimis.

Propterea non timebimus, dum turbabitur terra: & transferentur montes in cornu maris.

Sonuerunt & turbatæ sunt aquæ eorum
conturbati sunt montes in fortitudine ejus.

Fluminis impetus lætificat civitatem
Dei: sanctificavit tabernaculum suum al-
tissimus.

Deus in meo ejus, non commovebitur:
adjuvabit eam Deus manè diluculo.

Conturbatæ sunt gentes, & inclinata sunt
regna: dedit vocem suam, mota est terra.

Dominus virtutem nobiscum: suscep-
tor noster Deus Jacob.

Venite, & videte opera Domini, quæ
posuit prodigia super terram: auferens bel-
la usque ad finem terræ.

Arcum conteret, & confringet arma
& scuta comburet igni.

Vacate & videte quoniam ego sum De-
us: exaltabor in gentibus, & exaltabor in
terra:

F

Domi-

Dominus virtutum nobiscum: suscep-
tor noster Deus Jacob.

PSALMUS 46.

OMnes gentes plaudite manibus: jubi-
late Deo in voce exultationis.

Quoniam Dominus excelsus, terribi-
lis: Rex magnus super omnem terram.

Subjecit populos nobis: & gentes sub
pedibus nostris.

Elegit nobis hæreditatem suam: speci-
em Jacob, quam dilexit.

Ascendit Deus in jubilo: & Dominus in
voce tubæ.

Psalite Deo nostro, psallite, psallite re-
gi nostro, psallite.

Quoniam Rex omnis terræ Deus: psalli-
te sapienter.

Regnabit Deus super gentes: Deus se-
det super sedem sanctam suam.

Principes populorum congregati sunt
cum Deo Abraham: quoniam dii fortes
terræ vehementer elevati sunt.

MAgnes Dominus & laudabilis nimis: in civitate Dei nostri, in monte sancto ejus.

Fundatur exultatione universæ terræ mons Sion ~~lateralis~~ Aquilonis, civitas regis magni.

Deus in domibuse jesus cognoscetur: cùm suscipiet eam.

Quoniam ecce reges terræ congregati sunt: convenerunt in unum.

Ipsi videntes sic admirati sunt, conturbati sunt, commoti sunt: tremor apprehendit eos.

Ibi dolores ut parturientis: in spiritu vehementi conteres naves Tharsis.

Sicut audivimus, sic vidimus in civitate Domini virtutum, in civitate Dei nostri: Deus fundavit eam in æternum.

Suscepimus Deus misericordiam tuam: in medio templi tui.

Secundum nomen tuum Deus, sic & laus tua in fines terræ: justitia plena est dextera tua.

Lætetur mons Sion, & exultent filiae Iuda: propter judicia tua Domine.

Circumdate Sion, & complectimini eam: narrate in turribus ejus.

Ponite corda vestra in virtute ejus : & distribuite domus ejus, ut enaretis in progenie altera.

Quoniam hic est Deus, Deus noster in æternum, & in sæculum sæculi : ipse reget nos in sæcula.

PSALMUS 48.

AUdite hæc omnes gentes auribus percipite omnes, qui habitatis orbem.

Quique terrigenæ & filii hominum, simul in unum dives & pauper.

Os meum loquetur sapientiam & meditationis cordis mei prudentiam.

Inclinabo in parabolam aurem meam : aperiam in psalterio propositionem meam.

Cur timebo in die mala? iniquitas calcanei mei circumdabit me.

Qui confidunt in virtute sua: & in multitu-

titudine divitiarum suarum gloriantur.

Frater non redimit, redimet homo non dabit Deo placationem suam.

Et pretium redemptionis animæ luæ: & laborabit in æternum, & vivet adhuc in finem.

Non videbit interitum, cùm viderit sapientes morientes: simul insipiens & stultus peribunt.

Et relinquunt alienis divitias suas: & se pulchra eorum domus illorum in æternū.

Tabernacula eorum in progenie & progenie: vocaverunt nomina sua in terris suis.

Et homo cùm in honore esset, non intellexit, comparatus est iumentis insipientibus, & similis factus est illis.

Hæc via illorum scandalum ipsis: & postea in ore suo complacebunt.

Sicut oves in inferno positi sunt: mors depascet eos.

Et dominabuntur eorum justi in matutino: & auxilium eorum veterascet in inferno à gloria eorum.

Veruntamen Deus redimet animam

meam de manu inferni cùm acceperit me.

Ne timueris , cùm dives factus fuerit homo : & cùm multiplicata fuerit gloria domûs ejus.

Quoniam cùm interierit , non sumet omnia : neque descendet cùm eo gloria ejus.

Quia anima ejus in vita ipsius benedicitur confitebitur tibi,cùm benefeceris ei.

Introibit usque in progenies patrum suorum : & usque in æternum non videbit lumen.

Homo cùm in honore esset , non intellexit: comparatus est jumentis insipientibus , & similis factus est illis.

PSALMUS. 49.

Deus decorum Dominus locutus est: & vocavit terram.

A solis ortu usque ad occasum: ex Sion species decoris ejus.

Deus manifestè veniet: Deus noster , & non silebit.

Ignis in conspectu ejus exardescet: & in circuitu ejus tempestas valida.

Ad-

Advocavit cœlum desursum: & terram,
discernere populum suum.

Congregate illi sanctos ejus: qui ordinant
testamentum ejus super sacrificia.

Et annuntiabunt cœli justitiam ejus :
quoniam Deus judex est.

Audi populus meus, & loquar; Israël, &
testificabor tibi : Deus Deus tuus ego
sum.

Non in sacrificiis tuis arguam te : holocausta autem tua in conspectu meo sunt
semper.

Non accipiam de domo tua vitulos :
neque de gregibus tuis hircos.

Quoniam mæ sunt omnes feræ sylva-
rum, jumenta in montibus, & boves.

Cognovi omnia volatilia cœli: & pul-
chritudo agri necum est.

Siesuriero, non dicam tibi: meus es enim
obis terræ, & plenitudo ejus.

Nunquid manducabo carnem aurorum
aut sanguinem hircorum potabo?

Immola Deo sacrificium laudis: & red-
de altissimo vota tua.

Et invoca me in die tribulationis: eruam te, & honorificabis me.

Peccatori autem dixit Deus: quare tu enarras iusticias m^{as}, & assumis testamentum meum per os tuum?

Tu vero odisti disciplinam & projecisti sermones meos retrosum.

Si videbas furem, currebas cum eo: & cum adulteris portionem tuam ponebas.

Ostium abundavit malitiâ : & lingua tua concinnabat dolos.

Sedens adversus fratrem tuum loquebaris, & adversus filium matris tuæ ponebas scandalum: hæc fecisti; & tacui.

Existimasti inique, quod ero tui similis: arguam te, & statuam contra faciem tuam.

Intelligite hæc qui obliviscimini Deum: ne quando rapiat, & non sit qui eripiat.

Sacrificium laudis honorificabit me : & illiciter, quo ostendam illi salutare Dei.

PSALMUS 50.

Miserere mei Deus: secundum magnum

gnam misericordiam tuam.

Et secundum multitudinem miseratio-
num tuarum: dele iniquitatem meam.

Amplius lava me ab iniquitate mea &
a peccato meo munda me.

Quonia n iniquitatem meam ego cog-
nosco: & peccatum meum contra me est
semper.

Tibi soli peccavi , & malum coram te
feci: ut justificeris in sermonibus tuis, & vin-
cas cum judicaris.

Ecce enim in iniquitatibus conceptus
sum & in peccatis concepit me mater mea.

Ecce enim Veritatem dilexisti: incerta &
occulta sapientia tua manifestasti mihi.

Asperges me hyssopo, & mundabor: la-
vabis me, & super nivem dealbabor.

Auditui meo dabis gaudium & latiti-
am: & exultabunt ossa humiliata.

Averte faciem tuam a peccatis meis: &
omnes iniquitates meas dele.

Cor mundum crea in me Deus: & spiri-
tum rectum innova in visceribus meis

Ne projicias me à facie tua: & spiritum
sanctum tuum ne auferas à me.

Redde mihi lætitiam salutaris tui & spi-
ritu principali confirma me.

Docebo iniquos vias tuas: & impii ad te
convertentur.

Libera me de sanguinibus Deus, Deus
salutis meæ: & exultabit lingua mea justi-
tiam tuam.

Domine labia mea aperies, & os meum
annuntiabit laudem tuam.

Quoniam si voluisses sacrificium, dedis-
sem utique: holocaustis non delectaberis.

Sacrificium Deo, spiritus contribulatus
cor contritum & humiliatum Deus non
despicies.

Benignè fac Domine in bona voluntate
tua Sion, ut ædificantur muri Jerusalem.

Tunc acceptabis sacrificium justitiae, ob-
lationes & holocausta, tunc imponent su-
per altare tuum vitulos.

*Gloria Tibi Trinitas etc. Te Deum Patrem ingenitus etc.
Adiutorium nostrum P S A L M U S 51. R. Qui fecit etc.
Reple os meum laude, ut canem gloriam tuam etc.*

Quid gloriaris in malitia, qui potens

es

es in iniquitate?

Totâ die injustitiam cogitavit lingua tua, si cut novacula acuta fecisti dolum.

Dilexisti malitiam super benignitatem, iniquitatem magis, quam loqui æquitatem.

Dilexisti omnia verba præcipitationis, lingua dolosa.

Propterea Deus destruat te in finem, evellet te, & emigrabit te de tabernaculo tuo, & radicem tuam de terra viventium.

Videbunt Justi & timebunt, & super eum ridebunt & dicent, ecce homo qui non posuit Deum adjutorem suum.

Sed speravit in multitudine divitiarum suarum, & prævaluit in vanitate sua.

Ego autem sicut oliva fructifera in domo Dei, speravi in misericordia Dei in æternum, & in saeculum saeculi.

Confitebor tibi in saeculum, quia fecisti, & expectabo nomen tuum, quoniam bonum est in conspectu Sanctorum tuorum.

F 6

PSALMUS 52.

DIxit insipiens in corde suo : non est Deus.

Corrupti sunt & abominabiles facti sunt iniquitatibus non est qui faciat bonum.

Deus de cœlo prospexit super filios hominum ut videat si est intelligens, aut requirens Deum.

Omnes declinaverunt , simul inutiles facti sunt: non est qui faciat bonum, non est usque ad unum.

Nonne scient omnes qui operantur iniquitatem: qui devorant plebem meam, ut cibum panis;

Deum non invocaverunt : illic trepidaverunt timore, ubi non erat timor.

Quoniam Deus dissipavit ossa eorum , qui hominibus placent confusi sunt, quoniam Deus sprevit eos.

Quis dabit ex Sion salutare Israël? cum converterit Deus captivitatem plebis suæ, exultabit Jacob, & lætabitur Israël.

PSA L-

Deus in nomine tuo salvum me fac: &
in virtute tua judica me.

Deus exaudi orationem meam: auribus
percipe verba oris mei.

Quoniam alieni insurrexerunt adversum
me, & fortes quæsierunt animam meam: &
non proposuerunt Deum ante conspec-
tum suum.

Ecce enim Deus adjuvat me: & Domi-
nus susceptor est animæ meæ.

Averte mala inimicis meis: & in verita-
te tua disperde illos.

Voluntariè sacrificabo tibi, & confite-
bor Nomiini Tuo Domine: quoniam bo-
num est.

Quoniam ex omni tribulatione eripu-
isti me: & super inimicos meos despexi o-
culus meus.

Exaudi Deus orationem meam, & ne
despixeris deprecationem meam:
inten-

intende mihi, & exaudi me.

Contristatus sum in exercitatione mea:
& conturbatus sum à voce inimici, & à tri-
bulatione peccatoris.

Quoniam declinaverunt in me iniqui-
tates: & in ira molesti erant mihi.

Cor meum conturbatum est in me: &
formido mortis cecidit super me.

Timor & tremor venerunt super me:
& contexerunt me tenebræ.

Et dixi , quis dabit mihi pennas sicut
columbæ: & volabo, & requiescam;

Ecce elongavi fugiens : & mansi in so-
litudine.

Exspectabam cum , qui salvum me fe-
cit: à pusillanimitate spiritus, & tempestate.

Præcipita Domine, divide linguas co-
rum: quoniam vidi iniquitatem & con-
tradictionem in civitate.

Die ac nocte circumdabit eam super
muros ejus iniquitas: & labor in medio e-
jus, & injustitia.

Et non defecit de plateis ejus: usura &
dolus.

Quo-

Quoniam si inimicus meus maledixis-
set mihi: sustinuisse mutique.

Et si is qui oderat me, super me magna
locutus fuisset: abscondisse me forsan
ab eo.

Tu verò homo unanimis: dux meus &
notus meus.

Qui simul tecum dulces capiebas ci-
bos: in domo Dei ambulavimus cum con-
sensu.

Veniat mors super illos: & descendant
in infernum viventes.

Quoniam nequitiae in habitaculis co-
rum: in medio eorum.

Ego autem ad Deum clamavi: & Do-
minus salvabit me.

Vespere, & mane, & meridie, narrabo
& annuntiabo: & exaudiet vocem meam.

Redimet in pace animam meam ab his,
qui appropinquant mihi: quoniam inter
multos erant tecum.

Exaudiet Deus, & humiliabit illos: qui
est ante saecula.

Non enim est illis commutatio, & non

timuerunt Deum: extendit manum suam
in retribuendo.

Contaminaverunt testamentum ejus ,
divisi sunt ab ira vultūs ejus : & appropin-
quavit cor illius.

Molliti sunt sermones ejus super oleum
& ipsi sunt jacula.

Jacta super Dominum curam tuam, &
ipse te enutriet: non dabit in æternum flu-
ctuationem justo.

Tu verò Deus deduces eos : in puteum
interitūs.

Virisanguinum & dolosī, non dimidia-
bunt dies suos : ego autem sperabo in te
Domine.

PSALMUS 55.

Miserere mei Deus, quoniam con-
culcavit me homo: totā die impu-
gnans tribulavit me.

Conculcaverunt me inimici mei totā
die: Quoniam multi bellantes adversūm
me.

Ab altitudine dici timebo: ego verò in
te sperabo. In

PSALMORUM.

97

In Deo laudabo sermones meos, in Deo
speravi non timebo quid faciat mihi caro.

Totâ die verba mea execrabantur. ad-
versum me omnes cogitationes eorum in
malum.

Inhabitabunt & abscondent : ipsi cal-
caneum meum observabunt.

Sicut sustinuerunt animam meam, pro
nihilo salvos facies illos: in ira populos con-
fringes.

Deus, vitam meam annunciavi tibi :
posuisti lachrymas meas in conspectu
tuo.

Sicut & in promissione tua: tunc con-
vertentur inimici mei retrorsum.

In qua cunque die invocavero te : ecce
cognovi quoniam Deus meus es.

In Deo laudabo verbum , in Domino
lausdabo sermonem: in Deo speravi , non
timebo quid faciat mihi homo.

In me sunt Deus vota tua: quæ reddam
laudationes tibi.

Quoniam eripuisti animam meam de
morte & pedes meos de lapili: ut place-

G

am

am coram Deo in lumine viventium.

PSALMUS. 56.

Miserere mei Deus, miserere mei: quoniam in te confidit anima mea.

Et in umbra alarum tuarum sperabo: donec transeat iniquitas.

Clamabo ad Deum altissimum: Deum qui beneficit mihi.

Misit de cœlo, & liberavit me: dedit in opprobrium conculcantes me.

Misit Deus misericordiam suam, & veritatem suam: & eripuit animam meam de medio catulorum leonum, dormivi turbatus

Filiis hominum dentes eorum arma & sagittæ: & linguae eorum gladius acutus.

Exaltare super cœlos Deus: & in omnem terram gloria tua.

Laqueum paraverunt pedibus meis: & incurvaverunt animam meam.

Foderunt ante faciem meam foveam: & inciderunt in eam:

Paratum cor meum Deus, paratum
cor

Cor meum: cantabo & psalmum dicam

Exurge gloria mea, exurge psalterium
& cithara: exurgam diluculo.

Confitebor tibi in populis Domine: &
psalmum dicam tibi in gentibus.

Quoniam magnificata est usque ad cœlos
misericordia tua: & usque ad nubes ve-
ritas tua.

Exaltare super cœlos Deus: & super om-
nem terram gloria tua.

PSALMUS 57.

SI verè utique justitiam loquimini: recte
judicate filii hominum.

Etenim in corde iniquitates operamini
in terra injusticias manus vestræ concin-
nant.

Alienati sunt peccatores à vulva, erra-
verunt ab utero: locuti sunt falsa.

Furor illis secundùm similitudinem
serpentis sicut aspidis surdæ, & obdurantis
autæ suas.

Quæ non exaudiet vocem incantanti-
um: & venefici incantantis sapienter.

Deus conteret dentes eorum in ore ipsorum: molas leonum confringet Dominus.

Ad nihilum devenient, tanquam aqua decurrentis, intendit arcum suum, donec infirmantur.

Sicut cera quæ fluit, auferentur: supercedidit ignis, & non viderunt solem.

Priusquam intelligerent spinæ vestræ rhamnum: sicut viventes, sic in ira absorbet eos.

Lætabitur justus, cùm viderit vindictam manus suas lavabit in sanguine peccatoris.

Et dicet homo, si utique est fructus justo: utique est Deus judicans eos in terra.

PSALMUS 58.

Eripe me de inimicis meis Deus meus, & ab insurgentibus in me libera me.

Eripe de operantibus iniquitatem: & de viris sanguinum salva me.

Quia ecce ceperunt animam meam irruerunt in me fortes.

Neque iniquitas mea, neque peccatum me-

meum Domine. sínè iniquitate cucur ri &
direxi.

Exurge in occursum meum, & vide: &
tu Domine Deus virtutum, Deus Israël.

Intende ad visitandas omnes gentes
non miserearis omnibus, qui operantur i-
niquitatem.

Convertentur ad vesperam, & famem
patientur ut canes, & circuibunt civitatem.

Ecce loquentur in ore suo, & gladius in
labiis eorum, quoniam quis audivit?

Et tu Domine deridebis eos, ad nihilum
deduces omnes gentes.

Fortitudinem meam ad te custodiam,
quia Deus susceptor meus es, Deus me-
us, misericordia ejus præveniet me.

Deus ostendet mihi super inimicos me-
os, ne occidas eos, ne quando obliscantur
populi mei.

Disperge illos in virtute tua, & depone
eos protector meus Domine.

Delictum oris eorum, sermonem labi-
orum ipsorum, & comprehendantur in

superbia sua.

Et de execratione & mendacio annuntiabuntur in consummatione: in ira consummationis, & non erunt.

Et scient quia Deus dominabitur Jacob & finium terræ.

Convertentur ad vesperam, & famem patientur ut eanet & circuibunt civitatem.

Ipsi dispergentur ad manducandum: si verò non fuerint saturati, & murmurabunt.

Ego autem cantabo fortitudinem tuam: & exaltabo manè misericordiam tuam.

Quia factus es susceptor meus, & refugium meum in die tribulationis meæ.

Adjutor meus tibi psallam, quia Deus susceptor meus es: Deus meus misericordia tua.

PSAELMUS 59.

Deus repulisti nos, & destruxisti nos:
Irratus es, & misertus es nobis.
Commovisti terram, & conturbasti eam:

PSALMORUM.

103

am: sana contritione sejus, quia commota
est.

Ostendisti populo tuo dura: potâsti nos
vino compunctionis.

Dedisti metuentibus te significationem
ut fugiant à facie arcus.

Ut liberentur dilecti tui: salvum fac
dexterâ tuâ, & exaudi me.

Deus locutus est in sancto suo latabor,
& partibor Sichimam , & convallem ta-
bernaculorum metibor.

Meus est Galaad & meus est Manasses ,
& Ephraim fortitudo capitis mei.

Juda rex meus, Moab olla spei meæ.

In Idumæam extendam calceamentum
meum, mihi alienigenæ subditi sunt.

Quis deducet me in civitatem muni-
tam, quis deducet me usque in Idumæam?

Nonne tu Deus qui repulisti nos : &
non regredieris Deus in virtutibus nostris,

Da nobis auxilium de tribulatione ,
quia vana salus hominis.

In Deo faciemus virtutem , & ipse ad
nihilum deducet tribulantes nos.

C 4

PSAL-

L I B E R
P S A L M U S 60.

Exaudi Deus deprecationem meam,
intende orationem meam.

Asfinibus terrae ad te clamavi, dum an-
xiaretur cor meum, in petra exaltasti me.

Deduxisti me, quia factus es spes mea
turris fortitudinis a facie inimici.

Inhabitabo in tabernaculo tuo in sœcu-
la, protegar in velamento alarum tuarum.

Quoniam tu Deus meus exaudisti o-
rationem meam, dedisti hereditatem ti-
mentibus nomen tuum.

Dies super dies regis adjicies, annos ejus
usque in diem generationis & genera-
tions.

Permanet in æternum in conspectu
Dei, misericordiam & veritatem ejus, qui
requiret?

Sic psalmum dicam nomini tuo in sa-
culum sœculi, ut reddam vota mea de dic-

in diem. Gloria tibi Trinitate et Deum patrem
in adjutorium et Dñe ad adjuvandum eti.

Reple os meum etc.

Nonne Deo subiecta erit anima mea?
ab ipso enim salutare meum.

Nam

Nam & ipse Deus meus , & salutaris
meus, susceptor meus, non movebor am-
plius.

Quousque irruitis in hominem? inter-
ficitis universi vos tanquam parieti incli-
nato, & maceriarum depulsa?

Veruntamen pretium meum cogita-
verunt repellere, cucurri in siti ore suo be-
nedicebant, & corde suo maledicebant.

Veruntamen Deo subiecta est anima
mea: quoniam ab ipso patientia mea.

Quia ipse Deus meus, & salvator meus :
adjutor meus non emigrabo.

In Deo salutare meum, & gloria mea :
Deus auxilii mei, & spes mea in Deo est.

Sperate in eo omnis congregatio popu-
li, effundite coram illo corda vestra, Deus
adjutor noster in æternum.

Veruntamen vani filii hominum, men-
daces filii hominum in stateris: ut decipi-
ant ipsi de vanitate in id ipsum.

Nolite sperare in iniuitate, & rapinas
nolite concupiscere: divitiae si affluant, no-
lite cor apponere.

Semel locutus est Deus, duo hæc audi-
vi, quia potestas Dei est, & tibi Domine
misericordia : quia tu redes unicuique
juxta opera sua.

PSALMUS. 61.

Deus Deus meus : ad te de luce vigilo.
Sitivit in te animam mea : quam
multipliciter tibi caro mea,

In terra deserta, & invia, & in aquosa :
sic in sancto apparuitibi, ut viderem virtu-
tem tuam & gloriam tuam.

Quoniam melior est misericordia tua
super vitas, labia mea laudabunt te.

Sic benedicam te in vita mea, & in no-
mine tuo levabo manus meas.

Sicut adipe & pinguedine repleatur a-
nima mea, & labiis exultationis laudabit
os meum.

Si memor fui tui super stratum meum
in matutinis meditabor in te : quia fuisti
adjutor meus.

Et in velamento alarum tuarum exul-
tabo, adhæsit anima mea post te: mesusce-
pit dextera tua.

Ipsi

Ipsi verò in vanum quæsierunt animam
meam introibunt in inferiora terræ : tra-
dentur in manus gladii, partes vulpium e-
runt.

Rex verò lætabitur in Deo, laudabun-
tur omnes, qui jurant in eo : quia obstru-
ctum est os loquentium iniqua.

PSALMUS 63.

Exaudi Deus orationem meam cum
deprecor : à timore inimici eripe ani-
mam meam.

Protexisti me à conventu malignanti-
um : à multitudine operantium iniquita-
tem.

Quia exacuerunt , ut gladium linguas
suas intenderunt arcum , rem amaram , ut
sagittent in occultis immaculatum.

Subitò sagittabunt eum , & non time-
bunt , firmaverunt sibi sermonem nequam.

Narraverunt , ut absconderent laqueos ,
dixerunt , quis videbit eos ?

Scrutati sunt iniquitates , defecerunt
scrutantes scrutinio.

Accedet homo ad cor altum, & exal-
bitur Deus.

Sagittæ parvolorum factæ sunt plagæ
eorum, & infirmatæ sunt contra eos lin-
guæ eorum.

Conturbati sunt omnes , qui videbant
eos: & timuit omnishomo.

Et annuntiaverunt opera Dei & facta
ejus intellexerunt.

Lætabitur justus in Domino, & sperabit
in eo: & laudabuntur omnes recti corde.

PSALMUS 64.

TE decet hymnus Deus in Sion . & tibi
reddetur yotum in Hierusalem.

Exaudi orationem meam : ad te omnis
caro veniet.

Verba iniquorum prævaluerunt super
nos, & impietibus nostris tu propitiabe-
ris.

Beatus quem elegisti & assumpsisti, in-
habitabit in atriis tuis,

Replebimur in bonis domūs tuæ: san-
ctum est templum tuum, mirabile in æqui-
tate.

Ex-

Exaudi nos Deus salutaris noster , spes
omnium finium terræ, & in mari longè.

Præparans montes in virtute tua , ac-
cinctus potentia , qui conturbas profun-
dum maris, sonum fluctuum ejus.

Turbabuntur gentes , & timebunt qui
habitant terminos à signis tuis : exitus ma-
tutini & vespere delectabis.

Visitâsti terram , & inebrâsti eam, mul-
tiplicâsti locupletare eam

Flumen Dei repletum est a quis parasti
cibum illorum, quoniam ita est præparatio
eius.

Rivos ejus inebria , multiplica genimi-
na ejus : in stillicidiis ejus lætabitur germi-
nans.

Benedices coronæ anni benignitatis
tuæ: & campi tui replebuntur ubertate.

Pinguescent speciosa deserti: & exulta-
tione colles accingentur.

Induti sunt arietes ovium , & valles a-
bundabunt frumento: clamabunt, etenim
hymnum dicent.

LIBER
PSALMUS 65.

Tubilate Deo omnis terra, psalmum dicite nomini ejus: date gloriam laudius.

Dicite Deo, quam terribilia sunt opera tua Domine: in multitudine virtutis tue mentientur tibi inimici tui.

Omnis terra adoret te, & psallat tibi: psalmum dicat nomini tuo.

Venite, & videte opera Dei: terribilis in consiliis super filios hominum.

Qui convertit mare in aridam, in flumine pertransibunt pede, ibi lætabimur in ipso.

Qui dominatur in virtute sua in æternum, oculi ejus super gentes respiciunt: qui exasperant, non exalentur in semetipſis.

Benedicte gentes Deum nostrum, & auditam facit vocem laudis ejus.

Qui posuit animam meam ad vitam, & non dedit in commotionem pedes meos.

Quoniam probasti nos Deus: igne nos examinasti, sicut examinatur argentum.

Induxisti nos in laqueum, posuisti tribulati-

PSALMORUM.

111

lationes in dorso nostro: imposuisti homines super capita nostra.

Transivimus per ignem & aquam, & eduxisti nos in refrigerium.

Introibo in domum tuam in holocaustis: reddam tibi vota mea, quæ distinxerunt labia mea.

Et locutum est os meum, in tribulacione mea.

Holocausta medullata offeram tibi cum incenso arietum: offeram tibi boves cum hircis.

Venite, audite, & narrabo omnes qui timetis Deum: quanta fecit animæ meæ.

Ad ipsum ore meo clamavi: & exultavi sub lingua mea.

Iniquitatem si aspexi in corde meo: non exaudiet Dominus.

Propterea exaudivit Deus: & attendit vocis deprecationis meæ.

Benedictus Deus qui non amovit orationem meam: & misericordiam suam a me.

PSAL-

PSALMUS 66.

Deus misereatur nostri, & benedicat nobis: illuminet vultum suum super nos, & misereatur nostri.

Ut cognoscamus in terra viam tuam: in omnibus gentibus salutare tuum.

Confiteantur tibi populi Deus: confiteantur tibi populi omnes,

Lætentur & exultent gentes: quoniam judicas populos in æquitate, & gentes in terra dirigis.

Confiteantur tibi populi Deus, confiteantur tibi populi omnes: terra dedit frumentum suum.

Benedicat nos Deus, Deus noster, benedicat nos Deus: & metuant eum omnes fines terræ.

PSALMUS 667

Exurgat Deus, & dissipentur inimici eius: & fugiant qui oderunt cum a facie ejus.

Sicut deficit fumus, deficiant: sicut fluit

ce-

PSALMORUM.

113

cera à facie ignis; sic pereant peccatores à
facie Dei.

Et justi epulentur, & exultent in conspe-
ctu Dei: & delectentur in lætitia.

Cantate Deo, plalum dicite nomini
ejus: iter facite ei, qui ascendit super occa-
sum, Dominus nomen illi.

Exultate in conspectu ejus: turbabun-
tur à facie ejus, patris orphanorum, & judi-
cis viduarum.

Deus in loco sancto suo: Deus qui in-
habitare facit unius moris in domo.

Qui educit vincetos in fortitudine: si-
militer eos, qui exasperant, qui habitant
in sepulchris.

Deus cùm egredereris in conspectu po-
puli tui: cùm pertransires in deserto.

Terra mota est, etenim cœli distillave-
runt à facie Dei Sinai: à facie Dei Israël.

Pluviam voluntariam segregabis De-
us hæreditati tuæ: & infirmata est, tu verò
perfecisti eam.

Animalia tua habitabunt in ea: parasti in
dulcedine tua pauperi Deus.

H

Do-

Dominus dabit verbum evangelizantibus: virtute multâ.

Rex virtutum dilecti dilecti, & speciei domûs dividere spolia.

Si dormiatis inter medios clerros, penæ columbae deargentatae: & posteriora dorsi ejus in pallore auri.

Dum discernit cœlestis reges super eam, nive dealbabuntur in Selmon: mons Dei, mons pinguis.

Mons coagulatus, mons pinguis ut quid suspicamini montes coagulatos;

Mons in quo beneplacitum est Deo habitare in eo etenim Dominus habitabit in finem.

Currus Dei decem millibus multiplex, millia lætantium: Dominus in eis in Sina, in sancto.

Ascendisti in altum, cepisti captivitatem: accepisti dona in hominibus. •

Etenim non credentes: inhabitare Dominum Deum.

Benedictus Dominus die quotidie: prosperum iter faciet nobis, Deus salutarium

um

um nostrorum.

Deus noster Deus salvos faciendi : &
Domini Domini exitus mortis.

Veruntamen Deus confringet capita
inimicorum suorum: verticem capilli per-
ambulantium in delictis suis.

Dixit Dominus, ex Basan convertam:
convertam in profundum maris.

Ut intingatur pes tuus in sanguine; lin-
gua canum tuorum ex inimicis ab ipso.

Viderunt ingressus tuos Deus ingressus
Dei mei, regis mei, qui est in sancto.

Prævenerunt principes conjuncti psal-
lentibus: in medio juvencularum tympa-
nistriarum.

In Ecclesiis benedicite Deo Domino:
defontibus Israel.

Ibi Benjamin adolescentulus: in mentis
excessu.

Principes Juda, duces eorum: principes
Zabulon, principes Nephthali.

Manda, Deus, virtuti tuae: confirma hoc
Deus, quod operatus es in nobis.

A templo tuo in Hierusalem: tibi offe-

H. 2

rent

rent reges munera,

Increpa feras arundenis , congregatio
raurorum in vaccis populorum, ut exclu-
dant eos, qui probati sunt argento.

Dissipagentes quæ bella volunt, veni-
ent legati ex Ægypto: Æthiopia præveni-
et manus ejus Deo.

Regna terræ cantate Deo: psallite Do-
mino.

Psallite Deo, qui ascendit super cœlum
cœli: ad orientem.

Ecce dabit voci suæ vocem virtutis: da-
te gloriam Deo super Israël: magnificentia
ejus, & virtus ejus in nubibus.

Mirabilis Deus in Sanctis suis, Deus I-
sraël ipse dabit virtutem & fortitudinem
plebi suæ benedictus Deus.

P SALMUS 68.

SAlvum me fac Deus: quoniam intrá-
verunt aquæ usque ad animam me-
am.

Infixus sum in limo profundit: & non
est substantia.

Veni

PSALMORUM.

117

Veni in altitudinem maris: & tempestas
demersit me.

Laboravi clamans ; raucae factae sunt
fauces meæ: defecerunt oculi mei ; dum
spero in Deum meum.

Multiplicati sunt super capillos capitis
mei: qui oderunt me gratis.

Confortati sunt, qui persecuti sunt me
inimici mei injustè quæ non rapui , tunc
exoluiebam.

Deus tu scis insipientiam meam: & de-
licta mea à te non sunt abscondita.

Non erubescant in me, qui expectant te
Domine: Domine virtutum.

Non confundantur super me: qui quæ-
runt te, Deus Israël.

Quoniam propter te sustinui oppro-
brium: operuit confusio faciem meam.

Extraneus factus sum fratribus meis: &
peregrinus filii matris meæ.

Quoniam zelus domus tuæ comedit
me : & opprobria exprobrantium tibi ce-
ciderunt super me.

Et operui in jejunio animam meam : &

H 3

fa-

factum est in opprobrium mihi.

Et posui vestimentum meum cilicium:
& factus sum illis in parabolam.

Adversum me loquebantur , qui sedebant in porta : & in me psaillebant qui bibebant vinum.

Ego verò orationem meam ad te Domine: tempus beneplaciti Deus.

In multitudine misericordia tua exaudi me: in Veritate salutis tuae.

Eripe me de luto , ut non infigar: libera me ab his qui oderunt me, & de profundis aquarum.

Non me demergat tempestas aquæ , neque absorbeat me profundum: neque urgeat super me puteus os suum.

Exaudi me Domine , quoniam benigna est misericordia tua secundum multitudinem miserationum tuarum respice in me.

Et ne avertas faciem tuam à puerō tuo: quoniam tribulor, velociter exaudi me.

Intende animæ meæ, & libera eam: propter inimicos meos eripe me.

Tu scis improprium meum, & confusione

sionem meam , & reverentiam meam.

In conspectu tuo sunt omnes , qui tribulant me: improprium expectavit cor meum, & miseriam.

Et sustinui qui simul contristaretur , & non fuit & qui consolareretur , & non inveni.

Et dederunt in escam meam fel & insiti mea potaverunt me aceto.

Fiat mensa eorum coram ipsis in laqueum , & in retributiones , & in scandalum :

Obscurentur oculi eorum ne videant , & dorsum eorum semper incurva.

Effunde super eos iram tuam , & furor tuæ comprehendat eos.

Fiat habitatio eorum deserta , & in tabernaculis eorum non sit qui inhabitet

Quoniam quem tu percussisti , persecuti sunt: & super dolorem vulnerum meorum addiderunt.

Appone iniquitatem super iniquitatem eorum : & non intrent in justitiam tuam.

Deleantur de libro viventium : & cum justis non scribantur.

Ego sum pauper & dolens salus tua Deus suscepit me.

Laudabo nomen Dei cum cantico & magnificabo eum in laude.

Et placebit Deo super vitulum novelum, cornua producentem & ungulas.

Videant pauperes & latentur: quærite Deum, & vivet anima vestra.

Quoniam exaudivit pauperes Dominus, & vincitos suos non despexit.

Laudent illum cœli & terra: mare, & omnia reptilia in eis.

Quoniam Deus salvam faciet Sion: & ædificabuntur civitates Iudeæ.

Et inhabitabunt ibi: & hereditate acquirent eam.

Et semen servorum ejus possidebit eam & qui diligunt nomen ejus habitabunt in ea.

PSALMUS 69.

Deus in adjutorium meum intende. Domine ad adjuvandum me festina. Confundantur, & revereantur: qui quærunt

quærunt animam meam.

Avertantur retrorsum & erubescant :
qui volunt mihi mala

Avertantur statim erubescentes : qui
dicunt mihi, Euge, euge.

Exultent & lætentur in te omnes , qui
quærunt te : & dicant semper , magnifice-
tur Dominus , qui diligunt salutare tuum.

Ego vero egenus , & pauper sum . Deus
adjuva me.

Adjutor meus & liberator meus es tu :
Domine ne moreris.

PSALMUS 70.

IN te Domine speravi , non confundar
in æternum in iustitia tua libera me , &
eripe me.

Inclina ad me autem tuam : & salva me.
Esto mihi in Deum protectorem , & in
locum munitum ut salvum me facias.

Quoniam firmamentum meum : & re-
fugium meum es tu.

Deus meus eripe me de manu peccato-
ris : & de manu contra legem agentis , & i-

niqui.

Quoniam tu es patientia mea Domine: Domine spes mea à juventute mea.

In te confirmatus sum ex utero : de ventre matris meæ tui es protector meus.

In te cantatio mea semper : tanquam prodigium factus sum multis, & tu adjutor fortis.

Repleatur os meum laude , ut cantem gloriam tuam: totâ die magnitudinem tuam.

Ne projicias me in tempore senectutis cùm defecerit virtus mea , ne derelinquas me.

Quia dixerunt inimici mei mihi: & qui custodie bant animam meam , consilium fecerunt in unum.

Dicentes , Deus dereliquit eum, perse quimini, & comprehendite eum quia non est qui eripiat.

Deus ne elongeris à me : Deus meus in auxilium meum respice.

Confundantur & deficiant detrahentes animæ meæ operiantur confusione &

pu-

PSALMORUM.

113

pudore, qui quærunt mala mihi.

Ego autem semper sperabo: & adjiciam super omnem laudem tuam.

Os meum annuntiabit justitiam tuam: totâ die salutare tuum.

Quoniam non cognovi literaturam, introibo in potentias Domini: Dominus memorabor justitiae tuæ solius.

Deus docuisti me à juventute mea, & usque nunc pronuntiabo mirabilia tua.

Et usque in senectam & senium: Deus ne derelinquas me.

Donec annuntiem brachium tuum generationi omni quæ ventura est.

Potentiam tuam & justitiam tuam Deus, usque in altissima, quæ fecisti magnalia, Deus quis similis tibi?

Quantas ostendisti mihi tribulationes multas, & malas, & conversus vivificasti me, & de abyssis terræ iterum reduxisti me.

Multiplicasti magnificentiam tuam, & conversus consolatus es me.

Nam & ego confitebor tibi in vasis psalmi Veritatem tuam Deus proallum

H 6

tibi

tibi in cithara, sanctus Israel.

Exultabunt labia mea cum cantavero
tibi: & anima mea, quam redemisti.

Sed & lingua mea totâ die, meditabitur
justitiam tuam: cùm confusi & reveriti
fuerint, qui querunt mala mihi.

Gloria Tibi Trinitas etc Te Deum Patrem etc Confusio
Adiutorium nostrum PSALMUS 71. & Qui fecit etc
Reple os meum laute tua ut cantem Tibi gloriam etc

Deus judicium tuum Regi da: & justi-
tiam tuam filio Regis.

Judicare populum tuum in justitia: &
pauperes tuos in judicio.

Suscipient montes pacem populo: &
colles justitiam.

Judicabit pauperes populi, & salvos fa-
ciet filios pauperum: & humiliabit calum-
niatorem.

Er permanebit cum Sole, & ante Lunam:
in generationem & generationem.

Descendet sicut pluvia in vellus? & si-
cuit stillicidia stillantia super terram.

Orietur in diebus ejus justitia, & abun-
dantia pacis donec auferatur Luna.

Et dominabitur à mari usque ad mare:

&

& à flumine usque ad terminos orbis ter-
rarum.

Coram illo procident Æthiopes : & i-
nimici ejus terram lingent.

Reges Tharsis & Insulæ munera offerenti
reges Arabum & Saba dona adducent.

Et adorabunt eum omnes reges terræ ;
omnes gentes servient ei.

Quia liberabit pauperem à potente : &
pauperem cui non erat adjutor.

Parcet pauperi & inopi : & animas pau-
perum salvas faciet.

Ex usuri & iniquitate redimet animas
eorum : & honorabile nomen eorum co-
ram illo.

Et vivet, & dabitur ei de auro Arabiæ, &
adorabunt de ipso semper : totâ die bene-
dicent ei.

Et erit firmamentum in terra in summis
montium , superextolletur super Liba-
num fructus ejus , & florebunt de civitate,
sicut fœnum terræ.

Sit nomen ejus benedictum in sœcula ,
ante solem permanet nomen ejus.

Er.

Et benedicentur in ipso omnes tribus
terræ, omnes gentes magnificabunt eum.

Benedictus Dominus Deus Israël: qui
facit mirabilia solus.

Et benedictum nomen majestatis ejus
in æternum: & replebitur majestate ejus
omnis terra ; Fiat, fiat.

P SALMUS 72.

Quam bonus Israël Deus : his, qui recte
sunt corde !

Mei autem pene moti sunt pedes, pene
effusi sunt gressus mei.

Quia zelavi super iniquos : pacem peccatorum
videns.

Quia non est respectus morti eorum &
firmamentum in plaga eorum.

In labore hominum non sunt : & cum
hominibus non flagellabuntur.

Ideo tenuit eos superbia : operti sunt
iniquitate , & impietate suâ.

Prodiit quasi ex adipe iniquitas eorum:
transierunt in affectum cordis.

Cogita-

Cogitaverunt, & locuti sunt nequitiam:
iniquitatem in excelso locuti sunt.

Posuerunt in cœlum os suum : & lingua
corum transivit in terra.

Ideo convertetur populus meus hic : &
dies pleni invenientur in eis.

Et dixerunt, quomodo scis Deus, & si
est scientia in celo?

Ecce ipsi peccatores, & abundantes in
sæculo obtinuerunt divitias.

Et dixi, ergo sine causa justificavi cor
meū & lavi inter innocentēs manus meas.

Et fui flagellatus totâ die , & castigatio
mea in matutinis.

Si dicebam, Narbo sic , ecce natio-
nem filiorum tuorum reprobavi.

Existimabam ut cognoscerem hoc la-
bor est ante me.

Donec intrem in sanctuarium Dei , &
intelligam in novissimis eorum.

Veruntamen propter dolos posuisti e-
is dejecisti eos dum allevarentur.

Quomodo facti sunt in desolationem,
subito defecerunt : perierunt pro-
pter

pter iniquitatem suam.

Velut somnium surgentium , Domine
in civitate tua imaginem ipsorum ad nihi-
lum rediges.

Quia inflamatum est cor meum &
renes mei commutati sunt, & ego ad ni-
hilum redactus sum, & nescivi.

Ut jumentum factus sum apud te: & e-
go semper tecum.

Tenuisti manum dexteram meam , &
in Voluntate tua deduxisti me: & cùm glo-
ria suscepisti me.

Quid enim mihi est in cælo: & à te quid
voluit super terram?

Defecit caro mea & cor meum : Deus
cordis mei , & pars mea Deus in æternum.

Quia ecce , qui elongant se à te , peri-
bunt : perdidisti omnes , qui fornicantur
abste.

Mihi autem adhætere Deo bonum
est: ponere in Domino Deo spem me-
am.

Ut annuntiem omnes prædicati ones
tuas: in portis filiæ Sion.

PSALMUS 73.

UT quid Deus repulisti in finem: iratus
est furor tuus super oves pascuae tuæ.

Memor esto congregationis tuæ: quam
possedisti ab initio.

Redemisti virgam hæreditatis tuæ :
mons Sion, in quo habitasti in eo.

Leva manus tuas in superbias eorum in
finem: quanta malignatus est inimicus in
sancto?

Et gloriati sunt qui oderunt te: in me-
dio solemnitatis tuæ.

Posuerunt signa sua, signa, & non co-
gnoverunt, sicut in exitu super summum,

Quasi in sylva lignorum securibus ex-
ciderunt januas ejus in idipsum in lecuri &
ascia dejecerunt eam.

Incenderunt igni sanctuarium tuum :
in terra polluerunt tabernaculum nomi-
nis tui.

Dixerunt in corde suo cognatio eo-
rum simul: Quiescere faciamus omnes
dies festos Dei à terra.

Signa nostra non vidimus , jam non est propheta : & nos non cognoscet amplius.

Usquequo Deus improperabit inimicus : irritat adversarius nomen tuum in finem.

Ut quid avertis manum tuam & dexteram tuam : de medio sinu tuo in finem.

Deus autem rex noster ante saecula : operatus est salutem in medio terræ.

Tu confirmasti in virtute tua mare : contribulasti capita draconum in aquis.

Tu confregisti capita draconis : dedisti eum escam populis Aethiopum.

Tu dirupisti fontes , & torrentes : tu siccasti fluvios Ethan.

Tuus est dies , & tua est nox tu fabricatus es auroram , & solem.

Tu fecisti omnes terminos terræ : aestatem & ver tu plasmasti ea.

Memor esto hujus, inimicus impooperavit Domino : & populus insipiens incitavit nomen tuum.

Ne tradas bestiis animas confitentes tibi : & animas pauperum tuorum ne oblivis-

PSALMORUM.

131

liviscaris in finem.

Respice in testamentum tuum : quia repleti sunt , qui obsecrati sunt , terræ dominibus iniquitatum.

Ne avertatur humilis factus confusus : pauper & inops laudabunt nomen tuum.

Exurge Deus, judica causam tuam , memor esto impropiorum tuorum: eorum, quæ ab insipiente sunt totâ die.

Ne obliviscaris voces inimicorum tuorum: superbia eorum, quite oderunt , ascendit semper.

P SALMUS 74.

Confitebimur tibi Deus : confitebimur: & invocabimus nomen tuum.

Narrabimus mirabilia tua: cùm accepero tempus: ego justitias judicabo.

Liquefacta est terra, & omnes qui habitant in ea: ego confirmavi columnas ejus.

Dixi iniquis, nolite iniquè agere: & delinquentibus, nolite exaltare cornu.

12

No-

Nolite extollere in altum cornu vestrum nolite loqui adversus Deum iniqitatem.

Quia neque ab Oriente , neque ab Occidente , neque à desertis montibus: quoniam Deus judex est.

Hunc humiliat , & hunc exaltat : quia calix in manu Domini , vini meri plenus mixto

Et inclinavit ex hoc in hoc; veruntamen fæx ejus non est exinanita : bibent omnes peccatores terræ.

Ego autem annuntiabo in seculum , cantabo Deo Jacob.

Et omnia cornua peccatorum confringam: & exaltabuntur cornua justi.

PSALMUS 75.

Notus in Iudea Deus: in Israël magnum nomen ejus.

Et factus est in pace locus ejus: & habitatio ejus in ion.

Ibi confregit potentias arcuum scutum, gladium, & bellum.

Illumi-

Illuminans tu mirabiliter à montibus
æternis : turbati sunt omnes insipientes
corde.

Dormierunt somnum suum: & nihil in-
venerunt omnes viri divitiarum in mani-
bus suis.

Ab increpatione tua Deus Jacob,dor-
mitaverunt qui ascenderunt equos.

Tu terribilis , & quis resistet tibi ? ex
tunc ira tua.

De cœlo auditum fecisti judicium:ter-
ra tremuit & quievit.

Cùm exurgeret in judicium Deus: ut
salvos faceret omnes mansuetos terræ.

Quoniam cogitatio hominis confitebi-
tur tibi & reliquæ cogitationis diem fe-
stum agent tibi.

Vovete , & reddite Domino Deo ve-
stro:omines qui in circuitu ejus affertis mu-
nera.

Terribili & ei qui aufert spiritum prin-
cipum:terribili apud reges terræ.

PSALMUS. 76.

Voce meâ ad Dominum clamavi vocem mea ad Deum, & intendit mihi.

In die tribulationis meæ Deum exquisivi, manibus meis nocte contra eum ; & non sum deceptus.

Renuit consolari anima mea : memor fui Dei , & delectatus sum , & exercitatus sum, & defecit spiritus meus.

Anticipaverunt vigilias oculi mei, turbatus sum, & non sum locutus.

Cogitavi dies antiquos : & annos æternos in mente habui.

Et meditatus sum nocte cum corde meo & exercitabor , & scopebam spiritum meum.

Nunquid in æternum projicit Deus : aut non apponet, ut complacitior sit adhuc ?

Aut in finem misericordiam suam absconde: à generatione in generationem :

Aut oblitiscetur misericordia Dei : aut continebit in ira sua misericordias suas ?

Et

Et dixi, nunc cœpi : hæc mutatio dexteræ Excelsi,

Memor fui operum Domini quia memor ero ab initio mirabilium tuorum.

Et meditabor in omnibus operibus tuis: & in adinventionibus tuis exercebor.

Deus in sancto via tua, quis Deus magnus sicut Deus noster? tu es Deus qui facis mirabilia.

Notam fecisti in populis virtutem tuam: redemisti in brachio tuo populum tuum, filios Jacob & Joseph.

Viderunt te aquæ Deus, viderunt te aquæ & timuerunt, & turbatæ sunt abyssi.

Multitudo sonitus aquarum : vocem dederunt nubes.

Etenim sagittæ tuæ transiunt vox tonitruit in rota.

Illuxerunt coruscationes tuæ orbi terræ, commota est, & contremuit terra.

In mari via tua, & semita tua in aquis multis: & vestigia tua non cognoscuntur.

Deduxisti sicut oves populum tuum: in
manu Moysi & Aaron.

PSALMUS 77.

Attendite popule meus legem meam,
Inclinate aurem vestram in verba oris mei.

Aperiā in parabolis os meum: loquar propositiones ab initio.

Quanta audivimus & cognovimus ea:
& patres nostri narraverunt nobis.

Non sunt occultata à filiis eorum: in generatione altera.

Narrantes laudes Domini, & virtutes ejus: & mirabilia ejus, quæ fecit.

Et suscitavit testimonium in Jacob: & legem poluit in Israël.

Quanta mandavit patribus nostris nota facere ea filiis suis: ut cognoscat generatio altera.

Fili qui nascentur, & exurgent: & narrabunt filiis suis.

Ut ponant in Dco speni suam, & non obliviscantur operum Dei: & mandata ejus

jus exc

Ne

prava

Ge

& noi

jus.

Fili

arcum

No

& in l

Etc

rabiliu

Co

in terr

Int

tuit ac

Etc

Cte in i

Int

vit eos

Etc

tanqua

Etc

excitav

jus exquirant.

Ne fiant sicut patres eorum: generatio
prava & exasperans.

Generatio, quæ non direxit cor suum:
& non est creditus cum Deo spiritus e-
jus.

Filiī Ephrem intendentēs & mittentēs
arcum: conversi sunt in die belli.

Non custodierunt testamentum Dei
& in lege ejus noluerunt ambulare.

Et oblitis sunt benefactorū ejus: & mi-
rabilium ejus, quæ ostendit eis.

Coram patribus eorum fecit mirabilia
in terra Ægypti: in campo Thaneos.

Interrupit mare, & perduxit eos: & sta-
tuit aquas quasi in utre.

Et deduxit eos in nube diei: & totā no-
cte in illuminatione ignis.

Interrupit petram in eremo: & ad aqua-
vit eos velut in abyssō multa.

Et eduxit aquam de petra: & deduxit
tanquam flumina aquas.

Et apposuerunt adhuc peccare ei: in iram
excitaverunt excelsum in inaquoso.

Et tentaverunt Deum in cordibus suis:
ut peterent eis animabus suis.

Et malè locuti sunt de Deo : dixerunt ,
nunquid poterit Deus parare mensam in
deserto?

Quoniam percussit petram & fluxerunt
aqua: & torrentes inundaverunt.

Nunquid & panem poterit dare : aut
parare mensam populo suo?

Ideo audivit Dominus, & distulit & ig-
nis accensus est in Jacob, & ita ascendit in
Israel.

Quia non crediderunt in Deo : nec
speraverunt in salutari ejus.

Et mandavit nubibus desuper: & janu-
as cœli aperuit.

Et pluit illis manna ad manducandum :
& panem cœli dedit eis.

Panem Angelorum manducavit ho-
mocibaria misit eis in abundantia.

Transtulit Austrum de cœlo & induxit
in virtute sua Africum.

Et pluit super eos sicut pulverem carnem
& sicut arenam maris volatilia pennata.

Et

Et ceciderunt in medio castrorum eorum circa tabernacula eorum.

Et manducaverunt & saturati sunt nimis, & desiderium eorum attulit eis : non sunt fraudati à desiderio suo.

Adhuc elcæ eorum erant in ore ipsum & ira Dei ascendit super eos.

Et occidit pingues eorum : & electos Israël impedivit.

In omnibus his peccaverunt adhuc & non crediderunt in mirabilibus ejus.

Et defecerunt in vanitate dies eorum & anni eorum cum festinatione.

Cum occideret eos, quærebant eum, & revertebantur, & diluculo veniebunt ad eum.

Et rememorati sunt, quia Deus adjutor est eorum, & Deus excelsus redemptor eorum est.

Et dilexerunt eum in ore suo, & lingua suâ mentiti sunt ei.

Cor autem eorum non erat rectum cum eo nec fideles habitis sunt in testamento ejus.

Ipse autem est misericors, & propitius
fiet peccatis eorum : & non disperdet eos.

Et abundavit , ut averteret iram suam :
& non accendit omnem iram suam.

Et recordatus est, quia caro sunt, spiritus
vadens & non rediens.

Quoties exacerbaverunt eum in de-
serto, in iram concitaverunt eum in in-
quofo?

Et conversi sunt, & tentaverunt Deum,
& sanctum Israël exacerbaverunt.

Non sunt recordati manus ejus: die, quâ
redemit eos de manu tribulantis.

Sicut posuit in Ægypto signa sua, & pro-
digia sua in campo Thaneos.

Et convertit in sanguinem flumina eo-
rum, & imbræ eorum, ne biberent.

Misit in eos cynomyjam, & comedit e-
os , & ranam, & disperdidit eos.

Et dedit ærugini fructus eorum , & la-
bores eorum locustæ.

Et occidit in grandine vineas eorum, &
moros eorum in pruina.

Et tradidit grandini jumenta eorum ,
&

& possessionem eorum igni.

Misit in eos iram indignationis suæ indignationem, & iram, & tribulacionem, immissiones per Angelos malos.

Viam fecit semitæ iræ lux, & non percitat à morte animabus eorum: & jumenta eorum in morte conclusit.

Et percussit omne primogenitum in terra Ægypti: primitias omnis laboris eorum in tabernaculis Cham.

Et abstulit sicut oves populum suum: & perduxit eos, tanquam gregem in deserto.

Et deduxit eos in spe, & non timuerunt: & inimicos eorum operuit mare.

Et induxit eos in montem sanctificationis suæ: montem, quem acquisivit dæstra ejus.

Et ejecit à facie eorum gentes: & sorte divisit eis terram in funiculo distributionis.

Et habitare fecit in tabernaculis eorum tribus Israël.

Et tentaverunt, & exacerbaverunt Deum excelsum: & testimonia ejus non custo-

custodierunt,

Et averterunt se, & non servaverunt pa-
ctum : quemadmodum patres eorum
conversi sunt in arcum pravum.

In iram concitaverunt eum in collibus
suis: & in sculptilibus suis ad æmulationem
eum provocaverunt.

Audivit Deus, & sprevit: & ad nihilum
redegit valde Israël.

Et repulit tabernaculum Silo:taberna-
culum suum , ubi habitavit in hominibus.

Et tradidit in captivitatem virtutem eo-
rum: & pulchritudinem eorum in manus
inimici.

Et conclusit in gladio populum suum
& hæreditatem suam sprevit.

Juvenes eorum comedit ignis : & vir-
gines eorum non sunt lamentatæ.

Sacerdotes eorum in gladio ceciderunt:
& viduæ eorum non plorabantur.

Et excitatus est tanquam dormiens Do-
minus tanquam potens crapulatus a vino.

Et percussit inimicos suos in posteriora:
opprobrium sempiternum dedit illis.

PSALMORUM.

143

Et repulit tabernaculum Joseph: & tribum Ephraim non elegit.

Sed elegit tribum Juda: montem Sion quem dilexit.

Et ædificavit sicut unicornium sanctificiūm suūm in terra: quam fundavit in scula.

Et elegit David servum suum , & sustulit eum de gregibus ovium: de post fœtantes accepit eum.

Pascere Jacob servum suum : & Israël hæreditatem suam.

Et pavit eos in innocentia cordis sui & in intellectibus manuum suarum deduxit eos.

PSALMUS 78.

Deus, venerunt gentes in hæreditatem tuam, polluerunt templum sanctum tuum: posuerunt Jerusalem in pomorum custodiam.

Posuerunt morticina servorum tuorum escas volatilibus cœli : carnes sanctorum tuorum bestiis terræ.

Effu-

Effunderunt sanguinem eorum , tanquam aquam in circuitu Jerusalem : & non erat qui sepeliret.

Facti sumus opprobrium vicinis nostris: subsannatio & illusio his , qui in circuitu nostro sunt.

Usquequo Domine irasceris in finem : accendetur velut ignis zelus tuus ;

Effunde iram tuam in gentes : quæ te non noverunt : & in regna , quæ nomen tuum non invocaverunt.

Quia comederunt Jacob: & locum eius desolaverunt.

Ne memineris iniçitatum nostrarum antiquarum , cito anticipent nos misericordiæ tuæ: quia pauperes facti sumus nimis.

Aduva nos Deus salutaris noster , & propter gloriam nominis tui Domine libera nos,& propitiusesto peccatis nostris, propter nomen tuum.

Ne forte dicant in gentibus; ubi est Deus eorum ? & innotescat in nationibus coram oculis nostris.

Ultio

PSALMORUM.

145

Ultio sanguinis servorum tuorum, qui effulus est: introeat in conspectu tuo gemitus compeditorum.

Secundum magnitudinem brachii tui posside filios mortificatorum.

Et redde vicinis nostris septuplum in sinu eorum: improprium ipsorum, quod extrobraverunt tibi Domine.

Nos autem populus tuus & oves pascuae tuae confitebimur tibi in saeculum.

In generationem & generationem annuntiabimus laudem tuam.

PSALMUS 79.

Qui regis Israël, intende: qui deducis velut ovem Joseph.

Qui sedes super Cherubim manifestare coram Ephraim, Benjamin & Manasse.

Excita potentiam tuam: & veni, ut salvos facias nos.

Deus virtutum converte nos & ostende faciem tuam & salvi erimus.

Domine Deus virtutum: quo usque inseris super orationem servi tui?

K

Ciba-

Cibabis nos pane lachrymarum: & potum dabis nobis in lachrymis in mensura.

Posuisti nos in contradictionem vicinius nostris : & inimici nostri subsannaverunt nos.

Deus virtutum converte nos : & ostende faciem tuam, & salvi erimus.

Vineam de Ægypto transtulisti: ejecisti gentes, & plantasti eam.

Dux itineris fuisti in conspectu ejus: & plantasti radices ejus, & implevit terram.

Operuit montes umbra ejus: & arbusta ejus cedros Dei.

Extendit palmites suos usque ad mare: & usque ad flumen propagines ejus.

Ut quid destruxisti maceriam ejus: & vindemiant eam omnes, qui prætergredituntur viam?

Exterminavit eam aper de sylva: & singularis ferus depastus est eam.

Deus virtutum convertere: respice de cœlo, & vide, & visita vineam istam.

Et perfice eam, quam plantavit dextera tua: & super filium hominis , qui em

PSALMORUM.

147

confirmasti tibi.

Incensa igni, & suffossa: ab increpatione
vultus tui peribunt.

Fiat manus tua super virum dexteræ
tuæ: & super filium hominis, quem confir-
masti tibi.

Et non discedimus a te: vivificabis nos:
& nomen tuum invocabimus.

Domine Deus virtutum converte nos
& ostendefaciem tuam, & salvi erimus.

PSALMUS 80.

Exultate Deo adjutori nostro: jubilate
Deo Jacob.

Sumite psalmum, & date tympanum
psalterium jucundum cum cithara.

Buccinate in Neomenia tuba: in insig-
ni die solennitatis vestrae.

Quia præceptum in Israel est: & judici-
um Deo Jacob.

Testimonium in Joseph posuit illud
cum exiret de terra Ægypti linguam
quam non noverat, audivit.

Divertit ab oneribus dorsum ejus, manus

K 2

ejus

ejus in cophino servierunt.

In tribulatione invocasti me, & libera-
vite: & exaudi te in abscondito tempe-
statis, probavi te apud aquam contradic-
tionis.

Audi populus meus, & contestabor te.
Israël si audiēris me, non erit in te Deus re-
cens, neque adorabis Deum alienum.

Ego enim sum Dominus Deus tuus ,
qui eduxi te de terra Ægypti: dilata os tu-
um; & implebo illud.

Et non audivit populus meus vocem
meam: & Israël non intendit mihi.

Et dimisi eos secundūm desideria cor-
dis eorum, ibunt in adinventionibus suis.

Si populus meus audisset me: Israël si in
viis meis ambulasset.

Pro nihilo forsitan inimicos eorum
humiliasse: & super tribulantes eos mi-
ssisse manum meam.

Inimici Domini mentiti sunt ei: & erit
tempus eorum in sæcula.

Et cibavit eos ex adipe frumenti: & de
petra melle saturavit eos.

Gloria sibi Iurinitas etc. Te Deum Patrem ingenit
v. Deus in adiutor. PSALMORUM. In e ad adj. 149 etc.
Reple os meum laud^{et} PSALMUS 31.

Deus stetit in synagoga deorum: in
medio autem deos dijudicat.

Usquequo judicatis iniquitatem: & fa-
cies peccatorum sumitis?

Judicate egeno, & pupillo: humilem, &
pauperem justificate.

Eripite pauperem: & egenum de ma-
nu peccatoris liberate.

Nescierunt, neque intellexerunt, in te-
nebris ambulant: movebuntur omnia
fundamenta terræ.

Ego dixi, Dii estis: & filii excelsi omnes.

Vos autem sicut homines moriemini:
& sicut unus de principibus cadetis.

Surge Deus, judica terram: quoniam
tu hereditabis in omnibus gentibus.

PSALMUS 32.

Deus quis similis erit tibi? ne taceas,
neque compescaris Deus.

Quoniam ecce inimici tui sonuerunt
& quioderunt te extulerunt caput.

K 3

Su-

Super populum tuum malignaverunt
consilium : & cogitaverunt aduersus san-
ctos tuos.

Dixerunt, venite , & disperdamus eos
de gente : & non memoretur nomen Isra-
el ultra.

Quoniam cogitaverunt unanimiter: si-
mul adversum te testamentum disposue-
runt, tabernacula Idumæorum & Ismae-
litæ.

Moab, & Agareni, Gebal, & Ammon,
& Amalec: alienigenæ cum habitantibus
Tyrum.

Etenim Assur venit cum illis : facti sunt
in adjutorium filii Loth.

Fac illis sicut Madian & Sifaræ : sicut
Jabin in torrente Cisson.

Disperierunt in Endor : facti sunt ut
stercusteræ.

Pone Principes eorum sicut Oreb &
Zeb: & Zebee, & Salmana.

Omnis principes eorum, qui dixerunt,
Hereditate possideamus sanctuarium Dei.

Deus meus pone illos ut rotam : & si-
cut.

cut stipulam ante faciem venti.

Sicut ignis, qui comburit sylvam, & si-
cut flamma comburens montes.

Ita persequeris illos in tempestate tua &
in ira tua turbabis eos.

Impie facies eorum ignominia : & quæ-
rent nomen tuum Domine.

Erubescant, & conturbentur in secul-
lum sæculi & confundantur, & pereant.

Etcognoscant, quia nomen tibi Domi-
nus : tu solus altissimus in omni terra.

PSALMUS 83.

Quam dilecta tabernacula tua Domi-
ne virtutum, concupiseit, & deficit a-
nimæ meæ in atria Domini.

Cor meum, & caro mea, exultaverunt
in Deum vivum.

Etenim passer invenit sibi domum, &
turtur nidum sibi, ubi ponat pullos suos.

Altaria tua Domine virtutum, rex me-
us & Deus meus.

Beati qui habitant in domo tua Domi-
ne, in sæcula sæculorum laudabant te.

Beatus vir, cuius est auxilium abs te.

ascensiones in corde suo disposuit in valle
lachrymarum, in loco quem posuit.

Etenim benedictionem dabit legislator,
ibunt de virtute in virtutem videbitur
Deus deorum in Sion,

Domine Deus virtutū exaudi orationem
meam auribus percipe Deus Jacob.

Protector noster a spice Deus. & respi-
ce in faciem Christi tui.

Quia melior est dies una in atriis tuis :
super millia.

Elegi abjectus esse in domo Dei mei :
magis quam habitare in tabernaculis pec-
catorum.

Quia misericordiam, & veritatem di-
ligit Deus gratiam & gloriam dabit Do-
minus.

Non privabit bonis eos, qui ambulant
in innocentia: Domine virtutum, beatus
homo qui sperat in te.

PSALMUS 84.

Benedixisti Domine terram tuam: a-
vertisti captivitatem Jacob.

Remisisti iniquitatem plebis tuæ ope-
ruisti

PSALMORUM.

153

ruisti omnia peccata eorum.

Mitigasti omnem iram tuam avertisti ab ira indignationis tuae.

Converte nos Deus salutaris noster; & averte iram tuam a nobis.

Nunquid in æternum irasceris nobis? aut extendes iram tuam a generatione in generationem?

Deus tu conversus vivificabis nos, & plebs tua lætabitur in te.

Ostende nobis domine misericordiam tuam, & salutare tuum da nobis.

Audiam quid loquatur in me Dominus Deus, quoniam loquetur pacem in plebem suam.

Et super sanctos suos, & in eos qui convertuntur ad cor.

Veruntamen prope timentes eum salutare ipsius, ut inhabitet gloria in terra nostra.

Misericordia & Veritas obviaverunt sibi, justitia & pax oscularæ sunt.

Veritas de terra oita est, & justitia de cœlo prospexit.

K 5

Etenim

Etenim Dominus dabit benignitatem,
& terra nostra dabit fructum suum.

Justitia ante eum a nbulabit : & ponet
in via gressus suos.

PSALMUS 85.

Inclina Domine aurem tuam, & exaudi
me, quoniam inops, & pauper sum ego.

Custodi animam meam, quoniam san-
ctus sum, salvum fac servum tuum, Deus
meus, sperantem in te.

Miserere mei Domine, quoniam ad te
clamavi tota die, laetifica animam servitui,
quoniam ad te Domine animam meam le-
vavi.

Quoniam tu Domine suavis, & mitis, &
multæ misericordiaæ omnibus invocanti-
bus te.

Auribus percipe orationem meam, &
intende voci deprecationis meæ.

In die tribulationis meæ clamavi ad te,
quia exaudisti me.

Non est simili� tui in diis Domine, & non
est secundum opera tua.

Omnes gentes quascunque fecisti, veni-
ent

ent, & adorabunt coram te Domine : & glorificabunt nomen tuum.

Quoniam magnus es tu , & faciens mirabilia: tu es Deus solus.

Deduc me Domine in via tua, & ingrediār in veritate tua; lætetur cor meum , ut timeat nomen tuum.

Confitebor tibi Domine Deus meus in toto corde meo : & glorificabo nomen tuum in æternum.

Quia misericordia tua magna est super me & eruisti animam meam ex inferno inferiori.

Deus, iniqui insurrexerunt super me; & Synagoga potentium quæsierunt animam meam : & non proposuerunt te in conspectu suo.

Etu Domine Deus miserator & misericors: patiens, & multæ misericordiæ , & verax.

Respice in me, & miserere mei da imperium tuum puerō tuo, & salvum fac filium ancillæ tuæ.

Fac mecum signum in bonum, ut vide-

ant qui oderunt me , & confundantur :
quoniam tu Domine adjuvisti me , &
consolatus es me.

PSALMUS 86

Fundamenta ejus in montibus sanctis
diligit Dominus portas Sion super
omnia tabernacula Jacob.

Gloriosa dicta sunt de te:civitas Dei.
Memor ero Rahab,& Babylonis:scien-
tium me.

Ecce alienigenæ,& Tyrus , & populus
Æthiopum:hi fuerunt illic.

Nunquid Sion dicet , homo , & homo
natus est in ea:& ipse fundavit eam altissi-
mus?

Dominus narrabit in scripturis popu-
lorum,& principum : horum qui fuerunt
in ea.

Sicut lætantium omnium: habitatio est
in te.

PSALMUS 87.

Domine Deus salutis meæ; in die cla-

ma-

mavi & nocte coram te.

Intret in conspectu tuo oratio mea, inclina aurem tuam ad precem meam.

Quia repleta est malis anima mea, & vita mea inferno appropinquavit.

Æstimatus sum cum descendentibus in lacum, factus sum sicut homo sine adiutorio, inter mortuos liber.

Sicut vulnerati dormientes in sepulchris, quorum non es memor amplius, & ipsi de manu tua repulsi sunt.

Posuerunt me in lacu inferiori, intencibrosis, & in umbra mortis.

Super me confirmatus est furor tuus, & omnes fluctus tuos induxisti super me.

Longè fecisti notos meos à me, posuerunt me abominationem sibi.

Traditus sum, & non egrediebar: oculi mei languerunt præ inopia.

Clamavi ad te Domine totâ die, expandi ad te manus meas.

Nunquid mortuis facies mirabilia: aut medici suscitabunt, & confitebuntur tibi?

Nunquid narrabit aliquis in sepulchro mileri-

misericordiam tuam: & veritatem tuam in
perditione?

Nunquid cognoscentur in tenebris
mirabilia tua: & iustitia tua in terra obli-
vionis?

Etego ad te Domine clamavi: & manè
oratio mea præveniet te.

Ut quid Domine repellis orationem
meam: avertis faciem tuam à me?

Pauper sum ego, & in laboribus à juven-
tute mea exaltatus autem humiliatus sum,
& conturbatus.

In me transierunt iræ tuæ , & terrores
tui conturbaverunt me.

Circumdederunt me sicut aqua totâ
die, circumdederunt me simul,

Elongasti à me amicum, & proximum,
& notos meos à miseria.

PSALMUS 88.

Misericordias Domini in æternum
cantabo.

In generatione & generationem an-
nuntiabo veritatem tuam in ore meo.

Quoniam dixisti, in æternum miser-
cor-

PSALMORUM.

159

cordia ædificabitur in cœlis : præparabitur veritas tua in eis.

Disposui testamentum electis meis ,
juravi David servo meo : usque in æternum præparabo lementum tuum.

Et ædificabo in generationem & generationem sedem tuam.

Confitebuntur cœli mirabilia tua Domine : etenim veritatem tuam in Ecclesia sanctorum.

Quoniam quis in nubibus æquabitur Domino: similis erit Deo in filiis Dei?

Deus, qui glorificatur in concilio sanctorum: magnus & terribilis super omnes qui in circuitu ejus sunt.

Domine Deus virtutum , quis similis tibi , potens es Domine , & veritas tua in circuitu tuo.

Tu dominaris potestati maris : motum autem fluctuum ejus tu mitigas.

Tu humiliasti sicut vulneratum, superbum , in brachio virtutis tuæ dispersisti inimicos tuos.

Tu es cœli , & tua est terra , orbem

terra

terræ, & plenitudinem ejus tu fundâsti : aquilonem & mare tu creasti.

Thabor & Hermon in nomine tuo exultabunt: tuum brachium cum potentia.

Firmetur manus tua, & exaltetur dexteratua: justitia & judicium præparatio sedis tuæ.

Misericordia & veritas præcedent faciem tuam : beatus populus, qui scit jubilationem.

Domine, in lumine vultus tui ambulabunt, & in nomine tuo exultabunt tota die: & in iustitia tua exaltabuntur.

Quoniam gloria virtutis eorum tu es: & in beneplacito tuo exaltabitur cornu nostrum.

Quia Domini est assumptio nostra: & sancti Israel regis nostri.

Tunc locutus es in visione sanctis tuis & dixisti: Posui adjutorium in potente; & exaltavi electum de plebe mea.

Inveni David servum meum: oleo sancto meo unxi eum.

Manus enim mea auxiliabitur ei: & brachium meum confortabit eum.

Nihil

Nihil proficiet inimicus in eo : & filius
iniquitatis non apponet nocere ei.

Et concidam à facie ipsius inimicos e-
jus: & odientes eum in fugam convertam.

Et veritas mea, & misericordia mea cum
ipso : & in nomine meo exaltabitur cornu
ejus.

Et ponam in mari manūm ejus : & in
fluminibus dexteram ejus.

Ipse invocabit me, Pater meus es tu :
Deus meus, & susceptor salutis meæ.

Et ego primogenitum ponam illum :
excelsum præ regibus terræ.

In æternum servabo illi misericordiam
meam: & testamentum meum fidele ipsi.

Et ponam in sæculum sæculi semen e-
jus: & thronum ejus sicut dies cœli.

Si autem dereliquerint filii ejus legem
meā: & in judiciis meis nō ambulaverint.

Si justicias meas prophanaverint : &
mandata mea non custodierint.

Visitabo in virga iniquitates eorum: &
in verberibus peccata eorum.

Misericordiam autem meam non dis-

pergam ab eo , neque nocebo in veritate
mea.

Neque prophanabo testamentum
meum:&quæ procedunt de labiis meis non
faciam irrita.

Semel juravi in sancto meo , si David
mentiar : semen ejus in æternum manebit.

Et thronus ejus sicut Sol in conspectu
meo:& sicut Luna perfecta in æternum , &
testis in cœlo fidelis.

Tu verò repulisti & dispexisti: distulisti
Christum tuum.

Avertisti testamētum servitui: propha-
nasti in terra sanctuarium ejus.

Destruxisti omnes sepes ejus : posuisti
firmamentum ejus formidinem.

Diripuerunt eum omnes transeuntes
viam : factus est opprobrium vicinis suis.

Exaltâsti dexteram deprimentium cum:
læticâsti omnes inimicos ejus.

Avertisti adjutorium gladii ejus : & non
es auxiliatus ei in bello.

Destruxisti eum ab emundatione: & se-
dem ejus in terra collisisti.

Mino.

Minorasti dies temporis ejus: perfudisti
eum confusione.

Usquequo Domine avertis in finem:
exardescet sicut ignis ira tua?

Memorare quæ mea substantia: nun-
quid enim vanè constituisti omnes filios
hominum?

Quis est homo qui vivet, & non videbit
mortem: eruet animam suam de manu in-
feri?

Ubi sunt misericordiae tuæ antiquæ Do-
mine: sicut jurâsti David in veritate tua?

Memor esto Domine opprobrii ser-
orum tuorum [quod continui in sinu meo]
multarum gentium.

Quod exprobraverunt inimici tui Do-
mine: quod exprobraverunt commutati-
onem Christitui,

Benedictus Dominus in æternum.
Fiat, fiat.

PSALMUS 89.

Domine, refugium factus es nobis: à
generatione in generationem.

L 2

Prœf.

Priusquam montes fierent , aut forma-
retur terra , & orbis : à sæculo & usque in-
sæculum tu es Deus.

Ne avertas hominem in humilitatem :
& dixisti , convertimini filii hominum .

Quoniam mille anni ante oculos tuos :
tanquam dies hesterna , quæ præteriit .

Et custodia in nocte : quæ pro nihilo
habentur , eorum anni erunt .

Manè sicut herba transeat , manè flo-
reat , & transeat ; vespere decidat , induret ,
& arelcat .

Quia defecimus in ira tua : & in furore
tuo turbatis sumus .

Posuisti iniquitates nostras in conspe-
ctu tuo : sæculum nostrum in illuminati-
one vultus tui .

Quoniam omnes dies nostri defece-
runt : & in ira tua defecimus .

Anni nostri sicut aranea meditabuntur
dies annorum nostrorum in ipsis , septua-
ginta anni .

Si autem in potentatibus octoginta an-
ni , & amplius eorum labor & dolor .

Quo-

PSALMORUM.

165

Quoniam supervenit mansuetudo : &
corripiemur.

Quis novit potestatem iræ tuæ : & præ
timore tuo iram tuam dinumerare ;

Dexteram tuam sic notam fac & eru-
ditos corde in sapientia.

Convertere Domine, usquequo ? & de-
precabilis esto super servos tuos.

Repleti sumus manè misericordiâ tuâ :
& exultavimus , & delectati sumus omni-
bus diebus nostris.

Lætati sumus pro diebus , quibus nos
humiliasti: annis quibus vidimus mala.

Respicere in servos tuos, & in opera tua :
& dirige filios eorum.

Et sit splendor Domini Dei nostri su-
per nos, & opera manuum nostrarum di-
rigere supernos : & opus manuum nostra-
rum dirige.

PSALMUS 90.

Qui habitat in adjutorio Altissimi :
in protectione Dei cœli commora-
bitur.

L 3

Di-

Dicet Dominus; susceptor meus es tu,
& refugium meum: Deus meus, sperabo
in eum.

Quoniam ipse liberabit me de laqueo
venantium, & à verbo aspero.

Scapulis suis obumbrabit tibi : & sub
pennis ejus sperabis.

Scuto circumdabit te veritas ejus : non
timebis à timore nocturno

A sagitta volante in die, à negotio pe-
rambulante in tenebris : ab incursu & dæ-
monio meridiano.

Cadent à latere tuo mille, & decem mil-
lia à dextris tuis : ad te autem non appro-
pinquabit

Veruntamen oculis tuis considerabis: &
retributionem peccatorum videbis.

Quoniam tu es Dominus spes mea: Al-
tissimum posuisti refugium tuum

Non accedet ad te malum: & flagellum
non appropinquabit tabernaculo tuo.

Quoniam Angelis suis mandavit de te :
ut custodiant te in omnibus viis tuis.

In manibus portabunt te ne forte of-
fendas

fendas ad lapidem pedem tuum.

Super alpidem & basiliscum ambulabis: & conculcabis leonem & draconem.

Quoniam in me speravit liberabo eum: protegam eum , quoniam cognovit nomen meum.

Claimabit ad me, & ego exaudiam eum cum ipso sum in tribulatione , eripiam eum, & glorificabo eum.

Longitudine dierum replebo eum: & ostendam illi salutare meum.

Gloria tibi Trinitas. Ideum Patrem etc.
N. Confundantur etc PSALMUS 91. Adjutor, et liberator
Depletos mecum laute tua, ut canticum gloriam tuam etc.
Deus in adjutorium meum intende etc. In eum adiuvio; etc.

Bonum est confiteri Domino : & psal-

lere nomini tuo altissime.

Ad annuntiandum mane misericordiam tuam: & veritatem tuam per noctem.

In decachordo psalterio: cum cantico in cithara.

Quia delectasti me Domine in factura tua : & in operibus manuum tuarum exultabo.

Quam magnifica sunt opera tua Domine: nimis profundæ factæ sunt cogita-

tiones tuæ.

Vir insipiens non cognoscet: & stultus non intelliget hæc.

Cùm exorti fuerint peccatores sicut fœnum, & apparuerint omnes, qui operantur iniquitatem.

Ut intereant in sæculum sæculi; tu autem altissimus in æternum Domine.

Quoniam ecce inimici tui Domine, quoniam ecce inimici tui peribunt: & dispergentur omnes, qui operantur iniquitatem.

Et exaltabitur sicut unicornis cornu meum, & senectus mea in misericordia uberi.

Et despexit oculus meus inimicos meos: & in insurgentibus in me malignantibus audiet auris mea.

Justus ut palma florebit: sicut cedrus Libani multiplicabitur.

Plantati in domo Domini in atriis domus Dei nostri florebunt.

Adhuc multiplicabuntur in senecta uberi, & bene patientes erunt, ut innuntient

Quo-

ent.

Quoniam rectus Dominus Deus noster: & non est iniquitas in eo;

PSALMUS 92.

Dominus regnavit , decorum indu-
tus est, indutus est Dominus forti-
tudinem, & præcinxit se.

Etenim firmavit orbem terræ: qui non
commovebitur.

Parata sedes tua ex tunc: à sæculo tu es.

Elevaverunt flumina Domine : eleva-
verunt flumina vocem suam.

Elevaverunt flumina fluctus suos: à vo-
cibus aquarum multarum.

Mirabiles elationes maris : mirabilis in
altis Dominus.

Testimonia tua credibilia facta sunt
nimis : domum tuam decet sanctitudo
Domine in longitudinem dierum.

PSALMUS 93.

Deus ultionum Dominus : Deus ul-
tionum libere egit.

Exaltare qui judicas terram: redde re-
tributionem superbis.

Usquequo peccatores Domine, usque-

quo peccatores gloriabuntur?

Effabuntur, & loquentur iniquitatē: lo-
quentur omnes, qui operantur injustitiā?

Populum tuum Domine humiliave-
runt: & hæreditatem tuam vexaverunt.

Viduam & advenam interfecerunt: &
pupilos occiderunt.

Etdixerunt, non videbit Dominus nec
intelliget Deus Jacob.

Intelligite insipientes in populo: & stul-
ti aliquando sapite.

Qui plantavit aurem, non audiet: aut
qui finxit oculum, non considerat?

Qui corripit gentes, non arguet: qui
docet hominem scientiam?

Dominus scit cogitationes hominum:
quoniam vanæ sunt.

Beatus homo, quem tuerudieris Do-
mine & de lege tua docueris eum.

Ut mitiges ei à diebus malis: donec fo-
diatur peccatori fovea.

Quia non repellit Dominus plebem su-
am: & hæreditatem suam non derelinquet.

Quoadusque justitia convertatur in ju-
di-

PSALMORUM.

171

dicum: & qui juxta illam omnes qui recto
sunt corde.

Quis consurget mihi adversus malig-
nantes? aut quis stabit mecum adversus o-
perantes iniqutatem?

Nisi quia Dominus adjuvit me: paulo
minus habitasset in inferno anima mea,

Si dicebam, Motus est pes meus mis-
ericordia tua Domine adjuvabat me.

Secundum multitudinem dolorum
meorum in corde meo: consolationes tuae
lætificaverunt animam meam.

Nunquid adhæret tibi sedes iniqutatis
qui fingis laborem in præcepto?

Captabunt in animam justi: & sangu-
inem innocentem condemnabunt.

Et factus est mihi Dominus in refugi-
um: & Deus meus in adjutorium spei meæ.

Et reddet illis iniqutatem ipsorum, &
in malitia eorum disperdet eos: disperdet
illos Dominus Deus noster.

PSALMUS 4.

V Enite, exultemus Domino, jubilemus
Deo salutari nostro.

L 6

Præc-

Præoccupemus faciem ejus in confessione, & in psalmis jubilemus ei.

Quoniam Deus magnus Dominus, & rex magnus super omnes Deos.

Quia in manu ejus sunt omnes fines terræ, & altitudines montium ipsius sunt.

Quoniam ipsius est mare, & ipse fecit illud, & siccum manus ejus formaverunt.

Venite adoremus, & procidamus, & ploremus ante Dominum, qui fecit nos.

Quia ipse est Dominus Deus noster, & nos populus pascuæ ejus, & oves manus ejus.

Hodie si vocem ejus audieritis, nolite obdurare corda vestra.

Sicut in irritatione, secundum diem tentationis in deserto, ubi tentaverunt me Patres vestri, probaverunt, & viderunt opera mea.

Quadraginta annis offensus fui generationi illi, & dixi, semper hi errant corde,

Eristi non cognoverunt vias meas, ut iuravi in ira mea, si introibunt in requiem meam.

Cantate Domino canticum novum :
cantate Domino omnis terra.

Cantate Domino, & benedicte nomi-
ni ejus: annunciate de die in diem salutare
ejus.

Annunciate inter gentes gloriam ejus,
in omnibus populis mirabilia ejus.

Quoniam magnus Dominus, & lauda-
bilis nimis, terribilis est super omnes de-
os.

Quoniam omnes dii gentium dæmo-
nia, Dominus autem cœlos fecit.

Confessio & pulchritudo in conspectu
ejus, sanctimonia, & magnificentia in
sanctificatione ejus.

Afferte Domino patriæ gentium, af-
ferte Domino gloriam & honorem, af-
ferte Domino gloriam nomini ejus.

Tollite hostias & introite in atria ejus:
adorate Dominum in atrio sancto ejus.

Commoveatur à facie ejus universa ter-
ra: dicite in gentibus, quia Dominus reg-
navit.

Ete-

LIBER

Etenim correxit orbem terræ, qui non
commovebitur, judicabit populos in æ-
quitate.

Lætentur cœli, & exultet terra, commo-
veatur mare, & plenitudo ejus, gaudebunt
campi, & omnia, quæ in eis sunt.

Tunc exultabunt omnia ligna sylva-
rum à facie Domini, quia venit : quoni-
am venit judicare terram.

Judicabit orbem terræ in æquitate: &
populos in veritate sua.

PSALMUS 96.

Dominus regnavit, exultet terra : læ-
tentur insulæ multæ.

Nubes & caligo in circuitu ejus. justitia
& judicium correctio sedis ejus.

Ignis ante ipsum præcedet : & inflam-
mabit in circuitu inimicos ejus.

Illuxerunt fulgura ejus orbis terræ vidit,
& commota est terra.

Montes sicut cera fluxerunt à facie Do-
mini : à facie Domini omnis terra.

Annuntiaverunt cœli justitiam ejus ,
&

& viderunt omnes populi gloriam ejus.

Confundantur omnes qui adorant scul-
ptilia: & qui gloriantur in simulacris suis.

Adorate eum omnes Angeli ejus: audi-
vit & lætata est Sion.

Et exultaverunt filiiæ Judæ: propter ju-
dicia tua Domine.

Quoniam tu Dominus altissimus super
omnem terram : nimis exaltatus es super
omnes deos.

Qui diligitis Dominum, odite malum:
custodit Dominus animas sanctorum suo-
rum, de manu peccatoris liberabit eos.

Lux orta est justo: & rectis corde lætitia.

Lætamini justi in Domino: & confite-
mini memoriæ sanctificationis ejus.

PSALMUS 97.

Cantate Domino canticum novum;
quia mirabilia fecit.

Salvavit sibi dextera ejus: & brachium
sanctum ejus.

No-

Notum fecit Dominus salutare suum:
in conspectu gentium revelavit justitiam
suam.

Recordatus est misericordiae lux: & ve-
ritatis suæ domui Israël.

Viderunt omnes termini terræ: saluta-
re Dei nostri.

Jubilate Domino omnis terra: cantate
& exultate, & psallite.

Psallite Domino in cithara , in cithara
& voce psalmi: in tubis ductilibus, & voce
tuba cornea.

Jubilate in conspectu regis Domini :
moveatur mare & plenitudo ejus, orbis
terrarum , & qui habitant in eo.

Flumina plaudent manu, simul mon-
tes exultabunt à conspectu Domini: quo-
niā venit judicare terram.

Judicabit orbem terrarum in justitia
& populos in æquitate.

PSALMUS 98.

Dominus regnavit, irascantur populi:
qui sedes super Cherubim, move-
atur

Non adhæsit mihi cor pravum : declinantem à me malignum non cognoscebam.

Detrahens item secreto proximo suo : hunc persequebar.

Superbo oculo & insatiabili corde: cum hoc non edebam.

Oculi mei ad fideles terræ , ut sedeant metum ambulans in via immaculata, hic mihi ministrabat.

Non habitabit in medio domus meæ , qui facit superbiam qui loquitur iniqua , non direxit in conspectu oculorum meorum.

In matutino interficiebam omnes peccatores terræ : ut disperderem de civitate.

Domini omnes operantes iniquitatem.

Gloria Trinitatis etc. Ideum passum est ut supra Confundatur etc. Laudamus Auctorem et seruato etc. Laudes os meus laude est. Auctorium nostrum.

Domine exaudi orationem meam : clamor meus ad te veniat.

Non avertas facies im à me in quamque die tribulor , inclina ad me aurem tuam.

In quacumque die invocavero te velo-

citer exaudi me.

Quia defecerunt sicut fumus dies mei :
& osla mea sicut cremum aruerunt.

Percussus sum ut fœnum, & aruit cor
meum: quia oblitus sum comedere panem
meum.

A voce gemitus mei : adhæsit os meum
carni meæ.

Similis factus sum pellicano solitudi-
nis factus sum sicut nycticorax in domi-
cilio.

Vigilavi : & factus sum sicut passer soli-
tarius in tecto.

Totâ dic exprobrabant mihi inimici
mei: & qui laudabunt me, adversum me
jurabant.

Qui acinarem tanquam panem man-
ducabam: potū meū cum fletu miscebam.

A facie iræ & indignationis tuae: quia e-
levans allisisti me.

Dies mei sicut umbra declinaverunt :
& ego sicut fœnum artui.

Tu autem Domine in æternum per-
manes: & memoriale tuum in genera-
tionem

nem & generationem.

Tu exurgens misereberis Sion : quia
tempus miserendi ejus, quia venit tempus.

Quoniam placuerunt servis tuis la-
pides ejus & terræ ejus miserebuntur.

Et timebunt gentes nomen tuum Do-
mine & omnes reges terræ gloriam tuam.

Quia ædificavit Dominus Sion : & vi-
debitur in gloria sua.

Respexit in orationem humilium : &
non sprevit precem eorum.

Scribantur hæc in generatione altera:
& populus qui creabitur, laudabit Domi-
num.

Quia prospexit de excelso sancto suo :
Dominus de cœlo in terram aspergit.

Ut audiret gemitus compeditorum: ut
solveret filios interemptorum.

Ut annuuent in Sion nomen Domi-
ni: & laudem ejus in Jerusalem.

In conveniendo populos in unum ; &
reges ut serviant Domino.

Respondite ei in via virtutis suæ : pauci-
tatem dierum meorum nuntia mihi.

Ne revokes me in dimidio dierum meorum: in generationem & generationem annuiti.

Initio tu Domine terram fundasti: & opera manuum tuarum sunt cœli.

Ipsi peribunt, tu autem permanes: & omnes sicut vestimentum veterascent.

Et sicut opertorium mutabis eos, & mutabuntur: tu autem idem ipse es, & anni tuí non deficiens.

Filiis servorum tuorum habitabunt: & semen eorum in sæculum dirigetur.

PSALMUS 102.

Benedic anima mea Domino: & omnia, quæ intra me sunt, nominis sancto ejus.

Benedic anima mea Domino: & noli obliuisci omnes retributiones ejus.

Qui propitiatur omnibus iniquitatibus tuis: qui sanat omnes infirmitates tuas.

Qui redimit de interitu vitam tuam: qui coronat te in misericordia & miserationibus.

Quireplet in bonis desiderium tuum:

reno-

renovabitur ut aquilæ juventus tua.

Faciens misericordias Dominus : & judicium omnibus injuriā patientibus.

Notas fecit vias suas Moysi : filiis Israël voluntates suas.

Miserator & misericors Dominus : longanimitatis & multum misericors.

Non in perpetuum irascetur : neque in eternum comminabitur.

Non secundum peccata nostra fecit nobis , neque secundum iniuitates nostras retribuit nobis,

Quoniam secundum altitudinem cœli à terra : corroboravit misericordiam suam super timentes sc.

Quantum distat ortus ab occidente : longe fecit à nobis iniuitates nostras.

Quomodo miseretur pater filiorum , misertus est Dominus timentibus sc : quoniam ipse cognovit figmentum nostrum.

Recordatus est quoniam pulvis sumus homo sicut fœnum dies ejus, tanquam flo agri sicefflorebit.

Quoniam spiritus pertransibit in illo
& non subsisteret & non cognoscet amplius locum suum.

Misericordia autem Domini ab æterno, & usque in æternum superstinentes eum.

Et justitia illius in filios filiorum, his qui servant testamentum ejus.

Et memores sunt mandatorum ipsius, ad faciendum ea.

Dominus in cœlo paravit sedem suam:
& regnum ipsius omnibus dominabitur.

Benedicite Domino omnes Angeli ejus: potentes virtute, facientes verbum illius, ad audiendam vocem sermonū eius.

Benedicite Domino omnes virtutes ejus: ministri ejus, qui facitis voluntatem ejus.

Benedicite Domino omnia opera ejus: in omni loco dominationis ejus, benedic anima mea Domino.

PSALMUS 103.

Benedic anima mea Domino : Dñe
De-

PSALMORUM.

Deus meus magnificatus es vehementer

Confessionem & decorum induisti : amictus luminescunt vestimento.

Extendens cœlum sicut pellem : qui tegis aquis superiora ejus.

Qui ponis nubem ascensum tuum, qui ambulas super pennas ventorum.

Qui facis Angelos tuos spiritus, & ministros tuos ignem urentem.

Qui fundasti terram super stabilitatem suam, non inclinabitur in sæculum sæculi.

Abyssus sicut vestimentum, amictus e-
jus, super montes stabunt aquæ.

Ab increpatione tua fugient, à voce tonitrui tui formidabunt.

Ascendunt montes , & descendunt campi, in locum, quem fundasti eis.

Terminum posuisti, quem non trans-
gredientur, neque convertentur operire terram.

Qui emittis fontes in convallibus, inter
medium montium pertransibunt aquæ.

Potabunt omnes bestiæ agri, expecta-
bunt onagri in siti sua.

Supera volucres cœli habitabunt : de
medio petrarum dabunt voces.

Rigans montes de superioribus suis , de
fructu operum tuorum satiabitur terra.

Producens fœnum jumentis: & herbam
servituti hominum.

Et educas panem de terra : & vinum læ-
tificet cor hominis,

Ut exhilaret faciem in oleo . & panis cor
hominis confirmet.

Saturabuntur ligna campi , & cedri' iba-
ni, quas plantavit illic passeræ nidificabunt.

Herodii domus dux est eorum : mentes
excelsi cervis : petra refugium herinaceis.

Fecit Lunam in tempora ; Sol cognovit
occasum suum.

Posuisti tenebras , & facta est nox ; in ipsa
pertransibunt omnes bestiæ sylvæ.

Catuli leonum rugentes , ut rapiant &
querant à Deo escam sibi.

Ortus est sol ; & congregatis sunt : & in
cubilibus suis collocabuntur.

Exibit homo ad opus suum : & ad ope-
rationem suam usque ad vesperam.

Quam

Quam magnifica sunt opera tua Domine omnia in sapientia fecisti: impleta est terra possessione tua.

Hoc mare magnum, & spatiosum manibus: illic reptilia, quorum non est numerus.

Animalia pusilla cum magnis: illic naves pertransibunt.

Draco iste, quem formasti ad illudendum ei: omnia a te expectant, ut des illis escam in tempore.

Dante te illis colligent: aperiente te manus tuam, omnia implebuntur bonitate.

Avertente autem te faciem turbabuntur: auferes spiritum eorum, & deficient, & in pulverem suum revertentur.

Emitte spiritum tuum, & creabuntur: renovabis faciem terræ.

Sit gloria Domini in sæculum: lætabitur Dominus in operibus suis.

Qui respicit terram, & facit eam tremere, qui tangit montes, & fumigant.

Cantabo Domino in via mea: psallam Deo meo quandiu sum.

Jucundum sit ei eloquium meum: ego

vero

vero delectabor in domino.

Deficient peccatores à terra , & iniquità ut non sint : benedic anima mea Dño.

PSALMUS 104.

Confitemini Domino , & invocate nomen ejus , annuntiate inter gentes opera ejus.

Cantate ei , & psallite ei : narrate omnia mirabilia ejus .

Laudamini in nomine sancto ejus , latetur cor quærentium Dominum .

Quærite Dominum , & confirmamini : quærite faciem ejus semper .

Mementote mirabilium ejus , quæ fecit : prodigia ejus & judicia oris ejus .

Semen Abraham , servi ejus : filii Jacob electi ejus .

Ipse Dominus Deus noster , in universa terra judicia ejus .

Memor fuit in seculum testamenti sui : verbi , quod mandavit in mille generationes .

Quod disposuit ad Abraham : & jura menti sui ad Isaac .

Et

Et statuit illud Jacob in præceptum : &
Israël in testamentum æternum.

Dicens, tibi dabo terram Chanaan: fu-
niculum hæreditatis vestræ.

Cùm essent numero brev i: paucissimi
& incolæ ejus.

Et pertransierunt de gente in gentem ;
& de regno ad populum alterum.

Non reliquit hominem nocete eis : &
corripuit pro eis reges.

Nolite tangere christos meos : & in
prophetis meis nolite malignari.

Et vocavit famem super terram: & om-
ne firmamentum panis contrivit.

Misit ante eos virum : in servum vœ-
nundatus est Joseph.

Humiliaverunt in compedibus pedes
ejus, ferrum pertransiit animam ejus : do-
nec veniret verbum ejus.

Eloquium Domini inflammatum est eum:
misit rex, & solvit eum : princeps populo-
rum , & dimisit eum.

Constituit eum Dominus domus suæ :
& principem omnis possessionis suæ.

Ute

Ut erudiret principes ejus sicut semet ipsum: & senes ejus prudentiam doceret.

Et intravit Israël in Ægyptum: & Jacob accula fuit in terra Cham.

Et auxit populum suum vehementer: & firmavit eum super inimicos ejus.

Convertit cor eorum ut adirent populum ejus: & dolum facerent in servos ejus.

Misit Moysen servum suum: Aaron , quem elegit ipsum.

Posuit in eis verba signorum suorum , & prodigiorum in terra Cham.

Misit tenebras, & obscuravit: & non exacerbavit sermones suos.

Convertit aquas eorum in sanguinem: & occidit pisces eorum.

Edidit terra eorum ranas: in penetralibus regum ipsorum.

Dixit, & venit cœnomyja, & cinifes: in omnibus finibus eorum.

Posuit pluvias eorum grandinem : ignem comburentem in terra ipsorum.

Et percussit vineas eorum , & ficalneas eorum: & contrivit lignum finium eorum.

Di-

Dixit, & venit locusta & bruchus: cuius non erat numerus.

Et comedit omne sœnum in terra eorum: & comedit omnē fructū terræ eorū.

Et percussit omne primogenitū in terra eorum: primitias omnis laboris eorum.

Et eduxit eos cum argento & auro: & non erat in tribubus eorum infirmus.

Lætata est Ægyptus in profectione eorum: quia incubuit timor eorū super eos.

Expandit nubem in protectionem eorum: & ignem, ut luceret eis per noctem.

Petierunt, & venit coturnix: & pane cœli saturavit eos.

Dirupit petram, & fluxerunt aquæ: abi- erunt in sicco flumina.

Quoniam memor fuit verbi sancti sui quod habuit ad Abraham puerum suum.

Et eduxit populum suum in exultatione: & electos suos in lætitia.

Et dedit illis regiones gentium: & labores populorum possederunt.

Ut custodiant justificationes ejus: & legem ejus requirant.

PSALMUS 105.

Consitemini Domino quoniam bonus: quoniam in sæculum misericordia ejus.

Quis loquitur potentias Domini: auditas faciet omnes laudes ejus?

Beati qui custodiunt judicium: & faciunt justitiam in omni tempore.

Memento nostri Domine in beneplacito populi tui: visita nos in salutari tuo.

Ad videndum in bonitate electorum tuorum, ad latandum in lætitia gentis tux: ut lauderis cum hereditate tua.

Peccavimus cum Patribus nostris, in justè egimus, iniquitatem fecimus.

Patres nostri in Ægypto non intellexerunt mirabilia tua: non fuerunt memores multitudinis misericordiæ tux.

Et irritaverunt ascendentēs in mare: mare rubrum,

Etsalvavit eos propter nomen suum: ut notam ficeret potentiam suam.

Et increpuit mare rubrum, & exsiccatum

PSALMORUM.

193

tum est: & deduxit eos in abyssis , sicut in
deserto.

Et silvavit eos de manu odientium : &
redemit eos de manu inimici.

Et operuit aqua tribulantes eos : unus
ex eis non remansit.

Et crediderunt verbis ejus : & laudave-
runt laudem ejus.

Cito fecerunt, oblitis sunt operum ejus :
& non sustinuerunt consilium ejus.

Et concupierunt concupiscentiam in
deserto: & tentavetunt Deum in inaquoso.

Et dedit eis petitionem ipsorum : & mi-
sit saturitatem in animas eorum.

Et irritaverunt Moysen in castris: Aa-
ron sanctum Domini.

Aperta est terra, & deglutivit Dathan :
& operuit super congregationem Abiro.

Et exarsit ignis in synagoga eorum :
flamma combussit peccatores

Et fecerunt vitulum in Horeb: & ado-
raverunt sculptile.

Et mutaverunt gloriam suam: in simili-
tudinem vituli comedentis fœnum.

N

Oblig-

Obliti sunt Deum, qui salvavit eos : qui fecit magnalia in Ægypto, mirabilia in terra Cham, terribilia in mari rubro.

Et dixit ut disperderet eos : si non Moses electus ejus stetisset in confractione in conspectu ejus.

Ut averteret iram ejus, ne disperderet eos : & pro nihilo habuerunt terram desiderabilem.

Non crediderunt verbo ejus , & murmuraverunt in tabernaculis suis : non exaudierunt vocem Domini.

Et elevavit manum suam super eos : ut prosterneret eos in deserto.

Et ut dejiceret semen eorum in nationibus : & dispergeret eos in regionibus.

Et initiati sunt Beelphegor : & comederunt sacrificia mortuorum.

Et irritaverunt eum in adinventionibus suis : & multiplicata est in eis ruina.

Et stetit Phinees, & placavit : & cessavit quaestio.

Et reputatum est ei in justitiam : in generationem & generationem , usque in sempiter-

sempiternum.

Et irritaverunt eum ad aquas contradictionis: & vexatus est Moyses propter eos ; quia exacerbaverunt spiritum ejus.

Et distinxit in labiis suis : non disperderunt gentes, quas dixit Dominus illis.

Et commixti sunt inter gentes , & didicerunt opera eorum , & servierunt scutilibus eorum: & factum est illis in scandalum:

Et immolaverunt filios suos , & filias suas: dæmoniis.

Et effuderunt sanguinem innocentem : sanguinem filiorum suorum & filiarum suarum , quas sacrificaverunt scutilibus Chanaan.

Et infecta est terra in sanguinibus , & contaminata est in operibus eorum: & fornicati sunt in adinventionibus suis.

Et iratus est furore Dominus in populum suum: & abominatus est hæreditatem suam.

Et tradidit eos in manus gentium : & dominati sunt eorum, qui oderunt eos.

Et tribulaverunt eos inimici eorum , &

humiliati sunt sub manibus eorum: s̄æpe li-
beravit eos.

Ipsi autem exacerbaverant eum in con-
silio tuo: & humiliati sunt in iniquitatibus
suis.

Et vidit cùm tribularentur , & audivit
orationem eorum.

Et memor fuit testamenti sui: & pœni-
tuit eum secundùm multitudinem miseri-
diae suæ.

Et dedit eos in misericordias: in conspe-
ctu omnium: qui ceperant eos.

Salvos nos fac Domine Deus noster :
& congrega nos de nationibus.

Ut confiteamur nomini sancto tuo : &
gloriemur in laude tua.

Benedictus Dominus Deus Israël à sa-
culo & usque in sæculum : & dicet omnis
populus, Fiat, fiat.

PSALMUS 106.

Confitemini Domino quoniam bonus
C quoniam in sæculum misericordia e-
jus.

Di-

Dicant qui redempti sunt à Domino,
quos redemit de manu inimici : & de re-
gionibus congregavit eos.

A solis ortu & occatu : ab aquilone &
mari.

Erraverunt in solitudine in inaquoso :
viam civitatis habitaculi non invenerunt.

Esurientes, & sitiientes : anima eorum
in ipsis defecit.

Et claimaverunt ad Dominum cùm
tribularentur : & de necessitatibus eorum
eripuit eos.

Et deduxit eos in viam rectam, utirent
in civitatem habitationis.

Confiteantur Domino misericordiæ
ejus & mirabilia ejus filiis hominum.

Quia satiavit animam inanem : & ani-
mam esurientem satiavit bonis.

Sedentes in tenebris & umbra mortis :
vinclitos in mendicitate, & ferro.

Quia exacerbaverunt eloquia Dei : &
consilium altissimi irritaverunt.

Et humiliatum est in laboribus cor-
eorū infirmati sunt, nec fuit qui adjuvaret.

Et clamaverunt ad Dominum cùm tribularentur: & de necessitatibus eorum liberavit eos.

Et eduxit eos de tenebris, & umbra mortis: vincula eorum disrupti.

Confiteantur Domino misericordiæ ejus: & mirabilia ejus filiis hominum.

Quia contrivit portas æreas: & vectes ferreos confregit.

Suscepit eos de via iniquitatis eorum: propter injusticias enim tuas humiliati sūt.

Omnem escam abominata est anima eorum: & appropinquaverunt usque ad portas mortis.

Et clamaverunt ad Dominum cùm tribularentur: & de necessitatibus eorum liberavit eos.

Misit verbum suum, & sanavit eos: & eripuit eos de interitionibus eorum.

Confiteantur Domino misericordiæ ejus & mirabilia ejus filiis hominum.

Et sacrificent sacrificium laudis: & annuntient opera ejus in exultatione.

Qui descendunt mare in navibus: facientes operationem in aquis multis.

PSALMORUM.

199

Ipsi viderunt opera Domini: & mirabilia ejus in profundo.

Dixit, & stetit spiritus procellæ: & exaltati sunt fluctus ejus.

Ascendunt usque ad cœlos, & descendunt usque ad abyssos: anima eorum in malis tabescet.

Turbati sunt, & moti sunt, sicut ebrius & omnis sapientia eorum devorata est.

Et clamaverunt ad Dominum cùm tribularentur: & de necessitatibus eorum eduxit eos.

Et statuit procellam ejus in auram: & siluerunt fluctus ejus.

Et lætati sunt quia siluerunt: & deduxit eos in portum voluntatis eorum.

Confiteantur Domino misericordiæ ejus: & mirabilia ejus filii hominum.

Exaltent eum in Ecclesia plebis: & in cathedra seniorum laudent eum.

Posuit flumina in desertum: & exitus aquarum in sitim.

Terram fructiferam in salsa sanguinem: à malitia inhabitantium in ea.

N

Posu.

Posuit desertum in stagna aquarum : & terram sine aqua in exitus aquarum.

Et collocavit illic eturientes : & consti-
tuerunt civitatem habitationis.

Et seminaverunt agros, & plantaverunt
vineas: & fecerunt fructum nativitatis.

Et benedixit eis , & multiplicati sunt ni-
mis & jumenta eorum non minoravit.

Et pauci facti sunt : & vexati sunt à tri-
bulatione malorum, & dolore.

Effusa est contemptio super principes :
& errare fecit eos in invio , & non in via.

Et adjuvit pauperem de inopia & posuit
sicut oves familias.

Videbunt recti, & latabuntur: & omnis
iniquitas oppilabit os suum.

Quis sapiens & custodiet hæc : & intel-
liget misericordias Domini?

PSALMUS 107.

Paratum cor meum, Deus , paratum
cor meum cantabo, & psallam in glo-
ria mea.

Exurge gloria mea, exurge psalterium,
&

& cithara: exurgam diluculo.

Confitebor tibi in populis Domine: &
psallam tibi in nationibus.

Quia magna est super cœlos misericor-
dia tua: & usque ad nubes veritas tua.

Exaltare super cœlos Deus, & super om-
nem terram gloria tua: ut liberentur dile-
cti tui.

Salvum fac dextera tua, & exaudi me
Deus locutus est in sancto suo.

Exultabo, & dividam Sichimam: & con-
vallem tabernaculorum dimetiar.

Meus est Galaad, & meus est Manasses:
& Ephraim susceptio capit is me i.

Juda rex meus : Moab lebes spei meæ.

In Idumæam extendam calceamen-
tum meum : mihi alienigenæ amici facti
sunt.

Quis deducet me in civitatem muni-
tam? quis deducet me usque in Idumæam?

Nonne tu Deus qui repulisti nos : &
non exhibis Deus in virtutibus nostris?

Da nobis auxilium de tribulatione: quia
vana salus hominis,

In Deo faciemus virtutem: & ipse ad nihilum deducet inimicos nostros.

PSALMUS 108.

Deus laudem meam ne tacueris: quia os peccatoris, & os dolosi super me apertum est.

Locuti sunt adversum me lingua dolo-
sa, & sermonibus odii circumdederunt
me, & expugnaverunt me gratis.

Pro eo ut me diligerent, detrahebant
mihi: ego autem orabam.

Et posuerunt adversum me mala pro
bonis: & odium pro dilectione mea.

Constitue super eum peccatorem: &
diabolus stet a dextris ejus.

Cum judicatur, exeat condemnatus, &
oratio ejus fiat in peccatum.

Fiant dies ejus pauci, & episcopatum ejus accipiat alter.

Fiant filii ejus orphani: & uxor ejus vi-
dua.

Nutantes transferantur filii ejus, & men-
dicent: & ejiciantur de habitationibus suis.

Scrutetur foenerator omnem substanti-

am

PSALMORUM.

203

am ejus: & diripient alieni labores ejus.

Non sit illi adjutor: nec sit qui misereatur pupillis ejus.

Fiant nati ejus in interitum: in generazione una deleatur nomen ejus.

In memoriam redeat iniquitas patrum ejus in conspectu Domini: & peccatum matris ejus non deleatur.

Fiant contra Dominum semper, & dispereat de terra memoria eorum: pro eo quod non est recordatus facere misericordiam.

Et persecutus est hominem inopem, & mendicum: & compunctum corde mortificare.

Et dilexit maledictionem, & veniet ei: & noluit benedictionem, & elongabitur ab eo.

Et induit maledictionem sicut vestimentum: & intravit sicut aqua in interiora ejus, & sicut oleum in ossibus ejus.

Fiat ei sicut vestimentum, quo operitur: & sicut zona, qua semper præcingitur.

Hoc opus eorum, qui detrahunt mihi apud Dominum: & quiloquuntur mala

N 6

adver-

adversus animam meam.

Et tu Domine, Domine, fac mecum
propter nomen tuum: quia suavis est misericordia tua.

Libera me, quia egenus, & pauper ego
sum: & cor meū cōturbatum est intra me.

Sicut umbra cūm declinat, ablatus sum:
& excusus sum sicut locustæ.

Genua mea infirmata sunt à jejunio: &
caro mea immutata est propter oleum.

Et ego factus sum opprobrium illis: vi-
derunt me, & moverunt capita sua.

Adjuva me Domine Deus meus: sal-
vum me fac secundum misericordiam tuam.

Et sciant quia manus tua hæc: & tu Do-
mine fecisti eam.

Maledicent illi: & tu benedices: qui
insurgunt in me, confundantur, servus au-
tem tuus lætabitur.

Induantur, qui detrahunt mihi, pudore:
& operiātur sicut deplorat cōfusionem suā.

Confitebor Domino nimis in ore meo:
& in medio multorum laudabo eum.

Qui astitit à dextris pauperis: ut sal-
vum

vum faceret à persequentibus animam
meam.

PSALMUS 109.

Dixit Dominus Domino meo : sede à
dextris meis.

Donec ponam inimicos tuos : scabel-
lum pedum tuorum.

Virgam virtutis tuæ emittet Dominus
ex Sion : dominare in medio inimicorum
tuorum.

Tecum principium in die virtutis tuæ
in splendoribus sanctorum : ex utero ante
luciferum genui te.

Juravit Dominus, & non pœnitabit e-
um : tu es sacerdos in æternum secundum
ordinem Melchisedech.

Dominus à dextris tuis : confregit in die
iræ suæ reges.

Judicabit in nationibus , implebit rui-
nas : conquassabit capita in terra multo-
rum.

De torrente in via bibet : propterea ex-
altabit caput.

PSALMUS 110.

Confitebor tibi Domine in toto corde meo: in consilio justorum & congregatione.

Magna opera Domini: exquisita in omnes voluntates ejus.

Confessio & magnificentia opus ejus: & justitia ejus manet in saeculum saeculi.

Memoriam fecit mirabilem suorum, misericors & miserator Dominus: escam dedit timentibus se,

Memor erit in saeculum testamenti sui: virtutem operum suorum annuntiabit populo suo.

Ut det illis hereditatem gentium: opera manuum ejus veritas, & judicium.

Fidelia omnia mandata eis, confirmata in saeculum saeculi: facta in veritate & aequitate.

Redemptionem misit Dominus populo suo: & mandavit in eternum testamentum suum.

Sanctum & terribile nomen ejus: initium

um

um sapientiae timor Domini.

Intelle^ctus bonus omnibus facientibus
eum : laudatio ejus manet in s^aeculum s^a-
culi. Gloria ribi Trinitas, etc. Te Deum Patrem etc.
Confundantur et reverentur inimici mei qui quadrunt animas
Adiutor, et liberator meus ero, Domine ne tardaveris.

P SALMUS III.

Reple os meum laude, etc. Deus in adjutorium meum etc.
Beatus vir qui timet Dominum : in
mandatis ejus volet nimis.

Potens in terra erit semen ejus: genera-
tio rectorum benedicitur.

Gloria & divitiae in domo ejus: & Justi-
tia ejus manet in s^aeculum s^aculi.

Exortum est in tenebris lumen rectis :
misericors, & miserator & justus.

Jucundus homo qui miseretur & com-
modat; disponet sermones suos in iudicio:
quia in æternum non commovebitur.

In memoria æterna erit Justus: ab audi-
tione mala non timebit.

Paratum cor ejus sperare in Domino
confirmatum est cor ejus: non commove-
bitur: donec despiciat inimicos suos.

Dispersit, dedit pauperibus, Justitia e-
jus manet in s^aeculum s^aculi : cornu ejus
exal.

exaltabitur in gloria.

Peccator videbit, & irascetur, dentibus
tuis fremet & tabescet: desiderium pecca-
torum peribit.

PSALMUS 112.

LAUDATE pueri Dominum: laudate
nomen Domini.

Sit nomen Domini benedictum: ex
hoc nunc, & usque in s̄eculum.

A solis ortu usque ad occasum: laudabi-
le nomen Domini.

Excelsus super omnes gentes Dominus:
& super c̄elos gloria ejus.

Quis sicut Dominus Deus noster, qui in
altis habitat: & humilia respicit in cōclo &
in terra.

Sulcitans à terra inopem: & de stercore
erigens pauperem.

Ut collocet eum cum principibus: cum
principibus populi sui.

Qui habitare facit sterilem in domo:
matrem filiorum lātantem.

PSAL-

IN exitu Israël de Ægypto: domus Jacob
de populo barbaro.

Facta est Iudæa sanctificatio ejus Isra-
ël potestas ejus.

Març vidit & fugit: Jordanis conversus
est retrorsum.

Montes exultaverunt ut arietes: & col-
les sicut agni ovium.

Quid est tibi mare quod fugisti : & tu
Jordanis, quia conversus es retrorsum?

Montes exultastis sicut arietes: & colles
sicut agni ovium.

A facie Domini mota est terra: à facie
Dei Jacob.

Qui convertit petram in stagna aqua-
rum: & rupem in fontes aquarum.

Non nobis Domine non nobis: sed no-
mini tuo da gloriam.

Super misericordia tua & veritate tua :
ne quando dicant gentes, ubi est Deus eo-
rum.

Deus autem noster in cœlo omnia qua-
cunque voluit fecit.

O

Si-

Simulachra gentium argentum & aurum: opera manuum hominum.

Os habent & non loquentur : oculos habent, & non videbunt.

Aures habent , & non audient : narces habent, & non odorabunt.

Manus habent, & non palpabunt : pedes habent, & non ambulabunt: non clamabunt in gutture suo.

Similes illis fiant qui faciunt ea: & omnes confidunt in eis.

Dominus Israël speravit in Domino : adjutor eorum & protector eorum est.

Domus Aaron speravit in Domino : adjutor eorum & protector eorum est.

Qui timent Dominum, speraverunt in Domino: adjutor eorum & protector eorum est.

Dominus memor fuit nostri: & benedixit nobis.

Benedixit domui Israel: benedixit domui Aaron.

Benedixit omnibus qui timent Dominum: pusillis cum majoribus.

Ad-

PSALMORUM.

211

Adjiciat Dominus super vos: super vos
& super filios vestros.

Benedicti vos à Domino: qui fecit cœ-
lum, & terram.

Cœlum cœli Domino : terram autem
dedit filiis hominum.

Non mortui laudabunt te Domine ne-
que omnes, qui descendunt in infernum.

Sed nos qui vivimus, benedicimus Do-
mino: ex hoc nunc & usque in sæculum.

PSALMUS 114.

Dilexi quoniam exaudiet Dominus
vocem orationis meæ.

Quia inclinavit aurem suam mihi : &
in diebus meis invocabo.

Circumdederunt me dolores mortis :
& pericula inferni invenerunt me,

Tribulationem & dolorem inveni : &
nomen Domini invocavi.

O Domine libera animam meam: mi-
sericors Dominus, & justus, & Deus no-
ster miseretur.

Custodiens parvulos Dominus: humili-

O 2

hiatus

liatus sum, & liberavit me.

Converte re anima mea in requiem tu-
am quia Dominus benefecit tibi.

Quia er ipuit animam meam de morte :
oculos meos à lachrymis , pedes meos à
lapſu.

Placebo Domino in regione vivorum.

PSALMUS 115.

CRedidi, propter quod locutus sum :
ego autem humiliatus sum nimis.

Ego dixi in excessu meo : omnis homo
mendax.

Quid retribuam Domino : pro omnibus,
quæ retribuit mihi?

Calicem salutaris accipiam : & nomen
Domini invocabo.

Vota mea Domino reddam coram
omni populo ejus : pretiosa in conspectu
Domini mors sanctorum eus.

O Domine quia ego servus tuus : ego
servus tuus, & filius ancillæ tuæ.

Dirupisti vincula mea: tibi sacrificabo
hostiam laudis, & nomen Domini invoca-
bo.

Vota

PSALMORUM.

213

Vota mea Domino reddam in conspe-
ctu omnis populi e[st] us in atriis domūs Do-
mini, in medio tui Hierusalem.

PSALMUS 116.

LAUDATE Dominum omnes gentes :
laudate eum omnes populi.

Quoniam confirmata est super nos mi-
ericordia ejus : & veritas Domini manet
in æternum.

PSALMUS 117.

CONSITEMINI Domino quoniam bo-
nus, quoniam in sæculum misericor-
dia ejus.

Dicat nunc Israel quoniam bonus: quo-
niā in sæculum misericordia ejus.

Dicat nunc domus Aarān: quoniam in
sæculum misericordia ejus.

Dicant nunc omnes qui timent Do-
minum quoniam in sæculum misericordia
ejus.

Detribulatione invocavi Dominum, &
exaudivit me in latitudinem Dominus

Dominus mihi adiutor : non timebo
quid faciat mihi homo.

O 3

Domi-

Dominus mihi adiutor: & ego despici-
am inimicos meos.

Bonum est confidere in Domino quām
confidere in homine.

Bonum est sperare in Domino : quām
sperare in principib⁹.

Omnēs gentes circuerunt me & in no-
mine Domini quia ultus sum in eos.

Circumdantes circumdederunt me: &
in nomine Domini quia ultus sum in e-
os.

Circumdederunt me sicut apes: & ex-
arserunt sicut ignis in spinis: & in nomine
Domini quia ultus sum in eos.

Impulsus eversus sum ut caderem: & Do-
minus suscepit me.

Fortitudo mea, & laus mea Dominus
& factus est mihi in salutem.

Vox exultationis, & salutis: in taberna-
culis justorum.

Dextera Domini fecit virtutem: dext-
era Domini exaltavit me: dextera Domi-
ni fecit virtutem.

Non moriar , sed vivam : & narrabo
ope-

opera Domini.

Castigans castigavit me Dominus : & morti non tradidit me.

Aperite mihi portas justitiae , ingressus in eas confitebor Domino: hæc porta Domini, Justi intrabunt in eam.

Confitebor tibi quoniam exaudisti me & factus es mihi in salutem.

Lapidem quem reprobaverunt adfici-
cantes hic factus est in caput anguli.

A Domino factum est istud: & est mi-
rabile in oculis nostris.

Hæc est dies quam fecit Dominus : ex-
ultemus, & lætemur in ea.

○ Domine salvum me fac , ô Domine
bene prosperare : benedictus qui venit in
nomine Domini.

Benediximus vobis de domo Domini
Deus Dominus, & illuxit nobis.

Constituite diem solemnem in con-
densis usque ad cornu altaris.

Deus meus es tu , & confitebor tibi
Deus meus es tu, & exaltabo te.

Confitebor tibi, quoniam exaudisti me:

& factus es mihi in salutem.

Confitemini Domino quoniam bonus: quoniam in sacerdotalium misericordia eius.

PSALMUS 118.

Beatи immaculati in via , qui ambulant in lege Domini.

Beati, qui scrutantur testimonia ejus : in toto corde exquirunteum.

Non enim qui operiantur iniquitatem : in viis ejus ambulaverunt.

Tu mandasti mandata tua custodiri nimis.

Utinam dirigantur viæ meæ ad custodiendas Justificationes tuas

Tunc non confundar: cum perspexero in omnibus mandatis tuis.

Confitebor tibi in dilectione cordis in eo quod didici Judicia Justitiae tuæ.

Justificationes tuas custodiam: non me derelinquas usque quaque.

In quo corrigit adolescentior viam suam? in custodiendo sermones tuos.

In toto corde meo exquisivite: ne re-
pel-

pellas me à mandatis tuis.

In corde meo abscondi eloquia tua :
ut non peccem tibi.

Benedictus es Domine : doc me Justifi-
cationes tuas.

In labiis meis : pronuntiavi omnia Ju-
dicia oris tui,

In via testimoniorum tuorum delecta-
tus sum sicut in omnibus divitiis.

In mandatis tuis exercebor : & consi-
derabo vias tuas.

In Justificationibus tuis meditabor :
non obliviscar sermones tuos.

Retribue servo tuo, vivifica me : & cu-
stodiam sermones tuos.

Revela oculos meos : & considerabo
mirabilia de lege tua.

Incola ego sum in terra : non abscondas
à me mandata tua.

Concupivit anima mea desiderare Ju-
stificationes tuas : in omni tempore.

Increpasti superbos : maledicti qui de-
clinant à mandatistuis.

Aufer à me opprobrium & contemp-

O 5

tum.

tum quia testimonia tua exquisivi.

Etenim sederunt principes , & adversum me loquebantur: servus autem tuus exercebatur in justificationibus tuis.

Nam & testimonia tua meditatio mea est,& consilium meum justificationes tuæ.

ADhæsit pavimento anima mea: vivifica me secundùm verbum tuum.

Vias meas enuntiavi,& exaudisti me: docce me justificationes tuas.

Viam justificationum tuarum instrue me:& exercebor in mirabilibustuis.

Dormitavit anima mea præ tædio , confirmata me in verbis tuis.

Viam iniqutatis amove à me: & delege tua miserere mei.

Viam veritatis elegi.: judicia tua non sum oblitus.

Adhæsit testimonialis tuis Domine: noli me confundere.

Viam mandatorum tuorum cucurri : cum dilatasti cor meum.

LEgem pone mihi Domine viam justificationum tuarum:& exquiram eam semper.

Da

Dam mihi intellectum, & scrutabor legem tuam, & custodiam illam in toto corde meo.

Deduc me in semitam mandatorum tuorum: quia ipsam volui.

Inclina cor meum in testimonia tua: & non in avaritiam.

Averte oculos meos ne videant vanitatem, in via tua vivifica me.

Statue servo tuo eloquium tuum: in timore tuo.

Amputa opprobrium meum, quod suspicatus sum quia judicia tua jucunda.

Ecce concupivi mandata tua, in quietate tua vivifica me.

E T veniat super me misericordia tua Domine: salutare tuum secundum eloquium tuum.

Et respondebo exprobrantibus mihi verbum: quia speravi in sermonibus tuis.

Et ne auferas de ore meo verbum veritatis usquequaque: quia in judiciis tuis super speravi.

Et custodiam legem tuam semper:

in sæculum & in sæculum sæculi.

Et ambulabam in latitudine quia man-
data tua exquisivi

Et loquebar de testimoniis tuis in con-
spectu regum & non confundebar.

Et meditabar in mandatis tuis quæ di-
lexi.

Et levavi manus meas ad mandata tua
quæ dilexi : & exercebor in justificationi-
bus tuis.

MEmore esto verbi tui servo tuo : in
quo mihi spem dedisti.

Hæc me consolata est in humilitate
mea: quia eloquium tuum vivificavit me.

Superbi inique agebant usquequa que
allege autem tua non declinavi.

Memor fui judiciorum tuorum à sæ-
culo Domine: & consolatus sum.

Defectio tenuit me pro peccatoribus
erelinquentibus legem tuam.

Cantabiles mihi erant justifications
tuæ: in loco peregrinationis meæ.

Memor fui nocte nominis tui Domi-
ne: & custodivis legem tuam.

Hæc

PSALMORUM.

22

Hæc facta est mihi: quia justifications
tuas exquisivi.

Portio mea Domine: dixi custodire le-
gem tuam.

Deprecatus sum faciem tuam in toto
corde meo: miserere mei secundùm elo-
quium tuum.

Cogitavi vias meas: & converti pedes
meos in testimonia tua.

Paratus sum, & non sum turbatus: ut
custodiam mandata tua.

Funes peccatorum circumplexi sunt
me: & legem tuam non sum oblitus.

Mediā nocte surgebam ad confiten-
dum tibi: super judicia justificationis tuae.

Particeps ego sum omnium timentium
te: & custodientium mandata tua.

Misericordia tua Domine plena est
terra: justifications tuas doce me.

Bonitatem fecisti cum servo tuo Do-
mine: secundùm verbum tuum.

Bonitatem, & disciplinam, & scienti-
am doce me: quia mandatis tuis credidi.

Priusquam humiliarer, ego deliqui:
propte-

rea eloquium tuum custodivi.

Bonus es tu: & in bonitate tua doce me
justificationes tuas.

Multiplicata est super me iniquitas su-
perborum: ego autem in toto corde meo
scrutabor mandata tua.

Coagulatum est sicut lac cor eorum: e-
go verò legem tuam meditatus sum.

Bonum mihi, quia humiliasti me : ut
discam justificationes tuas.

Bonum mihi lex oris tui : super millia
auri & argenti.

Manus tuæ fecerunt me & blasphemave-
runt me: da mihi intellectum , &
discam mandata tua.

Qui timent te videbunt me & lætabun-
tur: quia in verba tua supersperavi.

Cognovi Domine quia æquitas judi-
cia tua: & in veritate tua humiliasti me.

Fiat misericordia tua ut consoletur me:
secundum eloquium tuum servo tuo.

Veniant mihi miserationes tuæ , & vi-
vam: quia lectua meditatio mea est.

Confundantur superbi, quia injustè ini-
quita-

quitatem fecerunt in me : ego autem exercebor in mandatis tuis.

Convertantur mihi timentes te: & qui noverunt testimonia tua.

Fiat cor meum immaculatum in justificationibus tuis: ut non confundar.

Defecit in salutare tuum anima mea : & in verbum tuum supersperavi.

Defecerunt oculi mei in eloquium tuum: dicentes, quando consolaberis me.

Quia factus sum sicut uter in pruina : justificationes tuas non sum oblitus.

Quot sunt dies servi tui: quando facies de persequentibus me judicium?

Narraverunt mihi iniqui fabulationes : sed non ut lex tua.

Omnia mandata tua veritas; iniquè persecuti sunt me, adjuva me.

Paulò minus consummaverunt me in terra: ego autē non dereliqui mandata tua.

Secundūm misericordiam tuam vivifica me: & custodiam testimonia oris tui.

In æternum Domine: verbum tuum permanet in cœlo.

In generationem & generationem veritas tua: fundasti terram, & permanet.

Ordinatione tuâ perseverat dies: quoniam omnia serviunt tibi.

Nisi quod lex tua meditatio mea est: tunc fortè periissem in humilitate mea.

In æternum non obliviscar justificationes tuas: quia in ipsis vivificasti me.

Tuus sum ego, salvum me fac: quoniam justifications tuas exquisivi.

Me expectaverunt peccatores ut perderent me: testimonia tua intellexi.

Omnis consummationis vidi finem: latum mandatum tuum nimis.

Quomodo dilexi legem tuam Domine: totâ die meditatio mea est.

Super inimicos meos prudentem me fecisti mandato tuo: quia in æternum mihi est.

Super omnes docentes me intellexi: quia testimonia tua meditatio mea est.

Super senes intellexi: quia mandata tua quaesivi.

Ab omni via mala prohibui pedes me-

A judiciis tuis non declinavi: quia tu legem posuisti mihi.

Quam dulcia faucibus meis eloquia tua super mel ori meo!

A mandatis tuis intellexi: propterea odivi omnem viam iniquitatis.

Lucerna pedibus meis verbum tuum:
& lumen semitis meis.

Juravi, & statui: custodire judicia justitiae tuae.

Humiliatus sum usquequaque Domine: vivifica me secundum verbum tuum.

Voluntaria oris mei beneplacita fac Domine: & judicia tua doce me.

Anima mea in manibus meis semper:
& legem tuam non sum oblitus.

Posuerant peccatores laqueum mihi
& de mandatis tuis non erravi.

Hereditate acquisivi testimonia tua in æternum: quia exultatio cordis mei sunt.

Inclinavi cor meum ad facientes justificationes tuas in æternum: propter retributionem.

Iniquos odio habui: & legē tuam dilexi.

Adjutor, & susceptor meus es tu : & in verbum tuum supersperavi.

Declinate à me maligni : & scrutabor mandata Dei mei.

Suscipe me secundùm eloquium tuum, & vivam : & non confundas me ab expectatione mea.

Adjuva me, & salvus ero : & meditabor in justificationibus tuis semper.

Sprevisti omnes discedentes à iudiciis tuis: quia injusta cogitatio eorum.

Prævaricantes reputavi omnes peccatores terræ: ideo dilexi testimonia tua.

Confige timore tuo carnes meas : à iudiciis enim tuis timui.

Feci iudicium & justitiam : non tradas me calumniantibus me.

Suscipe servum tuum in bonum : non calumnientur me superbi.

Oculi mei defecerunt in salutare tuum, & in eloquium justitiae tuæ.

Fac cum servo tuo secundùm misericordiam tuam: & justificationes tuas doce me.

Ser-

Servus tuus sum ego: da mihi intellectum, ut sciam testimonia tua.

Tempus faciendi Domine: dissipaverunt legem tuam.

Ideo dilexi mandata tua super aurum & topazion.

Propterea ad omnia mandata tua dirigebar: omnem viam iniquam odio habui.

Mirabilia testimonia tua: ideo scruta-
ta est anima mea.

Declaratio sermonum tuorum illuminat & intellectum dat parvulis.

Os meum aperui, & attraxi spiritum: quia mandata tua desiderabam.

Aspice in me, & miserere mei: secundum judicium diligentium nomen tuum.

Gressus meos dirige secundum elo-
quium tuum: & non dominetur mei omnis injustitia.

Redime me à calumniis hominum: ut custodiam mandata tua.

Faciem tuam illumina super servum tuum. & doce me justificationes tuas.

Exitus aquarum deduxerunt oculi mei:

quia non custodierunt legem tuam.

Justus es Domine : & rectum judicium
tuum.

J Mandasti justitiam testimonia tua: &
veritatem tuam nimis.

Tabescere me fecit zelus meus: quia ob-
liti sunt verba tua inimici mei.

Ignitum eloquium tuum vehemen-
ter: & servus tuus dilexit illud.

Adolescentulus sum ego & contemp-
tus: justificationes tuas non sum oblitus.

Justitia tua, Justitia in æternum: & lex
tua veritas.

Tribulatio, & angustia invenerunt me:
mandata tua meditatio mea est.

Aequitas testimonia tua in æternum
intellectum da mihi, & vivam.

Clamavi in toto corde meo , exaudi
me Domine: justificationes tuas re-
quiram.

Clamavi ad te, salvum me fac: ut custo-
diam mandata tua.

Præveni in maturitate, & clamavi: quia
in verba tua supersperavi.

Præ-

Prævenerunt oculi mei ad te diluctilo :
ut meditarer eloquia tua.

Vocem meam audi secundùm misericordiam tuam Domine : & secundùm judicium tuum vivifica me.

Appropinquaverunt persequentes me iniquitati; à lege autem tua lóge facti sunt.

Prope es tu Domine: & omnes viæ tuæ veritas.

Initio cognovi de testimoniis tuis: quia in æternum fundasti ea.

Vide humilitatem meam, & eripe me ,
quia legem tuam non sum oblitus.

Judica judicium meum, & redime me :
propter eloquium tuum vivifica me.

Longe à peccatoribus salus : quia justificationes tuas non exquisierunt.

Misericordiæ tuæ multæ Domine ; se-
cundùm judicium tuum vivifica me.

Multi qui persequuntur me , & tribu-
lant me à testimoniis tuis non declinavi.

Vidi prævaricantes, & tabescerebam: quia
eloquia tua non custodierunt.

Vide quoniam mandata tua dilexi Do-

mine in misericordia tua vivifica me.

Principium verborum tuorum veritas:
in aeternum omnia judicia justitiae tuae. ¶
Princlipes persecuti sunt me gratis : & a
verbis tuis formidavit cor meum.

Lætabor ego super eloquia tua: sicut qui
invenit spolia multa.

Iniquitatem odio habui , & abomina-
tus sum legem autem tuam dlexi.

Septies in die laudem dixi tibi super ju-
dicia justitiae tuæ.

Pax multa diligentibus legem tuam :
& non est illis scandalum.

Expectabam salutare tuum Domine :
& mandata tua dilexi.

Custodivit anima mea testimonia tua:
& dilexit ea vehementer.

Servavi mandata tua, & testimonia tua:
quia omnes viæ meæ in conspectu tuo.

APropinquet deprecatio mea in con-
spectu tuo Domine : juxta eloquium
tuum da mihi intellectum.

Intret postulatio mea in conspectu tuo:
secundum eloquium tuum eripe me.

Eru-

PSALMORUM.

231

Eructabunt labia mea hymnum: cùm
docueris me justificationes tuas.

Pronuntiabit lingua mea eloquium tu-
um: quia omnia mandata tua æquitas.

Fiat manus tua ut salvet me: quoniam
mandata tua elegi,

Concupivi salutare tuum Domine: &
lex tua meditatio mea est.

Vivet anima mea, & laudabit te: & ju-
dicia tua adjuvabunt me.

Erravit, sicut ovis, quæ periit quære ser-
vum tuum , quia mandata tua non sum
oblitus.

Gloria

CANTICVM GRADVVM.

PSALMUS. 119.

AD Dominum cùm tribularer clama-
vi, & exaudivit me.

Domine libera animam meam à labiis
iniquis & à lingua dolosa.

Quid detur tibi, aut quid apponatur ti-
bi ad linguam dolosam ?

Sagittæ potentis acutæ cum carbonibus
desolatoriis.

Heu mihi , quia incolatus meus pro-
longatus est , habitavi cum habitantibus
Ceda multum incola fuit anima mea.

Cum his qui oderunt pacem , eram pa-
cificus dum loquebar illis , impugnabant

me gratis . Gloria sibi Trinitas . Te Deum latrem .
N Conjugantur et revereantur inimici mei , aguerunt Animi .

N Adjutor meus et liberator meus es tu Dne ne tardaveris .

CANTICUM GRADUUM.

Reple os meum laude ut cantem gloriam tuam tota die
magnitudinem tuam quoniam tu Dne creasti me et addu-
xisti me ad hunc statum .

PSALMUS 120.

Adjutorum Nos irum in Nne Dni . Qui fecit etc
L Evavi oculos meos in montes : unde
veniet auxilium mihi .

Auxilium meum à Domino qui fecit
cœlum & terram .

Non det in commotionem pedem tu-
am neque dormiter qui custodit te .

Ecce non dormitabit neque dormiet
qui custodit Israël .

Dominus custodit te Dominus prote-
ctio tua super manum dexteram tuam .

Per diem sol non uret te , neque luna
per noctem .

Do-

Dominus custodit te ab omni malo :
custodiat animam tuam Dominus.

Dominus custodiat introitum tuum,
& exitum tuum: ex hoc nunc, & usque in
sæculum.

CANTICUM GRADUUM.

LÆtatus sum in his, quæ dicta sunt
mihi: in domum Domini ibimus.

Stantes erant pedes nostri: in atriis tuis
Hierusalem.

Hierusalem, quæ ædificatur ut civitas:
cujus participatio ejus in idipsum.

Illuc enim ascenderunt tribus, tribus
Domini: testimonium Israël ad confiten-
dum nomini Domini.

Quia illie sederunt sedes in judicio: se-
des super domum David.

Rogate quæ ad pacem sunt Hierusalem.
& abundantia diligentibus te.

Fiat pax in virtute tua: & abundantia in
turribus tuis.

Propter fratres meos, & proximos meos:
loquebar pacem de te.

Propter domum Domini Dei nostri,
quæsivi bona tibi.

CANTICVM GRADVVM.

PSALMUS 122.

Adtelevavi oculos meos: qui habitas in
cœlis.

Ecce sicut oculi servorum: in manibus
dominorum suorum.

Sicut oculi ancillæ in manibus domi-
næ suæ: ita oculi nostri ad Dominum De-
um nostrum, donec misereatur nostri.

Miserere nostri Domine, miserere no-
strí quia multum repleti sumus despectio-
ne.

Qui a multum repleta est anima nostra:
approbrium abundantibus, & despectio-
superbis.

CANTICVM GRADVVM.

PSALMUS 123.

Nisi quia Dominus erat in nobis, dicat
nunc

nunc Israel: nisi quia Dominus erat in nobis.

Cum exurerent hominus in nos: forte vivos declutissent nos.

Cum irasceretur furor eorum in nos : forsitan aqua absorbuisset nos.

Torrentem pertransivit anima nostra
forsitan pertransisset anima nostra aquam
intolerabilem.

Benedictus Dominus : qui non dedit
nos in captionem dentibus eorum.

Anima nostra sicut passer erecta est: de
laqueo venantium.

Laqueus contritus est : & nos liberati
sumus.

Adjutorium nostrum in nomine Do-
mini: qui fecit cœlum & terram.

CANTICVM GRADVVM.

PSALMUS 124.

Qui confidunt in Domino , sicut
mons Sion: non commovebitur in
æternum, qui habitat in Hierusalem.

Montes in circuitu ejus , & Dominus
in circuitu populi sui : ex hoc nunc

& usque in sæculum.

Quia non relinquit Dominus virgam
peccatorum super sortem justorum : ut
non extendant justi ad iniquitatem ma-
nus suas

Benefac Domine bonis & rebus cordis.
Declinantes autem in obligationes, ad-
ducet Dominus cum operantibus iniqui-
tatem pax super Israel.

CANTICUM GRADUUM.

PSALMUS 125.

IN convertendo Dominus captivitatem
Sion, facti sumus sicut consolati.

Tunc repletum est gaudio os nostrum
& lingua nostra exultatione.

Tunc dicent inter gentes : magnifica-
vit Dominus facere cum eis.

Magnificavit Dominus facere nobis-
cum facti sumus letantes.

Converte Domine captivitatem no-
stram. sicut torrens in austro.

Qui seminant in lachrymis, in exulta-
tione metent.

Euntes

PSALMORUM.

137

Euntibant & flebant: mittentes se-
mina sua.

Venientes autem venient cum exulta-
tione: portantes manipulos suos.

CANTICUM GRADUUM.

PSALMUS 126.

Nisi Dominus ædificaverit domum :
in vanum laboraverunt qui ædifi-
cant eam.

Nisi Dominus custodierit civitatem :
frustra vigilat qui custodit eam.

Vanum est vobis ante lucem surgere :
surgite postquam sederitis, qui mandu-
catis panem doloris.

Cum dederit dilectis suis somnum: ec-
ce hæreditas domini, filii; merces fructus
ventris.

Sicut sagittæ in manu potentis: ita filii
excusorum.

Beatus vir qui implevit desiderium su-
um ex ipsis: non confundetur cum loque-
tur inimicis suis suis in porta.

CAN-

CANTICUM GRADUUM.

PSALMUS 127.

Beatū omnes, qui timent Dominum
qui ambulant in viis ejus.

Labores manuum tuarum quia man-
ducabis: beatus es, & bene tibi erit.

Vxor tua sicut vitis abundans in lateri-
bus domus tuæ.

Filiī tui sicut novellæ olivarum: in circui-
tu mensæ tuæ.

Ecce sic benedicetur homo: qui timet
Dominum.

Benedicat tibi Dominus ex Sion. & vi-
deas bona Hierusalem omnibus diebus
vitæ tuæ.

Et videas filios filiorum tuorum pacem
super Israel.

CANTICUM GRADUUM.

PSALMUS 128.

Sæpe expugnaverunt me à juventute
mea; dicat nunc Israel.

Sæpe expugnaverunt me à Juventute
mea

PSALMORUM.

239

mea; etenim non potuerunt mihi.

Supra dorsum meum fabricaverunt,
peccatores: prolongaverunt iniquitatem
suam.

Dominus justus concidit cervices pec-
catorum: confundantur & convertantur
retrosum omnes, qui oderunt Sion.

Fiant sicut fœnum tectorum: quod pri-
usquam evellatur, exaruit.

De quo non implevit manum suam
qui metit, & sinum suum qui manipulos
colligit.

Et non dixerunt qui præteribant, be-
neditio Domini super vos: benediximus
vobis in nomine Domini.

CANTICUM GRADUUM.

PSALMUS 129.

De profundis clamavi ad te Domine:
Domine exaudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendentes: in vocem
deprecationis meæ.

Si iniquitates observaveris Domine;
Domine quis sustinebit?

Quia

Quia apud te propitiatio est: & propter
legem tuam sustinui te Domine.

Sustinuit anima mea in verbo ejus: spe-
ravit anima mea in Domino.

A custodia matutina usque ad noctem
sperat Israël in Domino.

Quia apud Dominum misericordia: &
copiosa apud eum redemptio.

Et ipse redimet Israël: ex omnibus ini-
quitatibus ejus.

CANTICUM GRADUUM.

PSALMUS 130.

Domine non est exaltatum cor me-
um: neque elati sunt oculi mei.

Neque ambulavi in magnis: neque in
mirabilibus super me.

Sinon humiliter sentiebam: sed exal-
tavi animam meam.

Sicut ablaetatus est super matre sua: ità
retributio in anima mea.

Speret Israël in Domino: ex hoc nunc
& usque in saeculum.

Gloria Trinitatis & qualis una Dei etante
omne saeculum et nunc et in perpetuum.
Deum patrem ingenitum Deum filium unigenitum Deum spiritum
S. Paraclytum S. et individuam Trinitatem toto corde et ore et

CAN-

*Confundit et reverentur iniicii mei quae sunt anima mea
ad iutor et liberator meus es tu Domine ne tardaveris.*

Replete PSALMORUM os meum laude 241 etc.

CANTICUM GRADUUM.

Deus in adjutor SALMUS 131. Domine ad adjuvandum.

Memento Domine David, & omnis
mansuetudinis ejus.

Sicut juravit Domino : votum vovit
Deo Jacob.

Si introiero in tabernaculum domus
meæ: si ascendero in lectum strati mei,

Si dedero somnum oculis meis : & pal-
pebris meis dormitionem.

Et requiem temporibus meis, donec
inveniam locum Domino: tabernaculum
Deo Jacob.

Ecce audivimus eam in Ephrata: inve-
nimus eam in campus sylvae.

Introibimus in tabernaculum ejus :
adorabimus in loco, ubi steterunt pedes e-
jus.

Surge Domine in requiem tuam: tu &
arca sanctificationis tuæ,

Sacerdotes tui induantur justitiam: &
sancti tui exultent.

Propter David servum tuum: non a-
vertas faciem Christi tui.

IIIID

Q

Jura-

Juravit Dominus David veritatem , &
non frustrabitur eum : de fructu ventris
tui ponam super sedem tuam.

Si custodierint filii tui testamentum
meum & testimonia mea hæc quæ doce-
bo eos.

Et filii eorum usque in sæculum : sede-
bunt super sedem tuam.

Quoniam elegit Dominus Sion : elegit
eam in habitationem sibi.

Hæc requies mea in sæculum sæculi :
hic habitabo quoniam elegi eam.

Viduam ejus benedicens benedicam :
pauperes ejus saturabo panibus.

Sacerdotes ejus induam salutari : &
sancti ejus exultatione exultabunt.

Illuc producam cornu David : paravi
lucernam Christo meo.

Inimicos ejus induam confusione : su-
per ipsum autem effloredit sanctificatio
mea.

CANTICUM GRADUUM.

PSALMUS 132

Ecce quam bonum , & quam iucun-
dum

PSALMORUM.

243

dum habitare fratres in unum.

Sicut unguentum in capite: quod descendit in barbam, barbam Aaron.

Quod descendit in oram vestimenti eius: sicut ros Hermon, qui descendit in montem Sion.

Quoniam illic mandavit Dominus benedictionem: & vitam usque in saeculum.

CANTICUM GRADUUM.

PSALMUS 133.

Ecce nunc benedicte Domino omnes servi Domini.

Qui statis in domo Domini: in atris domus Dei nostri

In noctibus extollite manus vestras in sancta: & benedicte Dominum.

Benedicat te Dominus ex Sion: qui fecit coelum & terram.

ALLELUJA.

PSALMUS 134.

Laudate nomen Domini: laudate servi Dominum.

Q 2.

Qui

Qui statis in domo Domini , in atriis
domus Dei nostri.

Laudate Dominum , quia bonus Do-
minus: psallite nomini ejus, quoniam suave.

Quoniam Jacob elegit sibi Dominus:
Israël in possessionem sibi.

Quia ego cognovi quod magnus est Do-
minus: & Deus noster præ omnibus diis.

Omnia quæcunque voluit , Dominus
fecit in cœlo; & in terra: in mari , & in om-
nibus abyssis.

Educens nubes ab extremo terræ : ful-
gura in pluviam fecit.

Qui producit ventos de thesauris suis :
qui percussit primogenita Ægypti ab ho-
mine usque ad pecus.

Et misit signa, & prodigia in medio tui
Ægypte: in Pharaonem , & in omnes ser-
vos ejus.

Qui percussit gentes multas: & occidit
reges fortes.

Schon regem Amorrhæorum, & Og re-
gem Basan: & omnia regna Chanaan.

Et dedit terram eorum hæreditatem :

ha-

hæreditatem Israël populo suo.

Domine nomen tuum in æternum :
Domine memoriale tuum in generati-
onem & generationem.

Quia iudicabit Dominus populum su-
um: & in servis suis deprecabitur.

Simulachra gentium, argentum & au-
rum: opera manuum hominum.

Oshabent, & non loquentur ; oculos
habent, & non videbunt.

Aures habent, & non audient: neque e-
nim est spiritus in ore ipsorum.

Similes illis fiant qui faciunt ea : & om-
nes qui confidunt in eis.

Dominus Israël benedicte Domino:
domus Aaron benedicte Domino,

Domus levi benedicte Domino: qui ti-
metis Dominum: benedicte Domino.

Benedictus Dominus ex Sion : qui ha-
bitat in Hierusalem.

ALLEGRIA.

PSALMUS 135.

Confitemini Domino quoniam bo-
nus
Q 3

nus quoniam in æternum misericordia ejus:

Confitemini Deo Deorum : quoniam
in æternum misericordia ejus.

Confitemini Domino Dominorum:
quoniam in æternum misericordia ejus.

Qui facit mirabilia magna solus : quo-
niam in æternum misericordia ejus.

Qui fecit cœlos in intellectu: quoniam
in æternum misericordia ejus.

Qui firmavit terram super aquas: quo-
niam in æternum misericordia ejus.

Qui fecit luminaria magna : quoniam
in æternum misericordia ejus.

Solem in potestatem diei : quoniam in
æternum misericordia ejus.

Lunam, & stellas in potestatem noctis
quotiam in æternum misericordia ejus.

Qui percussit Ægyptum cum primo-
genitis eorum : quoniam in æternum
misericordia ejus.

Qui eduxit Israel de medio eorum :
quoniam in æternum misericordia ejus.

In manu potenti, & brachio excelso :
quoniam in æternum misericordia ejus.

Qui

Qui divisit mare rubrū in divisiones :
quoniam in æternum misericordia ejus.

Et eduxit Israel per medium ejus ; quo-
niā in æternum misericordia ejus.

Et excussit Pharaonem , & virtutem e-
jus in mari rubro : quoniam in æternum
misericordia ejus.

Qui traduxit populum suum per de-
sertum : quoniam in æternum misericor-
dia ejus.

Qui percussit reges magnos : quoniam
in æternum misericordia ejus.

Et occidit reges fortes : quoniam in æ-
ternum misericordia ejus.

Sehon regem Amorrhæorum : quoni-
am in æternum misericordia ejus ,

Et Og regem Bašan : quoniam in æter-
num misericordia ejus.

Et dedit terram eorum hæreditatem :
quoniam in æternum misericordia eius.

Hæreditatem Israel servo suo quoniam
in æternum misericordia eius.

Quia in humilitate nostra memor fuit
nostrī quoniā in æternū misericordia e'us.

Et redemit nos ab inimicis nostris : quoni-

am in æternum misericordia ejus.

Qui dat eſcam omni carni : quoniam
in æternum misericordia ejus.

Confitemini Deo cœli: quoniam in
æternum misericordia ejus.

Confitemini Domino Dominorum:
quoniam in æternum misericordia ejus,

PSALMUS 136.

Super flumina Babylonis, illic sedimus
& fle vimus.dum recordare murtui Si-
on.

In salicibus in medio ejus : suspendimus
organa nostra.

Quia illic interrogaverunt nos, qui capti-
vos duxerunt nos : verba cantionum.

Et qui abduxerunt nos : hymnum can-
tate nobis de canticis Sion.

Quomodo cantabimus canticum Do-
mini : in terra aliena?

Si oblitus fuero tui Hierusalem : obli-
vionidetur dextera mea.

Adhæreat lingua mea faucibus meis , si
non meminerot tui.

Si

Si non proposuero Hierusalem in principio lætitiae meæ.

Memor esto Domine filiorum Edom:
in die Hierusalem

Qui dicunt, exinanite, exinanite: usque
ad fundamentum in ea:

Filia Babylonis misera: beatus qui retribuet
tibi retributionem tuam, quam retribuisti nobis.

Beatus, qui tenebit: & allidet parvulos
suos ad petram.

Confitebor tibi Domine in toto corde
meo: quoniam audisti verba oris
mei.

In conspectu Angelorum psallam tibi:
adorabo ad templum sanctum tuum, &
confitebor nomini tuo.

Super misericordia tua, & veritate tua:
quotiam magnificasti super omne nomen
sanctum tuum.

In quacunque die invocávero te, exaudi
me: multiplicabis in anima mea virtutē.

Confiteantur tibi Domine omnes re-

ges terræ: quia audierūt omnia verba oris
tui.

Et cantent in viis Domini: quoniam
magna est gloria Domini.

Quoniam excelsus Dominus, & humili-
lar espicit: & alta à longè cognoscit.

Si ambulavero in medio tribulationis,
vivificabis me: & super iram inimicorum
meorum extendisti manum tuam, & sal-
vum me fecit dextera tua.

Dominus retribuet pro me, Domine
misericordia tua in sæculum: opera m a-
nuum tuarum ne despicias.

PSALMUS 138.

Domine probasti me, & cognovisti
me: tu cognovisti lessionem meam,
& resurrectionem meam.

Intellexisti cogitationes meas de lon-
ge, semitam meam, & funiculum meum
investigasti.

Et omnes vias meas prævidisti: quia
non est sermo in lingua mea.

Ecce Domine tu cognovisti omnia.

no-

novissima & antiqua : tu formasti me , &
posuisti super me manum tuam.

Mirabilis facta est scientia tua ex me :
confortata est, & non potero ad eam.

Quo ibo à spiritu tuo : & quo à facie
tua fugiam?

Si ascendero in cœlum , tu illic es : si
descendero in infernum, ades.

Si sum psero pennas meas diluculo : &
habitavero in extremis maris.

Etenim illuc manus tua deducet me: &
tenebit me dextera tua.

Et dixi forsitan tenebræ cōculcabūt me:
& nox illuminatio mea in delicatis meis.

Quia tenebræ non obscurabuntur atque,
& nox sicut dies illuminabitur sicut tene-
bræ ejus, ita & lumen ejus.

Quia tu possedisti renes meos: suscep-
isti me de utero matris meæ.

Confitebor tibi, quia terribiliter mag-
nificatus es: mirabilia opera tua , & anima
mea cognoscit nimis.

Non est occultatum os meum à te ,
quod fecisti in occulto : & substantia

mea in inferioribus terræ.

Imperfectum meum viderunt oculi tui, & in libro tuo omnes scribentur: dies formabuntur, & nemo in eis.

Mihi autem nimis honorificati sunt amici tui Deus: nimis confortatus est principatus eorum.

Dinumerabo eos, & super arenam multiplicabuntur: exurrexi, & adhuc sum tecum.

Si occideris Deus peccatores: viri sanguinum declinate à me.

Quia dicitis in cogitatione accipient in vanitate civitates tuas.

Nonne qui oderunt te Domine, oderam & super inimicos tuos tabescbam.

Perfecto odio oderam illos: inimici facti sunt mihi.

Proba me Deus: & scito cor meum: interroga me, & cognosce semitas meas.

Et vide, si via iniquitatis in me est & deduc me in via æterna.

PSALMUS 139.

ERipe me Domine ab homine malo :

à

à viro iniquo eripe me.

Qui cogitaverunt iniquitates in corde,
tota die constituebant prælia.

Acuerunt linguas luas sicut serpentis
venenum aspidum sub labiis eorum

Custodi me Domine de manu pecca-
toris: & ab hominibus inquis eripe me.

Qui cogitaverūt supplātare gressus meos
absconderunt superbi laqueum mihi.

Et funes extenderunt in laqueum jux-
ta iter scandalum posuerunt mihi.

Dixi Domino, Deus meus es tu: exau-
di Domine vocem deprecationis meæ.

Domine, Domine virtus salutis meæ:
obumbrasti super caput meū in die belli.

Ne tradas me Domine à desiderio meo
peccatori: cogitaverunt contra me , ne
derelinquas me, ne forte exalentur.

Caput circuitus eorum : labor labio-
rum ipsorum operiet eos.

Cadent super eos carbones , in ignem
dejicies eos: in miseriis non subsistent.

Vir linguosus non dirigetur in terra :
virum injustum mala capient in interitu.

Cog-

Cognovi quia faciet Dominus judicium in opis: & vindictam pauperum.

Veruntamen justi confitebuntur nomini tuo & habitabunt recti cū vultu tuo.

PSALMUS 140.

Domine clamavi ad te, exaudi me: intēde vocimæ, cū clamaverō ad te.

Dirigatur oratio mea sicut incensum in conspectu tuo: elevatio manuum mearum sacrificium vespertinum

Pone Domine custodiam ori meo: & ostium circumstantiæ labiis meis.

Non declines cor meum in verba malitiæ: ad excusadas excusations in peccatis.

Cum hominibus operantibus iniqutatem: & non communicabo cum electis eorum.

Corripet me justus in misericordia, & increpat me: oleum autem peccatoris non impinguerat caput meum.

Quoniam adhuc & oratio mea in benoplacitis eorum: absorpti sunt juncti petræ iudices eorum.

Audent verba mea, quoniam potuerunt:

runt: sicut crassitudo terræ erupta est su-
per terram.

Dissipata sunt ossa nostra secus infernum
quia ad te Domine, Domine oculi mei,
in te speravi: non auferas animam meam.

Custodi me à laqueo, quem statuerunt
mihi: & à scandalis operantium iniquita-
tem.

Cadent in retiaculo ejus peccatores :

singulariter sum ego, donec transeam. *Gloria Tibi*

V. Confundantur SALMUS. 141. *& Adjutor meus et liberans*

Reple 85 meum etc. *Adjutorium nostrum etc*

VOce mea ad Dominum clamavi: vo-

ce mea ad Dominum deprecatus sum.

Effundo in conspectu ejus orationem
meam: & tribulationem meam ante ip-
sum pronuntio.

In deficiendo ex me spiritum meum :
& tu cognovisti semitas meas.

In via hac qua ambulabam: absconde-
runt laqueum mihi.

Considerabam ad dexteram, & vide-
bam: & non erat qui cognosceret me.

Periit fuga à me: & non est qui requi-
rat animam meam.

Cl-

Clamavi ad te Domine, dixi : tu es spes mea, portio mea in terra viventium.

Intende ad deprecationem meam quia humiliatus sum nimis.

Libera me à persequenti bus me : quia confortati sunt super me.

Educ de custodia animam meam ad confitendum nomini tuo : me expectant justi donec retribuas mihi.

PSALMUS 141.

Domine exaudi orationem meam , auribus percipe oblationem meam, in veritate tua exaudi me in tua justitia.

Et non intres in judicium cùm servo tuo : quia non justificabitur in conspectu tuo omnis vivens.

Quia persecutus est inimicus animam meam : humiliavit in terra vitam meam.

Collocavit me in obscuris sicut mortui os saeculi & anxiatus est super me spiritus meus, in me turbatum est cor meum.

Memor fui dierum antiquorum, meditatus sum in omnibus operibus tuis : in

fa-

factis manuum tuarum meditabar.

Expandi manus meas ad te: anima mea
sicut terra sine aqua tibi.

Velociter exaudi me Domine: defecit
spiritus meus.

Non avertas faciem tuam a me: & si-
milis ero descendenteribus in lacum.

Auditam fac mihi manè misericordi-
am tuam: quia in te speravi.

Notam fac mihi viam, in qua ambu-
lem: quia ad te levavi animam meam.

Eripe me de inimicis Domine, ad te
confugi: doce me facere voluntatem tu-
am, quia Deus meus es tu.

Spiritus tuus bonus deducet me in ter-
ram rectam: propter nomen tuum Do-
mine vivificabis me in æquitate tua.

Educes de tribulatione anima meam :
in misericordia tua disperdes inimicos
meos.

Et perdes omnes qui tribulant animam
meam : quoniam ego servus tuus
sum.

Benedictus Dominus Deus meus, qui docet manus meas ad prælium : & digitos meos ad bellum.

Misericordia mea & refugium meum: susceptor meus, & liberator meus.

Protector meus, & in ipso speravi: qui subdit populum meum sub me.

Domine quid est homo, quia innocuisti eum? aut filius hominis, quia reputas eum?

Homo vanitati similis est: dies ejus sicut umbra prætereunt.

Domine inclina cœlos tuos , & descede: tange montes & fumigabunt.

Fulgura coruscationem , & dissipabis eos: emitte sagittas tuas , & conturbabis eos.

Emitte manum tuam de alto , eripe me, & libera me de aquis multis: de manu filiorum alienorum.

Quorum os locutum est vanitatem : & dextera eorum, dextera iniquitatis.

Deus canticum novum cantabo tibi :

in psalterio decachordo psallam tibi.

Qui das salutem regibus: qui redemi-
sti David servum tuum, de gladio malig-
no eripe me.

Et erue me de manu filiorum alieno-
rum, quorum os locutum est vanitatem :
& dextera eorum dextera iniquitatis.

Quorum filii sicut novellæ plantatio-
nes in juventute sua.

Filiæ eorum compositæ circum orna-
tæ, ut similitudo templi.

Promptuaria eorum plena: & eructan-
tia ex hoc in illud.

Oves eorum fœtosæ, abundantes in e-
gressibus suis: boves eorum crassæ.

Non est ruina maceriaræ: neque transi-
tus, neque clamor in plateis eorum.

Beatum dixerunt populum , cui hæc
sunt: beatus populus, cuius Dominus De-
us ejus.

PSALMUS 144.

EXaltabo te Deus meus rex : & bene-
dicam nomini tuo in sæculū & in sa-

culum sæculi.

Per singulos dies benedicam tibi : &
laudabo nomen tuum in sæculum, & in
sæculum sæculi.

Magnus Dominus & laudabilis nimis,
& magnitudinis ejus non est finis.

Generatio & generatio laudabit ope-
rat tua: & potentiam tuam pronuntiabunt.

Magnificentiam gloriæ sanctitatis tuæ
loquentur: & mirabilia tua narrabunt.

Et virtutem terribilium tuorum dicet:
& magnitudinem tuam narrabunt.

Memoriam abundantiaæ suavitatis tuæ
eructabunt: & justitia tua exultabunt.

Miserator & misericors Dominus: pati-
ens & multum misericors.

Suavis Dominus universis: & miserati-
ones ejus super omnia opera ejus.

Confiteantur tibi Domine omnia o-
pera tua: & sancti tui benedicant tibi.

Gloriam regnit tui dicent: & potentiam
tuam loquentur.

Ut notam faciant filii hominum po-
tentiam tuam: & gloriam magnificentiaæ
regni

regni tui.

Regnum tuum regnum omnium seculorum: & dominatio tua in omni generatione & generatione.

Fidelis Dominus in omnibus verbis suis & sanctus in omnibus operibus suis.

Allevat Dominus omnes qui corrunt: & erigit omnes elisos.

Oculi omnium intesperant Domine: & tu das escam illorum in tempore opportuno.

Aperis tu manum tuam: & imples omnem animal benedictione.

Justus Dominus in omnibus viis suis: & sanctus in omnibus operibus suis.

Prope est Dominus omnibus invocantibus eum: omnibus invocantibus eum in veritate.

Voluntatem timentium se faciet: & deprecationem eorum exaudiet, & salvos faciet eos.

Custodit Dominus omnes diligentes se: & omnes peccatores disperdet.

Laudationem Domini loquetur os

R 3 meum

meum: & benedicat omnis caro nomini
sæcto ejus in sæculum, & in sæculum sæcu-
li.

PSALMUS 145.

LAUDA anima mea Dominum, lauda-
bo Dominum in vita mea: psallam
Deo meo quændiu fvero.

Nolite confidere in principibus: in filiis
hominum, in quibus non est salus.

Exibit spiritus ejus, & revertetur in ter-
ram Iuam: in illa die peribunt omnes co-
gitationes eorum.

Beatus, cuius Deus Jacob adjutor e-
jus, spes ejus in Domino Deo ipsius: qui
fecit cœlum & terram, mare, & omnia
quæ in eis sunt.

Qui custodit veritatem in sæculum ,
facit judicium injuriam patientibus: dat
escam esurientibus.

Dominus solvit compeditos: Domi-
nus illuminat cœcos

Dominus erigit elisos: Dominus dili-
git justos.

Domi-

Dominus custodit advenas, pupillum,
& viduam suscipiet : & vias peccatorum
disperdet.

Regnabit Dominus in sæcula Deus tu-
us Sion: in generationem & generationē.

PSALMUS 146.

LAUDATE Dominum, quoniam bonus
est psalmus: Deo nostro sit jucunda
decoraque laudatio.

Ædificans Hierusalem Dominus: dis-
persiones Israelis congregabit.

Qui sanat contritos corde : & alligat
contritiones eorum.

Qui numerat multitudinem stellarum
& omnibus eis nomina vocat.

Magnus Dominus noster, & magna
virtus ejus : & sapientia ejus non est nu-
merus.

Suscipiens manuetos Dominus: humi-
lians autem peccatores usque ad terram.

Præcinite Domino in confessione: psal-
lic Deo nostro in cithara.

Qui operit cœlum nubibus: & parat
terræ pluviam.

R 4

Qui

Qui producit in montibus fœnum : &
herbam servituti hominum.

Qui dat jumentis escam ipsorum : &
pullis corvorum invocantibus eum.

Non in fortitudine equi Voluntatem
habebit:nec in tibiis viri beneplacitum e-
rit ei.

Beneplacitum est Domino super ti-
mentes eum : & in eis qui sperant super
misericordia ejus.

PSALMUS 147.

LAUDA Hierusalem Dominum: lauda
Deum tuum Sion

Quoniam confortavit seras portarum
tuarum:benedixit filiis tuis in te.

Qui posuit fines tuos pacem : & adipe
frumenti satiate.

Qui emitte eloquium suum terræ :
velociter currit sermo ejus.

Qui dat nivem sicut lanam : nebulam
sicut cinerem spargit.

Mittit crystallum suam sicut buccellas?
ante faciem frigoris ejus quis sustinebit.

E-

PSALMORUM.

265

Emitte verbum suum, & liquefaciet
ea, flabit spiritus ejus, & fluent aquæ.

Qui annuntiat verbum suum Jacob :
justicias, judicia sua Israël.

Non fecit taliter omni nationi, & judi-
cia sua non manifestavit eis.

PSALMUS 148.

LAUDATE Dominum de cœlis : laudate
eum in excelsis.

Laudate eum omnes Angeli ejus : lau-
date eum omnes virtutes ejus.

Laudate eum sol & luna : laudate eum
omnes stellæ & lumen.

Laudate eum cœli cœlorum, & aquæ
omnes quæ super cœlos sunt, laudent no-
men Domini.

Quia ipse dixit, & facta sunt: ipse man-
davit, & creatæ sunt.

Statuit ea in æternum, & in sacerdolum
sæculi: præceptum posuit, & non præteri-
bit.

Laudate Dominum de terra : draco-
nes & omnes abyssi.

R. S.

Ignis,

Ignis, grando, nix, glacies, spiritus pro-cellarum: quæ faciunt verbum ejus.

Montes, & omnes colles: ligna fructi-fera, & omnes cedri.

Bestiæ, & universa pecora: serpentes, & volucres pennatæ.

Reges terræ, & omnes populi: princi-pes, & omnes judices terræ.

Juvenes, & virgines, senes, cum juniori-bus laudent nomen Domini: quia exal-tatum est nomen ejus solius.

Confessio ejus super cœlum & terram: & exaltavit cornu populi sui.

Hymnus omnibus sanctis ejus: filiis I-srael, populo appropinquantis sibi.

PSALMUS 149.

Cantate Domino canticum novum: claus ejus in Ecclesia sanctorum.

Lætetur Israel in eo, qui fecit eum: & filii Sion exultent in rege suo

Laudent nomen ejus in choro in tym-pano, & psalterio psallant ei.

Qui abeneplacitum est Domino in po-pulo

pulo suo: & exaltabit mansuetos in salutem.

Exultabunt sancti in gloria: lætabuntur in cubilibus suis.

Exaltationes Dei in gutture eorum: & gladii ancipites in manibus eorum.

Ad faciendam vindictam in nationibus: increpationes in populis.

Ad alligandos reges eorum in comedibus: & nobiles eorum in manicis ferreis.

Ut faciant in eis judicium conscriptum: gloria hæc est omnibus sanctis ejus.

PS ALMUS. 150.

LAUDATE Dominum in sanctis ejus laudate eum in firmamento virtutis ejus.

Laudate eum in virtutibus ejus laudate eum secundum multitudinem magnitudinis ejus.

Laudate eum in sono tubæ laudate eum in psalterio, & cithara.

Laudate eum in tympano, & choro laudate eum in chordis & organo.

R 6

Lau-

Laudate eum in cymbalis benesonan-
tibus : laudate eum in cymbalis jubilatio-
nis omnis spiritus laudet Dominum.

Gloria. Si si trinitas eti. & confundantur. Adjutor etc.

CANTICUM TRIUM PUEKORUM.

De profundis. Ps. 129. Requiem aeternam. cum Oratione Defunctorum.

Benedicite omnia opera Domini
Domino : laudate & super exaltate e-
um in saecula.

Benedicite Angeli Domini Domino :
benedicite caeli Domino.

Benedicite aquæ omnes quæ super
caelos sunt Domino : benedicite omnes
virtutes Domini Domino.

Benedicite sol & luna Domino : be-
nedicite stellæ caeli Domino.

Benedicite imber & ros Domino : be-
nedicite omnis spiritus Dei Domino.

Benedicite ignis & æstus Domino :
benedicite frigus & æstus Domino.

Benedicite rores & pruina Domino ,
benedicite gelu & frigus Domino.

Benedicite glacies & nives Domino ,
benedicite noctes & dies Domino.

Benedicite lux & tenebrae Domino ,
be-

benedicite fulgura & nubes Domino

Benedicat terra Dominum : laudet &
superexaltet eum in sæcula

Benedicite montes & colles Domino:
benedicite universa germinantia in terra
Domino.

Benedicite fontes Domino: benedici-
te maria & flumina Domino.

Benedicite cete & omnia quæ moventur
in aquis Domino: benedicite omnes
volucres cœli Domino.

Benedicite omnes bestiæ & pecora Do-
mino: benedicite filii hominum Domino.

Benedicat Israël Dominum : laudet &
superexaltet eum in sæcula.

Benedicite sacerdotes Domini Domi-
no, benedicite servi Domini Domino.

Benedicite spiritus & animæ justorum
Domino : benedicite sancti & humiles
corde Domino.

Benedicite Anania , Azaria , Misael
Comino: laudate & superexaltate eum in
sæcula.

Benedicamus Patrem & Filium cum
san-

CANTICA.

sancto Spiritu laudemus & superexalte-
museum in sæcula.

Benedictus es Domine in firmamento
cœli: & laudabilis & gloriosus & superex-
altatus in sæcula.

CANTICUM ESAIÆ.

Confitebor tibi Domine, quoniam i-
ratus es mihi conversus est furor tu-
us, & consolatus es me.

Ecce Deus salvator meus, fiducialiter
agam & nontimebo.

Quia fortitudo mea, & laus mea Do-
minus Deus & factus est mihi in salutem.

Haurietis aquas in gaudio de fontibus
salvatoris & dicetis in die illa.

Confitemini Domino: & invocate no-
men ejus.

Notas facite in populis ad inventiones
eius, mementote quoniam excelsum est
nomen eius.

Cantate Domino quoniam magnifi-
cè fecit: annuntiate hoc in universa terra.

Exulta & lauda habitatio Sion: quia ma-
gnus

Thomas a Kempis
Acceptit ab Hy Dray. Plegas
tempore Passionis 6666
Guttæ sanguinis manuam
et illi corpore 97307
Guttæ lacrymarum 62000
excusis, remissionibus
Soror Maria de Ihsu scribit
Plegas acceptas ab Annæ
5115
Ab Scabunt 5475

AB In libro Solitarii
sequens Historia terribilis
de Verbo Dei fol 31
Lesson. 1. H. Diabolus
predicatio
Concionatus zelo sissime de fide
intervi Glori Colegi de peccatis
capit affirmavit se habuisse
macte leges quatuor
nicolai de Bussemoni

